सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 315, नई दिल्ली । बुधवार, 22 जनवरी 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर फैसले सही लिए हैं तो वक्त जरूर लगेगा पर अच्छे साबित जरूर होंगे।

03 भाजपा प्रत्याशी धर्मवीर के भाई आम आदमी पार्टी में शामिल

06 सर्दियों में क्यों बढ़ जाता है किडनी स्टोन का खतरा

08 देश-दुनिया की नजरें अब अमेरिका पर !

दिल्ली के इस इलाके में पहुंची मेट्रो और नमो भारत ट्रेन, पर अभी भी लोगों को डीटीसी बस का इंतजार

परिवहन विशेष न्यूज

न्यू अशोक नगर में आबादी तेजी से बढ़ रही है लेकिन विकास धीमा है। मेट्रो और नमो भारत ट्रेन तो पहुंच गई है लेकिन डीटीसी बस सेवा का इंतजार है। पानी की समस्या बहुत है कई गलियों में गंदा पानी आता है। सीवर ओवरफ्लो की समस्या रोजाना की हो गई है। खबर में पढ़ें स्थानीय लोगों ने इसको लेकर क्या कुछ कहा है।

पूर्वी दिल्ली। उत्तर प्रदेश की सीमा से सटे न्यू अशोक नगर में आबादी तेजी से बढ़ रही है, लेकिन विकास धीमा है। यहां मेट्रो के अलावा नमो भारत ट्रेन पहुंच गई है, लेकिन डीटीसी बस सेवा का इंतजार है। लोग ई-रिक्शा और ऑटो के सहारे ही आसपास आते-जाते हैं।

लोगों का आरोप है कि इस क्षेत्र में पानी की समस्या बहुत है। कई गलियों में लोग बूंद-बूंद को पानी को तरस रहे हैं, कुछ गलियों में गंदा पानी आता है। लोग टैंकर से पानी भरते हैं। जो नहीं भर पाते, वो खरीद कर पानी पीते हैं। सीवर ओवरफ्लो की समस्या रोजाना की हो गई है।

आबादी डेढ़ लाख से अधिक

यह अनाधिकृत कॉलोनी है, जो खेती की जमीन पर वर्ष 1980 से 83 के बीच विकसित की गई। इसमें आबादी डेढ़ लाख से अधिक है। अधिकांश लोगों ने छोटे-छोटे फ्लैट और दुकानों का निर्माण कर उन्हें किराये पर दे दिया है।

रास्ते भी छोटे है। संवाददाता लोगों के बीच गया तो उन्होंने बताया कि न्यू अशोक नगर तक मेट्रो और रैपिड ट्रेन तो पहुंच गईं लेकिन डीटीसी बस सेवा का इंतजार ही हो रहा है।

पानी की आपूर्ति आंशिक रूप से होती है। लोगों का आरोप है कि सड़कें टूटी पड़ी है। सामुदायिक केंद्र के निर्माण को लेकर जनप्रतिनिधि गंभीर नहीं हैं। वाहनों की संख्या तेजी से बढ़ रही है लेकिन पार्किंग को कोई इंतजाम नहीं किया गया है।

सुबह को दस बजे, दोपहर को तीन बजे और शाम को पांच बजे रोज पानी के टैंकर आते है। अधिकांश लोग टैंकरों से ही पानी भरते हैं। पानी के कनेक्शन लोगों ने ले रखे हैं लेकिन पानी साफ नहीं आता है। यहां विकास कार्य होने चाहिए। लोगों का आरोप है कि बिजली के पोल पर तारों का जाल बिछा हुआ है। इससे आए दिन आग लगने की घटनाएं होती रहती हैं।

- पिंटू सिंह, स्थानीय निवासी

डीटीसी बस सेवा शुरू होनी चाहिए। वाहनों की पार्किंग का ठोस इंतजाम होना चाहिए। सड़कों की मरम्मत होनी चाहिए। सीवर सिस्टम में सुधार की जरूरत है।

- बादल डेढ़ा, स्थानीय निवासी

कच्ची सड़कों को पक्का बनाना चाहिए। गंदे पानी की आपूर्ति से निजात मिलनी चाहिए। सामुदायिक केंद्र का निर्माण होना चाहिए।

- राजेंद्र सिंह, स्थानीय निवासी

सीवर ओवर फ्लो और गंदे पानी की आपूर्ति सबसे बड़ी समस्या है। सड़कें टूटी पड़ी है। नियमित सफाई नहीं होती है।

- लक्ष्मण सिंह, स्थानीय निवासी

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

वाराणसी-गाजीपुर हाइवे पर टोल प्लाज पर पहुंचते ही कार में लगी भीषण आग

वाराणसी-गाजीपुर हाइवे पर कैथी टोल प्लाजा पर पहुंचते ही एक कार में अचानक आग लग गई, जिससे वहां अफरा-तफरी मच गई। ड्राइवर ने सूझबूझ दिखाते हुए तुरंत कार से कूदकर अपनी जान बचाई। देखते ही देखते कार धू-धूकर जलने लगी, जिससे टोल प्लाजा पर काले धुएं का गुबार छा गया और हड़कंप मच गया।

वाराणसी-गाजीपुर हाइवे पर एक कार जैसे ही कैथी टोल प्लाजा पर पहुंची, उसमें अचानक आग लग गई। कार में आग लगने की घटना को देखते हुए टोल प्लाजा पर अफरा-तफरी मच गई। गनीमत रही कि कार के ड्राइवर ने तुरंत सूझबूझ दिखाई और वह कार से बाहर कूद गया, जिससे उसकी जान बच गई। देखते ही देखते कार धू-धूकर जलने लगी, इससे टोल प्लाजा पर काले धुएं का गुबार देखा गया और वहां हड़कंप मच गया।

कार में आग क्यों लगी, अभी तक इसकी वजह स्पष्ट नहीं हो पायी है। कहा जा रहा है कि अज्ञात कारणों की वजह से कार में आग लगी थी। इस घटना की वजह से सड़क पर कुछ देर तक यातायात बाधित रहा। तमाम गाड़ियां धूं-धूं कर चल रही कार से दूरी बनाए रहीं और ड्राइवर टोल प्लाजा तक जाने से बचते रहे। टोल प्लाजा पर मौजूद उसके कर्मचारियों और वहां मौजूद लोगों ने मिलकर कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।

जलकर राख हो गई कार

कार में आग लगने की यह घटना वाराणसी के चौबेपुर थाना क्षेत्र के कैथी टोल प्लाजा की है। कार में आग लगने के बाद टोल प्लाजा पर मौजूद लोगों ने तुरंत फायर ब्रिगेड को इस संबंध में सूचना दी। फायर ब्रिगेड की टीम ने मौके पर पहुंचकर आग बुझाने की कोशिश की। हालांकि, कार में लगी आग इतनी भयंकर थी कि कार पूरी तरह से जलकर राख हो गई।

जैसा कि हमने ऊपर बताया ड्राइवर में सूझबूझ दिखाते हुए कार में आग लगते ही इससे बाहर कूदकर जान बचा ली। इस तरह से इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। जलती कार से बाहर कूदे ड्राइवर की टोल प्लाजा पर मौजूद लोगों ने मदद की और उसे सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया।

घटना से लें सबक

इस घटना से सबक लेते हुए आपको भी अपनी कार की नियमित जांच करते रहना चाहिए। नियमित जांच से आप अपनी कार को सुरक्षित रख सकते हैं।

दिल्ली में यहां दो दिन यातायात रहेगा प्रभावित, गणतंत्र दिवस को लेकर पुलिस की एडवाइजरी जारी

संजय बाटला

गणतंत्र दिवस समारोह के कारण छत्रसाल स्टेडियम के आसपास ट्रैफिक प्रभावित रहेगा। 22 जनवरी को फुल ड्रेस रिहर्सल और 25 जनवरी को मुख्य कार्यक्रम के दौरान ट्रैफिक पुलिस ने लोगों को वैकल्पिक मार्ग चुनने की सलाह दी है। इनर रिंग रोड जीटीके रोड छत्रसाल स्टेडियम रोड और बुराड़ी चौक से विजय नगर टी प्वाइंट तक के रास्ते का इस्तेमाल किया जा सकता है।

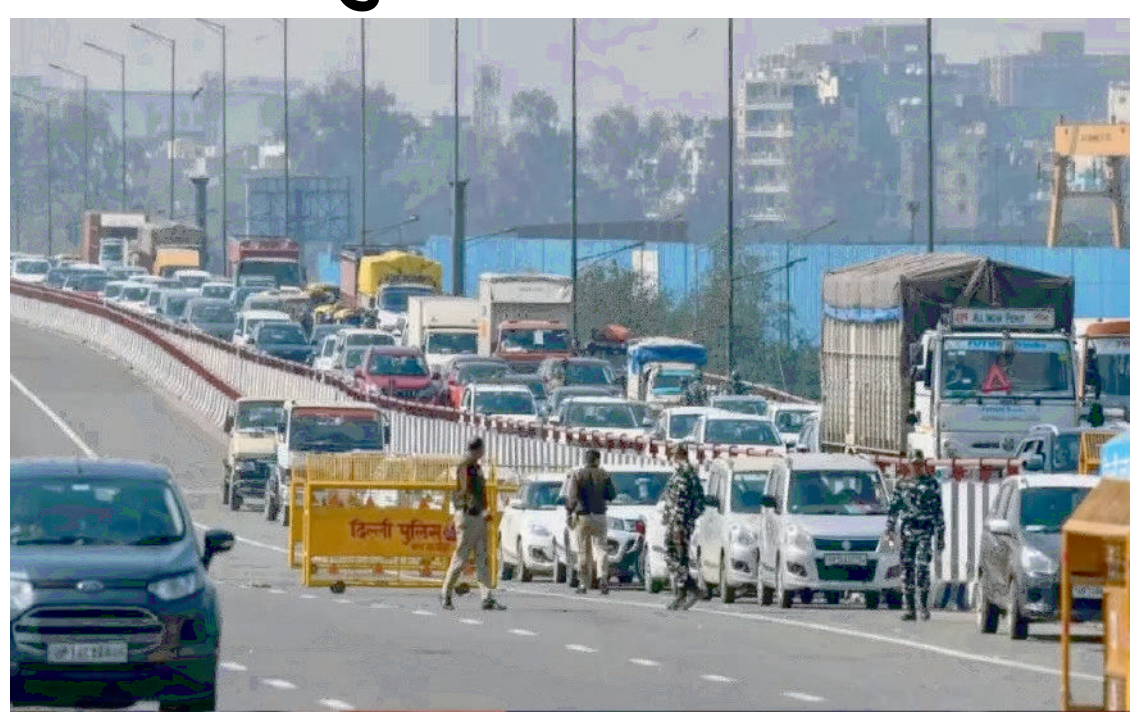

नई दिल्ली। बुधवार को फुल ड्रेस रिहर्सल और 25 जनवरी को गणतंत्र दिवस के कार्यक्रम के कारण छत्रसाल स्टेडियम के पास ट्रैफिक प्रभावित हो सकता है। ऐसे में ट्रैफिक पुलिस ने एडवाइजरी जारी कर छत्रसाल स्टेडियम की तरफ लोगों को जाने से बचने की सलाह दी है।

ट्रैफिक अधिकारी के मुताबिक, गणतंत्र दिवस के कारण दिल्ली की मुख्यमंत्री छत्रसाल स्टेडियम में राष्ट्रीय ध्वज फहराने आएंगी। इस समारोह में कई मंत्री, विधायक और कई अधिकारी मौजूद रहेंगे। इसके अलावा सीनियर सिटीजन भी कार्यक्रम में शामिल होंगे। स्कूली बच्चे भी कार्यक्रम में शामिल होंगे।

जिस कारण ट्रैफिक प्रभावित होगा। इस कार्यक्रम में करीब 250 बसें और एक हजार से अधिक हल्की गाड़ियों की आने की संभावना है। इस कारण छत्रसाल स्टेडियम और उसके आसपास इलाके में भीड़ होगी। वहीं 22 जनवरी को फुल ड्रेस रिहर्सल परेड होने वाला है।

इस ट्रैफिक पुलिस ने सलाह दी है कि 22 जनवरी और 25 जनवरी को सुबह 6:00 बजे से लेकर दोपहर एक बजे तक इस सड़क पर आने से बचे और कोई वैकल्पिक रास्ते चुने।

इस दौरान ट्रैफिक पुलिस ने सलाह दी है कि ट्रैफिक जाम से बचने के लिए लोग इन वैकल्पिक मार्ग का इस्तेमाल कर सकते है।

इनर रिंग रोड-आईपी कालेज से आजादपुर चौक।

जीटीके रोड-शक्ति रोड से आजादपुर चौक तक।

छत्रसाल स्टेडियम रोड से गुजरांवाला टाउन तक।

बुराड़ी चौक से कैंप चौक होते हुए विजय नगर टी प्वाइंट तक वैकल्पिक मार्ग का इस्तेमाल कर सकते हैं।

दिल्ली में ट्रैफिक एडवाइजरी जारी, फुल ड्रेस रिहर्सल की वजह से इन रास्तों पर रहेगी 'नो एंट्री'

परिवहन विशेष न्यूज

गणतंत्र दिवस समारोह से पहले 23 जनवरी को होने वाली फुल ड्रेस रिहर्सल के चलते दिल्ली में कई मार्गों पर यातायात प्रतिबंध रहेगा। विजय चौक से लाल किले तक जाने वाले रास्ते पर सुबह 10 .30 बजे से ट्रैफिक बंद रहेगा। यातायात प्रतिबंध के बीच किन रास्तों का प्रयोग किया जा सकता है इसके लिए आगे विस्तार से पढ़िए पूरी खबर।

नई दिल्ली। राजधानी में गणतंत्र दिवस समारोह से पहले 23 जनवरी बृहस्पतिवार को फुल ड्रेस रिहर्सल का आयोजन किया जाएगा। इसको लेकर यातायात पुलिस ने एडवाइजरी जारी की है।

कुछ मार्गों पर रहेगा यातायात प्रतिबंधित

परेड रिहर्सल सुबह 10:30 बजे विजय चौक से शुरू होगी और लाल किले पर समाप्त होगी। ट्रैफिक पुलिस के मुताबिक, परेड के सुचारू संचालन के लिए कुछ मार्गों पर यातायात प्रतिबंधित रहेगा। पुलिस ने इसके अलावा वैकल्पिक मार्ग की भी व्यवस्था की है।

परेड रिहर्सल विजय चौक से होगी शुरू

यातायात पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि परेड रिहर्सल विजय चौक से शुरू होगी और कर्तव्यपथ, सी-हेक्सागन, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा, तिलक मार्ग, बहादुर शाह जफर मार्ग और नेताजी सुभाष मार्ग से होते हुए लाल किले तक जाएगी।

जरूरी काम से निकलने वाले इस रूट पर जाने से बचें

ऐसे में यातायात बाधित रहेगा इसलिए ऑफिस जाने वाले व जरूरी काम से निकलने वाले इस रूट पर जाने से बचें या समय निकालकर घर से निकलें।

यहां रहेगा यातायात प्रतिबंध

विजय चौक से इंडिया गेट तक कर्तव्यपथ पथ पर 22 जनवरी से शाम 6 बजे से परेड की समाप्ति तक यातायात प्रतिबंधित रहेगा।

रफी मार्ग, जनपथ, मानसिंह रोड पर 22 जनवरी को रात 11 बजे से परेड की समाप्ति तक कर्तव्यपथ की ओर यातायात की अनुमति नहीं होगी। सी-हेक्सागन-इंडिया गेट पर 23 जनवरी सुबह 9:15 बे से परेड की समाप्ति तक कर्तव्यपथ की ओर से यातायात की अनुमति नहीं होगी। परेड के आवागमन के आधार पर ही यातायात को मुड़ने की अनुमति दी जाएगी।

जाम से बचने के लिए इन रास्तों का करें प्रयोग

उत्तर-दक्षिण कॉरिडोर

रिंग रोड, आश्रम चौक, सराय काले खां, आइ.पी फ्लाईओवर, राजघाट, रिंग रोड

लोधी रोड टी प्वाइंट, अरबिंदो मार्ग, एम्स चौक, रिंग रोड, धौला कुंआ, वंदे मातरम मार्ग, शंकर रोड, पार्क स्ट्रीट या मंदिर मार्ग

पूर्व-पश्चिम कॉरिडोर

रिंग रोड, भैरों रोड, मथुरा रोड, लोधी रोड, अरबिंदो मार्ग, एम्स चौक, रिंग रोड, धौला कुंआ, वंदे मातरम मार्ग, शंकर रोड, पार्क स्ट्रीट या मंदिर मार्ग

दक्षिण दिल्ली से

धौला कुंआ, वंदे मातरम मार्ग, पंचकुइयां रोड, आउटर सर्किल कनाट प्लेस, चेल्मस्फोर्ड रोड पहाड़गंज की तरफ या मिंटो रोड, भवभूति मार्ग अजमेरी गेट की तरफ

पूर्वी दिल्ली से

आइएसबीटी ब्रिज होते हुए बुलेवार्ड रोड, रानी झांसी फ्लाईओवर, झंडेवालान, डीबी गुप्ता रोड, शीला सिनेमा रोड, पहाड़गंड ब्रिज होते हुए नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंचे।

वाहन चालकों को अब ट्रैफिक की परेशानी से मिलेगी मुक्ति, हंसपाल ओवरब्रिज का आज होगा उद्घाटन

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: ट्विन सिटी यात्रियों के लिए अच्छी खबर। हंसपाल ओवरब्रिज का आज होगा उद्घाटन भुवनेश्वर की सांसद अपराजिता सारंगी आज सुबह 10 बजे इसे जनता को समर्पित करेंगी। एक्स पर पोस्ट अपराजिता सारंगी ने बताया कि एनएचएआई द्वारा 24.5 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं। कई वर्षों के इंतजार के बाद, यह आधिकारिक तौर पर 21 जनवरी को सभी के लिए खुल जाएगा।हंसपाल फ्लाईओवर खुल जाएगा और वाहन चालकों को ट्रैफिक की परेशानी से राहत मिलेगी। स्थानीय लोगों ने सांसद अपराजिता से हंसपाल चौराहे पर ओवरब्रिज बनवाने की मांग की थी। चूंकि भुवनेश्वर राज्य की राजधानी है, इसलिए इस सड़क पर भारी भीड़ थी। कभी-कभी भीड़ पहाड़ियों तक फैल जाती थी। इस दुर्घटना में कई लोगों की जान चली गई। लोगों ने बार-बार इसकी शिकायत की और विरोध प्रदर्शन समाप्त कर दिया गया। अपराजिता के हस्तक्षेप के बाद परियोजना एक बार फिर शुरू हो गयी।

दूसरी ओर, सुबह आठ बजे से दोपहर एक बजे तथा शाम छह बजे से रात दस बजे के बीच कटक से भुवनेश्वर आने वाले यात्रियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। क्योंकि हंसपाल चैक पर फ्लाईओवर ब्रिज के निर्माण में अत्यधिक देरी के कारण ट्रैफिक जाम के कारण हमारा कीमती समय बर्बाद हो रहा था। आम लोगों की तो बात ही छोड़िए, उन्हें तो एम्बुलेंस का सायरन बजने के बाद भी आगे बढ़ने का रास्ता नहीं मिल पाता। दूसरी ओर, कमिश्नरेट पुलिस ने यातायात समस्या से निपटने के लिए कुछ ट्रैफिक पुलिस तैनात की है, लेकिन उनके लिए इतने बड़े ट्रैफिक जाम को संभालना संभव नहीं है।एनएचएआई और कमिश्नरेट पुलिस दोनों की निष्क्रियता से आम लोगों को भारी परेशानी हो रही थी, लेकिन अब यात्रियों को इससे राहत मिलेगी।

भगवान की आरती क्या होती है, क्यों की जाती है और क्या है इसका महत्व ?

भगवान की आरती तो सभी करते हैं पर क्या आप जानते हैं कि आरती क्या होती है, क्यों की जाती है और क्या है इसका महत्व है।

आरती का अर्थ आरती का अर्थ है भगवान को याद करना, उनके प्रति आदर का भाव दिखाना, ईश्वर का स्मरण करना और उनका गुणगान करना। आरती किसी भी उपासक को भगवान के प्रति पूरी तरह से समर्पित होने के भाव को दिखाती है। आरती को भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका माना जाता है।

आरती कैसे की जाती है ? आरती एक बाती या कपूर से निकलने वाली एक छोटी सी लौ होती है, जिसे एक प्लेट पर दीपक के रूप में रखा जाता है। इसे हम पूजा के बाद किसी भी भगवान के सामने घड़ी की दिशा में घुमाते हैं और गोलाकार गति में घुमाएं।

आरती का महत्व

1. शास्त्रों के अनुसार पूजा समाप्त करने के बाद आरती करने से पूजा का पूर्ण फल मिलता है।

2. आरती व्यक्ति के आत्म बल को बढ़ाने में मदद करती है।

खुशी क्या है ?

संत जनों का कहना है कि जब हम दुख या सुख से गुजरते हैं, तो हमें अपने मस्तिष्क पर चौकसी रखने की आवश्यकता है *

हमने अनंत तक सुना है कि प्रसन्नता भीतर है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि कोई इसे भीतर अनुभव करता है। इसका अर्थ है कि प्रसन्नता भीतर से उत्पन्न होती है। हम खुशी का अनुभव तभी करते हैं जब हम अनुकूल परिस्थितियों और ऐसे लोगों से मिलते हैं जिन्हें हम पसंद करते हैं। इस बाहरी उत्तेजना के बिना हम सुख का अनुभव कैसे कर सकते हैं? हम जीवन में जो देखते हैं वह सदा हमारी संतुष्टि के लिए तो नहीं होता है।

सब कुछ वैसा नहीं हो सकता जैसा हम चाहते हैं। चाहें हमारे पास कितने भी पैसा या संसाधन हों। जीवन हमें ऐसे अनुभव देगा जो हमारे स्वाद के अनुरूप नहीं हैं। यहीं पर आंतरिक खुशी की अवधारणा काम आती है। मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जो सुखी परिस्थितियों के अभाव में भी सुखी रह सकता है। वहीं केवल ऐसे भी हैं जो अनुकूल परिस्थितियों के बाद भी दुखी हो सकते हैं।

यह क्षमता जानवरों को नहीं दी जाती है। कुत्ते को हड्डी दो, वह खुश होता है। बिल्ली को मछली दो, वह खुश है। लेकिन मनुष्य ! वह जटिल है !

दुखी परिस्थितियों को एक अलग धारणा के साथ देखने से हम बेहतर अनुभव कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, मौसम बहुत गर्म है और हम इसके बारे में दुखी महसूस कर रहे हैं। मनुष्य के रूप में हमारे पास विकल्प हैं। हम कहीं और जा सकते हैं, हम गैजेट्स का उपयोग कर सकते हैं या हम अपनी धारणा बदल सकते हैं।

शायद, हम याद रख सकें कि परिवर्तन जीवन का एक तथ्य है। बुरे से बुरे हालात बीत जाते हैं। यह गर्मी स्थायी नहीं है। थोड़ी देर में मौसम बदलेगा। जब हम कठिन समय से गुज़र रहे हों तो शिकायत करने के बजाय हम धीरज रखने का प्रयास कर सकते हैं। यह हमारी समस्याओं के बारे में क्रोधित होने से कहीं अधिक शांतिपूर्ण है। तो 'खुशी अन्दर है' का अर्थ है कि किसी भी स्थिति को सबसे अच्छा या बुरा बनाने का विकल्प हमारे पास है।

यदि हम मन की अनियमितताओं को नियंत्रित कर सकते हैं, तो हम अपने आप को शास्त्रों के ज्ञान को याद कर, प्रतिकूल परिस्थितियों में हम समभाव विकसित कर सकते हैं। अच्छी या बुरी किसी भी स्थिति में जो हमें दुखी करता है, वह मन है, स्थिति नहीं। मन को तैयार रहने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है, चाहे वह किसी भी परिस्थिति में क्यों न हो। लेकिन अनियंत्रित मन इस प्रशिक्षण का विरोध करता है और स्वयं को उत्तेजित करता है !

!!! 'बेहतर चुनाव द्वारा हम भविष्य के दुखों के प्रति कम संवेदनशील हो, मन को नियंत्रित कर सुख प्राप्त कर सकते है' !!!

हम बदलें तो दुनिया बदले

प्रेम लेना और देना दोनों ही बंधन है

यदि प्रेम का फूल हृदय में खिला नहीं है। प्रेम भीतर की घटना है बाहर से प्रेम का कोई लेना देना नहीं है। सारी साधना प्रेम प्रकट करने की है। हमारे हृदय में प्रेम का फूल कैसे खिले यही ध्यान सत्संग का परिणाम है ।

सतगुरु इस धरा पर प्रेम का प्रतीक है इसलिए सतगुरु से प्रेम की महिमा गाई गई

हमें वह प्रेम की शिक्षा देते है

धरती पर कोई शिक्षा प्रेम से बढ़कर नहीं। जो हमें एक धागे में मनको की तरह पिरो कर रखती है।

प्रेम स्वाभाविक यह है मन से ऊपर की अवस्था है जहां लेना ना देना सदा मस्त रहना। प्रेम की घटना स्वाभाविक होती हृदय की आत्मिक परम स्थित है। प्रेम कभी ना दिया जा सकता है ना लिया जा सकता है। वह समभाव में अपने आप प्रकट हो जाता है।

जैसे चुंबक चुंबक को खींच लेती है। यदि मिलावट है फिर यह स्वाभाविक ही मिल नहीं सकती

प्रेम में कुछ करना ही नहीं प्रेम पात्रता है। लेकिन ऐसा नहीं है

कि प्रेम नहीं है, प्रेम है। हमारे मन में मिलावट के कारण प्रेम का फूल हमारे हृदय में खिल नहीं पाता जिसके कारण हम ना प्रेम दे सकते हैं और ना ही प्रेम ले सकते हैं

प्रेम स्वभाव है एक खुशबू की तरह

पौरुष ग्रन्थि वृद्धि (प्रॉस्टेट का बढ़ना)

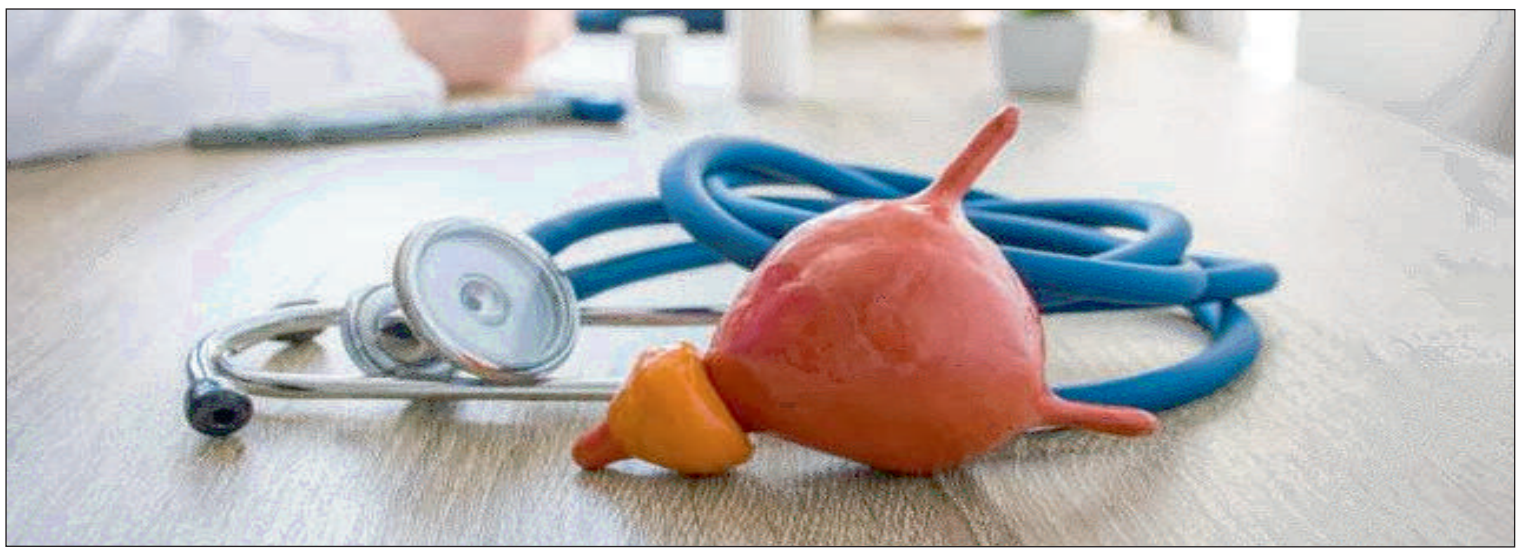

यह रोग पुरुषों में 40- 50 वर्ष की उम्र के बाद होता है, सभी में नहीं होता हैं । कारण

मूत्राशय की थैली के नीचे मूल नलिका के चारों ओर पुरुष गन्धि (प्रोस्टेट) होती है। यह ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती है त्यों-त्यों हार्मोन्स के असन्तुलन के कारण बढ़ने लगती है तथा मूत्र नलिका को दबाव देकर शनैः शनैः बन्द कर देती है।

लक्षण प्रारम्भ में पेशाब बार-बार आने लगता है तथा पेशाब करते समय जलन भी महसूस होती है। ज्यों-ज्यों बीमारी बढ़ती जाती है, पेशाब करने में परेशानी होने लगती है। पेशाब के लिए बैठने पर पेशाब आना प्रारंभ होने में एक मिनट का समय लग जाता है। पेशाब की धार पतली होने लगती है तथा जोर लगाने पर धारा और कम हो जाती है। रोग की चरम अवस्था में बूंद- बूंद करके मूत्र आने लगता है तथा रुक जाता है।

चिकित्सा

(1) गोक्षरू चूर्ण एक चम्मच, वरुण चूर्ण एक चम्मच

प्रातः, सायं जल से।

(2)अश्वगंधा चूर्ण आधा चम्मच, मधुयष्टी चूर्ण आधा चम्मच, आमलकी चूर्ण आधा चम्मच सुबह, सायं दुग्ध के साथ।

बचाव और परहेज बहुत जरूरी हैं

बूँद बूँद कर के पेशाब आता हो तो यह कौनसा रोग है और इसका घरेलू इलाज क्या है?

1. अगर उम्र पचास वर्ष से अधिक है तो पहली सम्भावना है की पौरुष ग्रंथि जिसे प्रॉस्टेट कहते हैं वह बढ़ गई हो और पेशाब के मार्ग को अवरुद्ध कर रही हो।

2. यू॰टी॰आई॰ संक्रमण यानी पेशाब के मार्ग में कहीं भी संक्रमण हो। दोनो ही अवस्था में डॉक्टर से सलाह करनी चाहिए। प्रॉस्टेट बढ़ने का ज़रूर कुछ देशी या घरेलू ईलाज़ हो सकता है। लेकिन सबसे पहले डॉक्टर से सलाह लें।

पचास की उम्र के बाद लगभग पचास प्रतिशत लोगों की प्रॉस्टेट बढ़ जाती है और चिकित्सा विज्ञान इसका कारण आजतक नही खोज पाया है। यह ज़रूरी नही की जिसकी प्रॉस्टेट बढ़ी हो उन सबको पेशाब की समस्या आएगी। निष्कर्ष तुरंत डॉक्टर से मिलना चाहिए क्योंकि संक्रमण हुआ तो उसका समय पर इलाज बहुत ज़रूरी है।

गदूद का इलाज आयुर्वेदिक दवाई से किया जाता है प्रोस्टेट(गदूद) से पीड़ित मरीजों को अब ऑपरेशन कराने की जरूरत नहीं है, बल्कि दवाओं से भी यह ठीक हो सकता है। पूरे जीवनकाल में 70-80 प्रतिशत व्यक्ति इस बीमारी के शिकार होते हैं। 40 वर्ष की आयु के बाद लोगों में यह बीमारी पैर पसारने लगती है।

खास बात यह है कि प्रोस्टेट की अनदेखी करने पर किडनी फेल होने की संभावना भी बढ़ जाती है।

कब हो सकती है किडनी फेल प्रोस्टेट का नॉर्मल साइज 18 से 20 ग्राम होता है। हर साल इसके आकार में 2.3 ग्राम की बढ़ोतरी होती है। यदि इस बीमारी से ग्रस्त किसी व्यक्ति का प्रोस्टेट का आकार 100 ग्राम से ज्यादा बढ़ जाए तो यह किडनी के लिए घातक होता है। चार से पांच साल तक इसकी अनदेखी करने पर पीड़ित व्यक्ति की किडनी फेल होने की संभावना बढ़ जाती है।

ऑपरेशन के बाद यह आ सकती हैं दिक्कतें

1. ऑपरेशन के बाद, 100 में से 99 लोगों का सेक्स के दौरान वीर्य नहीं निकलता है, बल्की पेशाब की थैली में चला जाता है। दो प्रतिशत लोगों में नपुंसकता के चांसेज भी बढ़ जाते हैं।

2. ऑपरेशन के बाद यदि इंटरनल स्पींटर कट गया तो यूरिन रुकने की समस्या पैदा हो जाती है।

3. प्रोस्टेट बढ़ने के लक्षण

4. बार-बार यूरिन का आना

5. शौच करते समय यूरिन का टपकना

6. यूरिन करने के बाद दोबारा यूरिन की संका होना

7. रात में चार से पांच बार यूरिन परित्याग करने के लिए जाना

8. यूरिन में खून का आना

9. मसाने के अंदर पत्थर का बनना

10. किडनी का फेल होना

11. काफी देर तक बाथरूम के समय यूरिन का बाहर नहीं निकलना

12. कंपलीकेशन के समय प्रोस्टेट के लक्षण

13. बार-बार यूरिन में इनफेक्शन, खून, दोनों गुर्दो का सूजना

एज ग्रुप के हिसाब से गदूद से पीड़ित व्यक्तियों का आंकड़ा

1. 40 वर्ष की उम्र में 8 प्रतिशत

2. 50-60 वर्ष की उम्र में 50 प्रतिशत

3. 70 वर्ष की उम्र में 70 प्रतिशत

4. 80 वर्ष की उम्र आते-आते मरीजों का आंकड़ा 100 प्रतिशत तक पहुंच जाता हैं.

ऑपरेशन कराने के बाद भी लोगों को तमाम तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। मेडिकल साइंस के आकड़ों के अनुसार, यदि व्यक्ति 60 वर्ष से ज्यादा उम्र का है तो 90 प्रतिशत चांस दवाओं से ठीक होने की संभावना रहती है।

सभी सुखी और निरोगी रहे

जायफल

रसोई का मसाला जायफल गुणकारी औषधि भी है। आयुर्वेद में जायफल को वात एवं कफ नाशक बताया गया है।

आमाशय के लिए उत्तेजक होने से आमाशय में पाचक रस बढ़ता है, जिससे भूख लगती है। आंतों में पहुंचकर वहां से गैस हटाता है। ज्यादा मात्रा में यह मादक प्रभाव करता है। इसका प्रभाव मस्तिष्क पर कपूर के समान होता है, जिससे चक्कर आना, प्रलाप आदि लक्षण प्रकट होते हैं। इससे कई बीमारियों में लाभ मिलता है तथा सौन्दर्य सम्बन्धी कई समस्याओं से भी राहत मिलती है।

1. सुबह-सुबह खाली पेट आधा चम्मच जायफल चाटने से गैसट्रिक, सर्दी-खांसी की समस्या समाप्त होने लगती है।

2. पेट में दर्द होने पर 4-5 बूंद जायफल का तेल चीनी के साथ लेने से आराम मिलता है।

3. सर में बहुत तेज दर्द हो रहा हो तो बस जायफल को पानी में घिस कर लगाएं।

4. सर्दी के मौसम के दुष्प्रभाव से बचने के लिए जायफल को थोड़ा सा खुरचिये, चुटकी भर कतरन को मुंह में रखकर चूसते रहिये। यह काम आप पूरे जाड़े भर एक या दो दिन के अंतराल पर करते रहिए। यह शरीर की स्वाभाविक गरमी की रक्षा करता है, इसलिए ठंड के मौसम में इसे जरूर प्रयोग करना चाहिए।

5. आपको किन्हीं कारणों से भूख न लग रही हो तो चुटकी भर जायफल की कतरन चूसिये इससे पाचक रसों की वृद्धि होगी और भूख बढ़ेगी, भोजन भी अच्छे तरीके से पचेगा।

6. दस्त आ रहे हों या पेट दर्द कर रहा हो तो जायफल को भून लीजिये और उसके चार हिस्से कर लीजिये एक हिस्सा मरीज को चूस कर खाने को कह दीजिये। सुबह शाम एक-एक हिस्सा खिलाएं।

7. फालिज का प्रकोप जिन अंगों पर हो उन अंगों पर जायफल को पानी में घिसकर रोज लेप करना चाहिए, दो माह तक ऐसा करने से अंगों में जान आ जाने की संभावना देखी गयी है।

8. प्रसव के बाद अगर कमर दर्द नहीं ख़त्म हो रहा है तो जायफल पानी में घिसकर कमर पे सुबह शाम लगाएं, एक सप्ताह में ही दर्द गायब हो जाएगा।

9. फटी एडियों के लिए इसे महीन पीसकर बीवाइयों में भर दीजिये। 12-15 दिन में ही पैर भर जायेंगे।

10. जायफल के चूर्ण को शहद के साथ खाने से हृदय मज़बूत होता है। पेट भी ठीक रहता है।

11. अगर कान के पीछे कुछ ऐसी गांठ बन गयी हो जो छूने पर दर्द करती हो तो जायफल को पीस कर वहां लेप कीजिए जब तक गाठ ख़त्म न हो जाए, करते रहिये।

12. अगर हैजे के रोगी को बार-बार प्यास लग रही है, तो जायफल को पानी में घिसकर उसे पिला दीजिये।

13. जी मिचलाने की बीमारी भी जायफल को थोड़ा सा घिस कर पानी में मिला कर पीने से नष्ट हो जाती है।

14. इसे थोडा सा घिसकर काजल की तरह आँख में लगाने से आँखों की ज्योति बढ़ जाती है और आँख की खुजली और धुंधलापन ख़त्म हो जाता है।

15. यह शक्ति भी बढाता है।

स्वस्थ रहे, मस्त रहे, सभी सुखी और निरोगी रहे।

स्वास्थ्य की सबसे बड़ी समस्या खून खराबी

खून साफ करने के घरेलू उपाय (रक्त विकार)

1. अक्सर कुछ लोगों के चेहरे पर हमेशा फोड़े फुंसी निकली रहती है, उन्हें थकान महसूस होती है, पेट में समस्या रहती है, लगातार वजन कम होता रहता है।

2. यह सब लक्षण खून के अशुद्ध होने की तरफ इशारा करते है।

3. रक्त के अशुद्ध होने से अभिप्राय रक्त में कुछ अनचाहे गंदे तत्वों का मिश्रित हो जाना है।

4. यह रक्त से हीमोग्लोबिन की मात्रा को घटाते रहते है। जिससे रक्त विकार उत्पन्न होते है।

जानिये कुछ ऐसी विशेष पद्धतियों से, जो आपके रक्त में पौषक तत्वों की वृद्धि करते है और खून साफ़ रखते है।

रक्त विकार कारण और लक्षण और रक्त की सफाई प्रणाली का कार्यः

रक्त को साफ़ करने से पहले यह जानिये कि रक्त की सफाई प्रणाली किस तरह से कार्य करती है। इस प्राणाली के अंतर्गत लीवर में जमा होने वाले रक्त को साफ़ किया जाता है। इसके लिए कुछ लोग अनेक तरह की दवाओं का प्रयोग करते है किन्तु ये दवाएं गर्म होती है जो रक्तचाप में विकार पैदा कर सकती है। किन्तु आयुर्वेद उपायों से ऐसा नहीं होता। यह उपाय खून को तो साफ़ करते ही है साथ ही खून का पुरे शरीर में संचार भी करते है जिससे पुरे शरीर में शुद्ध रक्त प्रवाहित होने लगता है।

रक्त साफ़ करने के लिए क्या करें:

आहार (Food): आहार स्वस्थ को बनाएं

रखने में सबसे अधिक सहायक होता है संतुलित आहार। रक्त साफ़ रखने के लिए फाइबर से भरपूर पदार्थों का सेवन करें। चुकंदर, मुली, गाजर, शलगम, ब्राउन राइस इत्यादि इसके लिए उत्तम माने जाते है।

ग्रीन टी (Green Tea): ग्रीन टी पल भर में सारी थकान और परेशानी को दूर कर देती है। इसके साथ यह रक्त को भी साफ़ करने के लिए सबसे अच्छा प्यूरीफायर भी मानी जाती हैं किन्तु इसका अधिक सेवन आदी भी बना सकता है तो इसका इस्तेमाल दिन में 1 से 2 बार ही करना बेहतर होता है।

विटामिन-सीः रक्त की शुद्धता के लिए शरीर में ग्लुथाथियोन का होना अनिवार्य होता है और शरीर में इस तत्व को बनाने के लिए विटामिन सी से भरपूर खाना खाने की आवश्यकता होती है।

मृत कोशिकाओं को बाहर निकालेंः शरीर पर कुछ मृत कोशिकायें रह जाती है और वे शरीर के खुले रोम छिद्रों में जम जाती है, जो ना सिर्फ रक्त विकार उत्पन्न करते है बल्कि रोम छिद्रों को बन करके त्वचा व श्वास रोग उत्पन्न करते है इसलिए जरूरी है कि आप अपने शरीर की मृत कोशिकाओं को भी निकाल दें।

खूब पानी पियें पानी हर जीव के लिये जीवन की तरह होता है। हमारे शरीर में भी करीब 70% से अधिक जल ही है और क्योकि खून भी पानी की तरह प्रवाहित होता है तो ये निश्चित है कि खून में भी पानी की मात्रा होती है। इसलिए रोजाना कम से कम 3 से 4 लीटर शुद्ध जल जरुर पियें।

सौंफ का सेवन करें (Fennel) सौंफ उत्तम सेहत के लिए अनेक तरह से इस्तेमाल की जाती है? इसका उपयोग करने के लिए बराबर मात्रा में सौंफ और मिश्री लेकर उन्हें अच्छी तरह पीसें और एक मिश्रण तैयार करें। इस मिश्रण को आपको रोजाना सुबह शाम पानी के साथ करीब 2 महीनों तक लें। यह आपके रक्त संचार को नियंत्रित करेगा, साथ ही आँखों की रौशनी बढाने के लिए भी ये उपाय उत्तम है। इससे चर्म रोग दूर होता है तो रक्त की शुद्धि भी होती है।

पसीना आने दें जितना शरीर से पसीना निकलता है उतने ही अधिक शरीर से अशुद्ध पदार्थ बाहर निकलते है। इसलिए दिन में अधिक से अधिक मेहनत करे और अधिक से अधिक पसीने को शरीर से बाहर निकलने की कोशिश करें।

नित्य प्रतिदिन व्यायाम भी अवश्य करें इसके 3 लाभ होंगे'

◆ पहला.. पसीना आएगा जिससे शरीर की सफाई होगी,

◆ दूसरा... व्यायाम से तन और मन स्वस्थ रहेगा

● तीसरा... व्यायाम के दौरान अधिक से अधिक आक्सीजन शरीर के अंदर जायेगी जिससे रक्त संचार में वृद्धि होगी. !

राष्ट्रीय जीवन दिवस

22 जनवरी को जीवन दिवस मनाकर उन बच्चों और नाती-नातिनों का सम्मान किया जाता है जो हमारे जीवन में खुशियाँ लाते हैं। यह दिन हमें याद दिलाता है कि प्रत्येक बच्चे और प्रत्येक जीवन को सर्वोच्च सम्मान और गरिमा के साथ एक अनमोल उपहार के रूप में रखा जाना चाहिए।

जीवन उत्सव का महत्व

बच्चे बहुत जल्दी बड़े हो जाते हैं। वे लगातार नई चीजें सीखते रहते हैं और हर दिन बदलते रहते हैं। हर दिन वे अपनी सरल बुद्धि और टिप्पणियों से हमें खुश करते हैं। बच्चों के साथ समय बिताकर और उन्हें वह देखभाल और प्यार देकर जिसके वे हकदार हैं, हम उनके जीवन का जश्न मनाते हैं।

जीवन दिवस का उत्सव कैसे मनाएं?

अपने जीवन में बच्चों का जश्न मनाएँ। इस दिन को किसी बच्चे, नाती-नातिन, भतीजे या भतीजी के साथ साझा करें। हमने कई सुझाव दिए हैं।

1. किसी बच्चे के साथ कोई किताब पढ़ें।
2. फर्श पर बैठ जाओ और एक पहेली बनाओ।
3. अपने बच्चे के साथ मिलकर कुछ बनाएं।
4. सभी चचेरे भाइयों-बहनों को बोर्ड गेम खेलने के लिए आमंत्रित करें।
5. कुकीज़ बनाओ और उन्हें सजाओ। सबसे छोटा बच्चा भी कुछ न कुछ सीखेगा।
6. पॉपकॉर्न बनाओ और फिल्म देखो।
7. दादी और दादाजी की मुलाकात कैसे हुई, इसकी कहानी बताओ।
8. कला सामग्री निकालें और सृजन करें।
9. किसी संग्रहालय में जाएँ.
10. एक किशोर को टायर बदलने का तरीका दिखाएं।
11. ड्राइविंग का पाठ दें.
12. अपने नाखूनों को एक साथ रंगें।
13. सभी लोग कुत्ते को नहलाएं।
14. तैराकी करने जाओ।
15. गुब्बारे से जानवर बनाएं।

धोबी समाज के लोगों से बिजली और पानी का चार्ज कमर्शियल नहीं, बल्कि घरेलू लिया जाएगा- केजरीवाल

सुषमा रानी

नई दिल्ली, आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने मंगलवार को दिल्ली में धोबी समाज के विकास के लिए कई गारंटी दी। उन्होंने कहा कि मैं ''आप'' के राष्ट्रीय संयोजक और पार्टी का सीएम उम्मीदवार के तौर पर धोबी समाज की लंबित मांगों को स्वीकार करता हूं और एलान करता हूं कि दिल्ली में हमारी सरकार बनने पर हम धोबी समुदाय कल्याण बोर्ड का गठन करेंगे। धोबी समाज लोग बोर्ड में अपनी समस्याएं और सुझाव दे सकेंगे। इसके अलावा हमारी सरकार धोबी समाज के प्रेस थड़े को नियमित और लाइसेंस प्रक्रिया को दोबारा शुरू करेगी। इनसे बिजली और पानी का चार्ज कमर्शिलय नहीं, बल्कि घरेलू लिया जाएगा। इनके बच्चों के लिए अच्छी शिक्षा और स्कॉलरशिप का इंतजाम किया जाएगा और युवाओं को स्किल की ट्रेनिंग दी जाएगी।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने मंगलवार को पार्टी मुख्यालय में धोबी समाज के लिए बड़ा एलान करते हुए कहा कि धोबी समाज की कई सालों से कई मांगे रही हैं। मैं आज आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और सीएम उम्मीदवार के तौर पर धोबी समाज की मांगों को कबूल करते हुए ऐलान करता हूं कि हमारी सरकार बनने पर दिल्ली सरकार धोबी समुदाय कल्याण बोर्ड का गठन करेगी।

उन्होंने कहा कि धोबी समाज की समय-समय पर कई समस्याएं निकलती रहती हैं। जब कोई समस्या निकलती है तो वह ढूंढते हैं कि किस नेता को उसके बारे में बताया जा सकता है। वह कभी किसी नेता को पकड़ते हैं तो कभी किसी को पकड़ते हैं। वह कभी इधर गुहार लगाते हैं तो कभी उधर गुहार लगाते हैं। धोबी समाज के लिए कोई एक ऐसा प्लेटफॉर्म नहीं है जहां पर उनकी समस्याओं की सुनवाई हो सके। अगर धोबी समुदाय कल्याण बोर्ड का गठन कर दिया जाता है तो यह एक ऐसा बोर्ड बन जाएगा, जहां पूरी दिल्ली के धोबी समाज के लोग जाकर अपनी समस्याएं और सुझाव बता सकते हैं। साथ ही, पूरी दिल्ली में धोबी समाज और इस पेशे का किस तरह से बेहतरी की जा सकती है, इसके ऊपर पॉलिसी भी बनाई जा सकती हैं।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि मैं आज एलान करता हूं कि दिल्ली में अलग-अलग कॉलोनियों में जो प्रेस थड़े (प्रेस करने वाली जगह) हैं, उनको नियमित किया जाएगा। अभी कई जगहों पर थड़े नियमित नहीं हैं जिसकी वजह से प्रशासन और पुलिस की तरफ से उन लोगों को तरह-तरह की प्रताड़ना दी जाती है। अभी धोबी समाज के लिए जो लाइसेंस की प्रक्रिया रुकी हुई है, उस प्रक्रिया को दोबारा शुरू किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि धोबी गरीब होते हैं। वह लोगों के घर से कपड़े लेकर जाते हैं, उन्हें धोते हैं और प्रेस करके वापस करते हैं। इस पेशे में उन्हें बहुत कम पैसे मिलते हैं। जिसमें उन्हें घर का खर्चा भी चलाना है, बच्चों की फीस भी देनी है और अगर कोई बीमार हो जाए तो उसका इलाज भी कराना है। इसलिए इतने कम पैसों में उनके घर का खर्चा नहीं चल पाता है और सभी को यह जानकर ताज्जुब होगा कि धोबी समाज के लोगों से पानी और बिजली के कमर्शियल रेट लिए जाते हैं। यानि दिल्ली में बड़े-बड़े मॉल और दुकानों से जिस रेट में बिजली और पानी के रेट लिए जाते हैं, उसी रेट पर गरीब धोबी से भी रेट लिए जाते हैं। इसलिए मैं आज एलान करता हूं कि दिल्ली के अंदर सभी धोबी समाज और उनके पेशे के लिए बिजली और पानी के रेट घरेलू किए जाएंगे। उनके ऊपर कमर्शियल रेट नहीं लगाए जाएंगे।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि बुजुर्ग धोबियों के कल्याण के लिए योजना बनाई जाएगी। धोबी समुदाय कल्याण बोर्ड को इसकी जिम्मेदारी दी जाएगी कि धोबी समाज से रिटायर होने वाले और बुजुर्गों के लिए योजना बनाई जाई। धोबी समाज के

बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए उचित स्कॉलरशिप का इंतजाम किया जाएगा।

धोबी समाज के युवाओं को धोबी के पेशे या अन्य पेशे की स्किल ट्रेनिंग दी जाएगी ताकि बच्चे अपने पेशे और जीवन का स्तर बढ़ा सकें। धोबी समाज को समय-समय पर दिल्ली सरकार की सभी योजनाओं की जानकारी दी जाएगी ,ताकि सभी योजनाओं का लाभ उन तक पहुंच सके।

*** धोबी समुदाय कल्याण बोर्ड के गठन से हम एक सिंगल विंडो बन जाएंगे- रवि कुमार ***

इस मौके पर दिल्ली प्रदेश धोबी महासभा के अध्यक्ष रवि कुमार ने कहा कि काफी वक्त से चर्चा चल रही थी कि धोबी समाज का भी एक बोर्ड बनाया जाए। हमारी कई सरकारी विभागों के अंदर कोई सुनवाई नहीं होती है। हमें धक्के खाने पड़ते हैं। हमारे बच्चे स्कॉलरशिप के लिए तड़पते रहते हैं। हमने पूरी दिल्ली में थड़े बनाने के लिए कई मशक्कत की है लेकिन किसी तरह अड़चन लगाकर हमें थड़े नहीं बनाने दिए जाते। धोबी समुदाय कल्याण बोर्ड के आने से हम एक सिंगल विंडो बन जाएंगे जिससे हमें दिल्ली सरकार की पॉलिसी उस बोर्ड से मिल जाएगी। इसके लिए मैं पूरी धोबी समाज की तरफ से अरविंद केजरीवाल का बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं।

वजीरपुर विधानसभा से पूर्व पार्षद प्रत्याशी समेत कई लोग ''आप'' में शामिल

सुषमा रानी, नई दिल्ली, आम आदमी पार्टी के कामों और अरविंद केजरीवाल की नीतियों से प्रभावित होकर वजीरपुर विधानसभा क्षेत्र से कई सम्मानित लोग ''आप'' में शामिल हो गए। मंगलवार को ''आप'' के वरिष्ठ नेता और दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने इन्हें पटका और टोपी पहनाकर आम आदमी पार्टी में स्वागत किया। मनीष सिसोदिया ने कहा कि सभी लोगों की अपने क्षेत्र में अच्छी छवि है। इनके आने से वजीरपुर विधानसभा में आम आदमी पार्टी को और मजबूती मिलेगी। मंगलवार को आम आदमी पार्टी में शामिल होने वालों में प्रमुख रूप से पूर्व पार्षद उम्मीदवार महेशा खारी, पूर्व पार्षद प्रत्याशी कुलदीप यादव, अशोक विहार वार्ड के ब्लॉक अध्यक्षा जोगिंदर खारी समेत अन्य लोग हैं। महेश खारी को नगर निगम के पार्षद चुनाव में वजीरपुर गांव से 5500 में से रिकॉर्ड 4600 वोट मिले थे। इसी तरह कुलदीप यादव ने भी निगम चुनाव में अच्छा प्रदर्शन किया था। इनके साथ ही डीपीसीसी के प्रतिनिधि अनिल खारी (मिंटू) वजीरपुर विधानसभा से महासचिव निखिल राजपूत, नितिन वर्मा और अमित कुमार, वीपी अशोक विहार वार्ड से अमित सिंह, अशोक विहार वार्ड के सचिव इरफान मलिक, बूथ अध्यक्ष कालू, संजय, बालन, सोनू सिसोदिया, अब्ना सिसोदिया, मनोज कश्यप शामिल हुए। इनके अलावा, मोहित कश्यप, दीपक कश्यप, अब्नू कश्यप, विक्की कश्यप, जे.के., रवि, हरीश, चाँद खान, छोटू खान और राजू कश्यप भी आम आदमी पार्टी में शामिल हुए।

भाजपा में कालकाजी सीट पर बगावत, 2020 विधानसभा चुनाव के भाजपा प्रत्याशी धर्मवीर के भाई आम आदमी पार्टी में शामिल

सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली चुनाव से ठीक पहले कालकाजी विधानसभा में भाजपा के अंदर की बगावत सामने आ गई। कालकाजी सीट से 2020 का विधानसभा चुनाव लड़ चुके धर्मवीर के भाई महावीर बैसोया अपनी पूरी टीम के साथ आम आदमी पार्टी में शामिल हो गए। इसे भाजपा की ओर से रमेश बिधूड़ी को प्रत्याशी बनाए जाने के विरोध स्वरूप देखा जा रहा है। आम आदमी पार्टी मुख्यालय में दिल्ली की सीएम आतिशी और सांसद संजय सिंह ने महावीर बैसोया और उनकी पूरी टीम को टोपी व पटका पहनाकर पार्टी में स्वागत किया। महावीर बैसोया एक प्रख्यात समाजसेवी हैं और वह निगम पार्षद का चुनाव भी लड़ चुके हैं। महावीर बैसोया को आम आदमी पार्टी में शामिल करा कर सीएम आतिशी ने कालकाजी विधानसभा में बड़ी बढ़त हासिल कर ली है और भाजपा उम्मीदवार रमेश बिधूडी को बड़ी पटकनी दी है। जानकारों का मानना है कि इससे भाजपा के वोटरों में भी आतिशी ने बड़ी पैंठ बना दी है।

आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता और दिल्ली की सीएम आतिशी ने सांसद संजय सिंह के साथ मंगलवार को पार्टी मुख्यालय में संयुक्त प्रेस वार्ता की। सीएम आतिशी ने कहा कि कालकाजी विधानसभा के प्रतिष्ठित समाजसेवी महावीर बैसोया आम आदमी पार्टी ज्वाइन कर रहे हैं। ये अपने कामों के लिए पूरे इलाके में जाने जाते हैं। कोविड के दौरान जब एक ऐसा समय था कि लोग अपने परिवारजनों की भी देखभाल नहीं कर रहे थे, अपने परिवारजनों से संस्कार के लिए नहीं जा रहे थे। तब महावीर बैसोया ने निस्वार्थ भाव से बहुत सारे मृत लोगों के अंतिम संस्कार की पूरी तैयारी की। इसके अलावा वह घायल गायों, पशुओं की देखभाल और उनका इलाज भी करवाते हैं। पिछले एमसीडी के चुनाव में भी उन्होंने श्रीनिवासपुरी वार्ड से निर्दलीय चुनाव लड़ा था।

सीएम आतिशी ने कहा कि आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल के काम देखते हुए आज महावीर बैसोया आम आदमी पार्टी में शामिल हो रहे हैं। मैं महावीर बैसोया और उनकी पूरी टीम का स्वागत करती हूं। महावीर बैसोया के साथ नीरज कुमार, सौरभ, हैप्पी, अमित लोहिया, कमल, अमित चंडीला, राजकुमार वैद, विपिन दुबे, सर्वेश तिवारी, मनदीप सिंह, रितेश, महेश राणा, जय सिंह, आदर्श कटारिया, गीता प्रसाद गुप्ता, गुरविंदर भाटिया और अंकुश चड्ढा समेत अन्य लोग आम आदमी पार्टी में शामिल हो रहे हैं।

वहीं, राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने कहा कि यह बहुत प्रसन्नता की बात है कि आज महावीर बैसोया अपने तमाम साथियों के साथ आम आदमी पार्टी परिवार में शामिल हो रहे हैं। कोरोना के समय में जब लोग डर की वजह से अपने मां-बाप की मदद करने के लिए भी आगे नहीं आते थे, तो उस वक्त इन्होंने अपना जीवन जोखिम में डालकर लोगों की मदद की। ऐसे व्यक्ति का आम आदमी पार्टी में शामिल होने पर मैं उनका और उनके सभी साथियों का स्वागत करता हूं। आम आदमी पार्टी में काम करने और लोगों की सेवा करने का अपार अवसर है। आप सबके आने से आम आदमी पार्टी को बहुत ताकत मिलेगी।

अक्षय कुमार, वीर पहाड़िया दिनेश विजन और अमर कौशिक ने दिल्ली में किया फिल्म 'स्काई फोर्स' का प्रमोशन

सुषमा रानी, हाल ही में अभिनेता अक्षय कुमार और वीर पहाड़िया अपनी आने वाली फिल्म 'स्काई फोर्स' के प्रमोशन के लिए दिल्ली आए। प्रमोशनल कार्यक्रम में इस फिल्म के निर्माता दिनेश विजन और अमर कौशिक भी मौजूद थे। फिल्म का यह प्रमोशनल कार्यक्रम यहां के होटल द इंपीरियल में आयोजित किया गया। फिल्म 'स्काई फोर्स' 24 जनवरी, 2025 को रिलीज होने वाली है। यह फिल्म 1965 के भारत-पाकिस्तान हवाई युद्ध में पाकिस्तान के सरगोधा एयरबेस पर भारत के जवाबी हमले के बारे में है, जो भारत का पहला हवाई हमला था।

घर पर मौजूद केजरीवाल ने हम दलितों से मिले नही, गिरफ्तार करा दिया- डॉ0 उदित राज

सुषमा रानी

नई दिल्ली, - दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी कार्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन को पूर्व सांसद डा0 उदित राज ने सम्बोधित किया। संवाददाता सम्मेलन में दिल्ली सरकार के पूर्व मंत्री डा0 नरेन्द्र नाथ कांग्रेस प्रवक्ता अभय दूबे, ज्योति सिंह, रश्मि सिंह मिगलानी और डा0 अरुण अग्रवाल मौजूद थे।

डॉ. उदित राज ने कहा कि अरविन्द केजरीवाल का दलित विरोधी रवैया और चेहरा दिल्ली वालों के सामने पूरी तरह उजागर हुआ है। मैं दिल्ली के बौद्ध भिक्षुओं, गुरु रविदास और वाल्मीकि मंदिरों के पुजारियों के साथ उनके आवास पर मंदिरों के पुजारी और गुरुद्वारों के ग्रंथि को 18,000 रुपये की सम्मान राशि देने के वादे को दलित पुजारियों को भी शामिल करने के लिए उनसे मिलने गया तो घर पर होने के बावजूद भी केजरीवाल उनसे मिलना तो दूर उन्होंने पुलिस बुलाकर बौद्ध भिक्षुओ, दलित पुजारियों सहित उन्हें गिरफ्तार करके मंदिर मार्ग पुलिस स्टेशन में हिरासत में रखा गया।

डॉ. उदित राज ने कहा कि आम आदमी पार्टी को सबसे बड़ी ताकत दलित और वाल्मीकि समाज से ही मिली, लेकिन इन्होंने इस समाज को धोखा दिया। 2014 में कहा था सफाई कर्मचारियों को पक्का किया जाएगा, ठेकेदारी प्रथा खत्म कर देंगे। लेकिन सफाई कर्मचारियों को पक्का करने से साफ मुकर गए। केजरीवाल 10 साल में सिर्फ 429 नौकरी दे पाए और सारा सिस्टम आउटसोर्स करते गए, नई नौकरियां सृजन करने की जगह दिल्ली सरकार के विभागों में निजीकरण कर दिया गया। इतना ही नही आम आदमी पार्टी ने आरक्षण को ख़त्म करने और उसे कमजोर करने का काम किया।

डॉ. उदित राज ने केजरीवाल से वरिष्ठ नागरिकों की पवित्र स्थानों की तीर्थयात्रा को दलित समुदाय के वरिष्ठ नागरिकों तक बढ़ाने का अनुरोध किया था, लेकिन उन्होंने कभी भी उनके सुझाव पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि केजरीवाल केवल वोट बैंक की राजनीति करने के लिए दलितों के लिए घड़ियाली आंसू बहाते हैं, लेकिन उन्हें दलितों की दुर्दशा की कोई चिंता नहीं है।

डॉ. उदित राज ने कहा कि कोविड-19 महामारी के दौरान, दिल्लीवासियों के जीवन की रक्षा करते हुए 57 दलित सफाई कर्मचारियों की ड्यूटी पर मृत्यु हो गई, जिनमें मेन्युअल सीवर सफाई करते वक्त मृत्यु होने वाले सफाई कर्मचारी भी शामिल थे। केजरवाल ने कोविड के दौरान मरने वालों 1 करोड़ रुपये मुआवजे का भुगतान करने की घोषणा की थी, लेकिन इन्हें आज तक कुछ भी नही मिला।

वरिष्ठ फोटो पत्रकार रामिश फरीद का हृदय घात से अचानक निधन

नई दिल्ली (सुषमा रानी)

वरिष्ठ फोटो पत्रकार रामिश फरीद को आज सैकड़ों शोक संतप्त लोगों की मौजूदगी में दिल्ली गेट कब्रिस्तान में सुपुर्द-ए-खाक कर दिया गया। शाम आठ बजे अचानक दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया।

दोपहर की नमाज के बाद उनके जनाजे की नमाज अदा की गई। बाद में दिल्ली गेट कब्रिस्तान में अंतिम संस्कार किया गया। अंतिम संस्कार और दफ़न में सैकड़ों लोग शामिल हुए। उनके परिवार में पत्नी, दो बेटे और एक बेटी हैं। स्वर्गीय रामिश फरीद वर्किंग जर्नलिस्ट क्लब के सक्रिय सदस्य थे।

मंत्री इमरान हुसैन, पूर्व मंत्री हारून यूसुफ, पूर्व मंत्री आसिम अहमद खान, पूर्व डिप्टी मेयर ऑल मुहम्मद इकबाल, राकेश कुमार, शफी देहलवी आदि ने रामिश फरीद के निधन पर शोक व्यक्त किया. जनाजे की नमाज में दिल्ली राज्य हज कमेटी के पूर्व अध्यक्ष मुख्तार अहमद, कार्यकारी अधिकारी डॉ. अशफाक अहमद आरिफी, उप कार्यकारी अधिकारी मोहसिन अली और अन्य कर्मचारी शामिल हुए।

अंतिम संस्कार में

पूर्व सांसद जय प्रकाश अग्रवाल, खाद्य मंत्री इमरान हुसैन, सिटी एसपी जोन चेयरमैन मोहम्मद सादिक, पूर्व मंत्री हारून यूसुफ, पूर्व मंत्री आसिम अहमद खान, पूर्व डिप्टी मेयर ऑल मोहम्मद इकबाल, मौलाना उमीर इलियासी, पूर्व पार्षद राकेश कुमार, पूर्व पार्षद महमूद जिया, मौलाना आरिफ कासमी,

मौलाना जावेद कासमी, जमील अंजुम देहलवी, शकील अंजुम देहलवी, नसीम अहमद, फैजान देहलवी, मुहम्मद अनीस मंसूरी, हसनैन अख्तर। मंसूरी, मिर्जाजावीद अली, मंसूर जिया, डॉ. नफीस कुरेशी, इरशाद बाबा कुरेशी, मौलाना फजलुर रहमान, फरजान कुरेशी, सादिक शेरवानी, अमीर अहमद राजा, गफरान अफरीदी, ऐनिन अली हक, फजील अहमद, निसार खान, मुहम्मद रहीम, अहमद नौमान, अंजुम जाफरी, खुर्रम शहजाद, मसूद हाशमी, अनस फैजी, अरशद नदीम, मोहम्मद तासीम खान, मुमताज आलम रिजवी, सुफियान बाबा, हाजी जहूर। अतीची वाले, शफी देहलवी, असद मियां, नवाबुद्दीन, मोहसिन अली, डॉ. अशफाक अहमद आरिफी, मुहम्मद शाहिद गंगूही, शेख अलीमुद्दीन असदी, मुहम्मद तैयब, नासिर खान, हामिद खान, हशेर खान, मुहम्मद तकी, नरेंद्र कुमार, गुलजार अहमद, ए. फरहान याहया, वाहिदुर्रहमान उस्मानी समेत बड़ी संख्या में सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता शामिल हुए। डॉ. मुफ्ती मुकर्रम अहमद और शाही इमाम सैयद अहमद बुखारी ने भी शोक संदेश लिखा है

बसपा प्रत्याशी वकार चौधरी ने किया चुनाव कार्यालय का उद्घाटन

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। बहुजन समाज पार्टी के लक्ष्मी नगर विधानसभा प्रत्याशी वकार चौधरी ने अपने चुनावी कार्यालय का भव्य उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में बसपा नेताओं ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, जिनमें पूर्व जेल मंत्री एवं दिल्ली प्रदेश प्रभारी धर्मवीर अशोक, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह, महासचिव सतीश चौधरी, और कोषाध्यक्ष सलीम अहमद प्रमुख रूप से शामिल रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ जोश और उत्साह के माहौल में हुआ। वकार चौधरी ने अपने उद्घाटन भाषण में

सभी वरिष्ठ नेताओं और समर्थकों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि बहुजन समाज पार्टी केवल एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग को समानता, न्याय, और अधिकार दिलाने का आंदोलन है।

बसपा के मुख्य मुद्दों पर जोर देते हुए

वकार चौधरी ने अपने संबोधन में पार्टी के प्रमुख मुद्दों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बसपा की प्राथमिकताएं शिक्षा और रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराना, क्षेत्र का समग्र विकास करना, और समाज में समानता एवं सामाजिक न्याय स्थापित करना है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि बसपा की सरकार आने पर लक्ष्मी नगर को एक आदर्श विधानसभा क्षेत्र बनाया जाएगा।

भोला सिंह बोले बाबा साहब डॉ भीम राव अंबेडकर का अपमान अब हम नहीं सहेंगे केजरीवाल और कांग्रेस ने संविधान निर्माता को शराबी कहकर अपमान किया

नई दिल्ली/ भाजपा बुलंदशहर से लोकसभा सांसद भोला सिंह आज जिला चांदनी चौक सदर बाजार के चुनावी जनसभा कार्यक्रम में बोलते हुए कहा कि केजरीवाल सरकार को तमाम देव तुल्य कार्यकर्ता उखाड़ पहनने के लिए तैयार रहें क्योंकि इस केजरीवाल और कांग्रेस पार्टी ने बाबा साहब डॉ भीम राव अंबेडकर का बार-बार अपमान किया है संविधान निर्माता को शराबी बताया है जबकि स्वयं केजरीवाल

सरकार शराब घोटाले में फंसी हुई है और यह लोग बार-बार संविधान निर्माता को गाली देते हैं और उनका अपमान करते हैं उन्हें शराबी बोलते हैं इससे बड़ा दलित समाज का अपमान कोई और नहीं हो सकता उन्होंने कहा कि आने वाली पांच फरवरी को कमल के निशान पर बटन दबाकर भारतीय जनता पार्टी के कमल बागड़ी को जिताना है और भाजपा की सरकार बनानी है और केजरीवाल सरकार को उखाड़ फेंकना है इस मौके पर राज्य सभा संसद मिथिलेश कठेरिया पूर्व सांसद सुनीता दुग्गल उधमपुर जम्मू कश्मीर के विधायक आर एस पठानिया जिला चांदनी चौक अध्यक्ष सरदार कुलदीप सिंह , अरुण दहिया भाजपा प्रत्याशी बल्लीमारान कमल बागड़ी जी अजय गोला मनोज गोरिया धीरेंद्र शर्मा विनोद इंदौरिया संजय कटारिया सुमेश लिलोठिया नीतू सिंह लीला सिंह दीपक अटवाल सहित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

गाजियाबाद में घर का नक्शा पास कराना होगा आसान, एनओसी के लिए नहीं काटने होंगे विभागों के चक्कर

अब गाजियाबाद में अपना घर बनाना और भी आसान हो गया है। अगर आपके पास राजस्व विभाग से एनओसी है तो नगर निगम से एनओसी लेने की जरूरत नहीं होगी। जीडीए उपाध्यक्ष अतुल वत्स की अध्यक्षता में हुई बैठक में यह फैसला लिया गया है। इस कदम से लोगों को नक्शा पास कराने के लिए अलग-अलग विभागों के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे।

गाजियाबाद। गाजियाबाद में रहने वाले लोगों को अपना आशियाना बनाने के लिए अब जीडीए से नक्शा पास कराना आसान होगा। यदि उनको राजस्व विभाग से एनओसी मिल चुकी है तो नगर निगम से एनओसी लेने की आवश्यकता न हो, इस पर भी विचार किया जा रहा है। जिससे की लोगों को नक्शा पास कराने से पहले एनओसी के लिए अलग- अलग विभागों के चक्कर न काटने पड़े।

जीडीए उपाध्यक्ष अतुल वत्स की अध्यक्षता में सोमवार को जीडीए कार्यालय में बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में शहर की सभी समस्याओं पर अधिकारियों के बीच चर्चा की गई, समस्याओं के समाधान के लिए उपाय बताए गए। बैठक का उद्देश्य शहर के लोगों को अधिक सुविधाएं देना और शहर में विकास कार्य को तेज गति से आगे बढ़ाने का रहा।

जीडीए की संपत्ति का हो रहा ऑडिट

जीडीए वीसी ने बताया कि प्राधिकरण की योजनाओं में भूखंड और संपत्ति की जानकारी की जा रही है। कौशांबी, इंदिरापुरम, प्रताप विहार में जीडीए की संपत्ति का ऑडिट कराया जा रहा है। इसमें कौशांबी में ही एक हजार करोड़ रुपये की रिक्त संपत्ति मिली है। जिस पर विकास कार्य के लिए योजना तैयार की जाएगी।

रजिस्टर्ड वसीयत के आधार पर नामदर्ज की प्रक्रिया के लिए वारिसान की एनओसी की अनिवार्यता को भी खत्म कर दिया गया है, इससे शहर के लोगों के लिए नाम दर्ज कराने की प्रक्रिया आसान हुई है। जीडीए वीसी ने कहा कि इस तरह की बैठक अब प्रत्येक सप्ताह आयोजित की जाएगी, जिससे कि शहरवासियों की समस्याओं का समाधान हो सके।

फ्लैटों की रजिस्ट्री न कराए जाने से राजस्व वसूली हो रही प्रभावित

गाजियाबाद में संपत्ति के कई खरीदार ऐसे हैं, जो कि बिल्डर से प्रोजेक्ट खरीद चुके हैं, लेकिन अब तक उन्होंने संपत्ति की रजिस्ट्री नहीं कराई है। खासतौर पर ऐसा सर्वाधिक राजनगर एक्सटेंशन की सोसायटियों में किया जा रहा है। इस वजह से राजस्व की वसूली प्रभावित हो रही है। विभाग के लिए इस बार भी शासन से प्राप्त लक्ष्य के सापेक्ष शत प्रतिशत राजस्व की वसूली करना चुनौती है।

ऐसे में अब निबंधन विभाग द्वारा सर्वे कर संबंधित बिल्डरों के साथ ही फ्लैट खरीदारों को नोटिस देने की तैयारी है। वित्तीय वर्ष 2023-24 में निबंधन विभाग को शासन से 3,007 करोड़ रुपये की राजस्व वसूली का लक्ष्य मिला था। इसके सापेक्ष 2,552 करोड़ रुपये की राजस्व वसूली संपत्ति के खरीदारों से स्टांप शुल्क और निबंधन शुल्क के रूप में की गई, जो कि लक्ष्य के सापेक्ष 85 प्रतिशत थी।

इस वित्तीय वर्ष में शासन ने वसूली का लक्ष्य बढ़ाकर 3,104 करोड़ कर दिया है। इसके सापेक्ष अब तक 2,130 करोड़ रुपये की राजस्व वसूली हो चुकी है, जो कि 69 प्रतिशत है। उन्होंने बताया कि मौजूदा वित्तीय वर्ष में अप्रैल से दिसंबर तक 2,316 करोड़ रुपये की राजस्व वसूली का लक्ष्य था, जिसके सापेक्ष 2,130 करोड़ रुपये की राजस्व वसूली हो चुकी है, जो कि 92 प्रतिशत है।

हेरिटेज सिटी परियोजना को मिली रफ्तार, यीडा ने बढ़ाए कदम; जानें क्या-क्या मिलेंगी सुविधाएं

हेरिटेज सिटी परियोजना यमुना प्राधिकरण की हेरिटेज सिटी परियोजना को गति मिली है। सीबीआरई साउथ एशिया प्रा. लि. ने निविदा दस्तावेज सौंप दिया है। खबर में जानिए इस महत्वाकांक्षी परियोजना के बारे में सब कुछ जिसमें शामिल है 753 हेक्टेयर में फैला हेरिटेज सिटी पीपीपी मॉडल पर विकास होगा। इस हेरिटेज सिटी में क्या-क्या सुविधाएं होंगी। पढ़िए खबर में विस्तार से।

ग्रेटर नोएडा। हेरिटेज सिटी परियोजना जल्द ही रफ्तार पकड़ेगी। सीबीआरई साउथ एशिया प्रा. लि. ने हेरिटेज सिटी परियोजना का निविदा दस्तावेज यमुना प्राधिकरण को सौंप दिया है।

प्राधिकरण की आगामी बोर्ड बैठक में हेरिटेज सिटी का निविदा प्रपत्र और जमीन अधिग्रहण का प्रस्ताव स्वीकृति के लिए रखा जाएगा, हालांकि मथुरा में औद्योगिक सेक्टरों के विकास पर अभी प्राधिकरण के कदम आगे नहीं बढ़े हैं।

अतिक्रमण के कारण करना पड़ा था रद

हेरिटेज सिटी परियोजना यमुना प्राधिकरण के फेज दो मास्टर प्लान का अहम हिस्सा है। राया अर्बन सेंटर के तहत इसे विकसित करने की योजना प्राधिकरण काफी समय से तैयार कर रहा है।

पहले यमुना एक्सप्रेस वे पर राया कट से बांके बिहारी मंदिर को जोड़ने के लिए करीब सात किमी लंबा एक्सप्रेस वे पर बनाकर उसके दोनों ओर हेरिटेज सिटी विकसित करने की योजना थी, लेकिन क्षेत्र में अतिक्रमण के कारण इसे रद करना पड़ा।

परियोजना की डीपीआर को संशोधित कराकर यमुना एक्सप्रेस वे के 101 किमी प्वाइंट से 6.9 किमी लंबा मार्ग बनाकर उसके दोनों ओर हेरिटेज सिटी बनाने की योजना तैयार की गई। इसके लिए मास्टर प्लान को संशोधित कर प्रस्तावित क्षेत्र को शामिल किया गया, लेकिन एनएचएआई के परियोजना के कारण इसे भी आगे नहीं बढ़ाया गया।

अब एनएच 44 से बांके बिहारी मंदिर तक यमुना एक्सप्रेस वे को जोड़ते हुए बनने वाले मार्ग के दोनों ओर 753 हे. में हेरिटेज सिटी बसाने पर शासन की मुहर लग चुकी है। पीपीपी माडल पर इसे विकसित करने के लिए सीबीआरई साउथ एशिया प्रा. लि. को निविदा दस्तावेज तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी।

प्राधिकरण के ओएसडी शैलेंद्र भाटिया ने बताया कि एजेंसी ने निविदा दस्तावेज प्राधिकरण को सौंप दिया है। इसे आगामी बैठक में बोर्ड की स्वीकृति के लिए रखा जाएगा।

इसके साथ ही हेरिटेज सिटी परियोजना के लिए जमीन अधिग्रहण का प्रस्ताव भी बोर्ड की स्वीकृति के लिए रखा जाएगा। बोर्ड से स्वीकृति के बाद मथुरा जिला प्रशासन से अधिग्रहण की कार्रवाई शुरू करने के लिए इसे भेज दिया जाएगा।

राया अर्बन सेंटर में औद्योगिक विकास की रूपरेखा अभी नहीं तैयार

हेरिटेज सिटी के अलावा राया अर्बन सेंटर में व्यावसायिक, औद्योगिक एवं संस्थागत ढांचा भी विकसित होना है। मथुरा की सांसद हेमा मालिनी के पिछले साल यीडा सीईओ डा. अरुणवीर सिंह से मिलकर औद्योगिक विकास जल्द शुरू करने का आग्रह किया था। इसके बाद हुई बैठकों में उद्योगों को श्रेणी तय करने एवं उद्यमियों के साथ बैठक कर निवेश के लिए आमंत्रित करने पर सहमति बनी, लेकिन इसके आगे प्राधिकरण के कदम नहीं बढ़े हैं।

एसीईओ की नियुक्ति से मिल सकता है फायदा

शासन ने नगेंद्र प्रताप को यमुना प्राधिकरण में अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी नियुक्त किया है। उन्होंने सोमवार को अपना कार्यभार संभाल लिया। नगेंद्र प्रताप ब्रज विकास परिषद, मथुरा विकास प्राधिकरण में उपाध्यक्ष रह चुके हैं। उनकी प्राधिकरण में नियुक्ति से हेरिटेज सिटी के विकास में फायदा मिल सकता है।

नोएडा और ग्रेटर नोएडा में अब कचरे से बनेगी बिजली, इस साल 15 अगस्त से शुरू होगा संयंत्र

ग्रेटर नोएडा और नोएडा के घरों से निकलने वाले मिश्रित कचरे से अब बिजली पैदा की जाएगी। अस्तौली में हरा कोयला संयंत्र (टोरेफाइड चारकोल) स्थापित किया जा रहा है। संयंत्र में कचरे से हरा कोयला बनाया जाएगा फिर उससे बिजली पैदा की जाएगी। 15 अगस्त को संयंत्र चालू हो जाएगा। इससे कूड़े का पहाड़ नहीं बनेगा और पर्यावरण संरक्षित होगा।

नोएडा। ग्रेटर नोएडा और नोएडा के घरों से निकलने वाले मिश्रित कचरे से अब बिजली पैदा की जाएगी। इसके लिए अस्तौली में हरा कोयला संयंत्र (टोरेफाइड चारकोल) स्थापित किया जा रहा है।

संयंत्र में कचरे से हरा कोयला बनाया जाएगा, फिर उससे बिजली पैदा की जाएगी। संयंत्र का काम तेजी से चल रहा है। 15 अगस्त यानी स्वतंत्रता दिवस पर संयंत्र चालू हो जाएगा। इससे कूड़े का पहाड़ नहीं बनेगा और पर्यावरण संरक्षित होगा।

नोएडा व ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण का संयुक्त परियोजना

नोएडा व ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण अपने - अपने क्षेत्रों में घर-घर से कूड़ा एकत्रित करता है। उसके निस्तारण में समस्या आती है। इस समस्या का दूर करने के लिए दोनों प्राधिकरण संयुक्त रूप से हरा कोयला संयंत्र परियोजना लाई।

इसके लिए ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण क्षेत्र के अस्तौली में 20 एकड़ जमीन चिह्नित की गई। नोएडा प्राधिकरण ने अपने हिस्से की जमीन की कीमत चुकाई। एनटीपीसी विद्युत व्यापार निगम लिमिटेड ने संयंत्र लगाने का समझौता किया और काम शुरू कर दिया।

नोएडा प्राधिकरण के अधिकारियों ने बताया कि काम तेजी से चल रहा है। छह माह में संयंत्र बनकर तैयार हो जाएगा। 15 अगस्त को इसे चालू कर दिया जाएगा।

गीला व सूखा दोनों कचरे का होगा निस्तारण

नोएडा प्राधिकरण के अधिकारी ने बताया कि इस संयंत्र में गीला व सूखा दोनों तरह के कूड़े का निस्तारण किया जाएगा। संयंत्र में प्रतिदिन नौ सौ टन कूड़े का निस्तारण होगा। उसमें छह सौ टन नोएडा व तीन सौ टन ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण क्षेत्र के घरों से निकले वाला कूड़ा रहेगा।

165 करोड़ की लागत

20 एकड़ जमीन में लग रहे इस संयंत्र को लगाने में करीब 165 करोड़ रुपये की लागत आएगी। उसे एनटीपीसी ही वहन करेगा। नोएडा व ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने सिर्फ जमीन दी है। इसका कार्यकाल 25 साल रहेगा।

इस संयंत्र में एनटीपीसी कचरे से हरा कोयला बनाएगी। उससे बिजली पैदा करेगी। उस बिजली से उसका खर्च निकलेगा। जन स्वास्थ्य, नोएडा प्राधिकरण के महाप्रबंधक एसपी सिंह का कहना है कि संयंत्र को छह माह में चालू कराने का लक्ष्य है। इसके चालू होने से शहर कूड़ा मुक्त हो जाएगा।

गुरुग्राम में बिल्डर का भाई बनकर की मुलाकात, प्रोजेक्ट के नाम पर ठगे 45 लाख रुपये; बरतें ये सावधानियां

गुरुग्राम में साइबर ठगों ने कहर बरपा रखा है। अपराधियों ने अलग-अलग तरीके से धोखाधड़ी की कई घटनाओं को अंजाम दिया है। बिल्डर का भाई बनकर लाखों की ठगी व विदेश में नौकरी व वीजा के नाम पर दो लाख ठगे और क्रेडिट कार्ड सर्विस के नाम पर दो लाख और जानकार बन 70 हजार रुपये ट्रांसफर कराए। आइए जानते हैं ठगी से बचने के लिए क्या सावधानी बरतनी चाहिए।

गुरुग्राम। एक आरोपित ने बिल्डर का भाई बनकर सेक्टर 43 निवासी व्यक्ति से प्रोजेक्ट के नाम पर लाखों रुपये की धाखाधड़ी कर ली। आरोपित ने रुपये ऑनलाइन ट्रांसफर कराए। रुपये मिलने के बाद आरोपित ने फोन स्विच ऑफ कर लिया। धोखाधड़ी का अहसास होने पर पीड़ित ने साइबर थाना ईस्ट में केस दर्ज कराया।

सेक्टर 43 निवासी संदीप अग्रवाल ने साइबर ईस्ट पुलिस को बताया कि वह प्रॉपर्टी में निवेश करने की योजना बना रहे थे। बीते दिनों उनके पास एक व्यक्ति ने फोन किया और एक बड़े बिल्डर का भाई बनकर बात की। आरोपित सेक्टर 43 में उनसे मिलने भी आया।

रुपये मिलने के बाद लापता हो गया शख्स प्रोजेक्ट पर बातचीत के बाद विश्वास होने पर संदीप ने उसके कहे अनुसार 45 लाख 60 हजार रुपये उसके खातों में भेज दिए। रुपये मिलने के बाद आरोपित लापता हो गया। उसका फोन भी स्विच हो गया। जब संदीप ने इसके बारे में पता किया तो फर्जीवाड़े की जानकारी मिली। पैसा ऑनलाइन ट्रांसफर करने को लेकर मामला साइबर थाने में दर्ज किया गया है।

विदेश में नौकरी व वीजा दिलाने के नाम पर दो लाख ठगे

साइबर ठगों ने सेक्टर 49 निवासी महिला परनीता अभिजीत को इंग्लैंड का वीजा और नौकरी दिलाने का झांसा दिया। परनीता ने साइबर थाना ईस्ट पुलिस को बताया कि सोशल मीडिया पर उनकी पहचान एक व्यक्ति से हुई थी। उसने परनीता को नौकरी और वीजा का झांसा देकर दो लाख रुपये से ज्यादा ऑनलाइन ट्रांसफर करा लिए। रुपये लेने के बाद आरोपितों ने फोन स्विच आफ कर लिया।

क्रेडिट कार्ड सर्विस के नाम पर खाते से उड़ाए दो लाख

साइबर ठगों ने बैंक प्रतिनिधि बनकर महिला के खाते से दो लाख रुपये उड़ा दिए। अर्जुन नगर निवासी महिला सिम्मी पाहुजा ने साइबर थाना वेस्ट में दी शिकायत में कहा कि बीते दिनों उनके

पास बैंक प्रतिनिधि बनकर किसी ने फोन किया। फोन करने वाले ने उनके क्रेडिट कार्ड की सर्विस अपडेट करने के नाम पर कुछ लिंक भेजे। जब उन्होंने लिंक ओपन किए तो उनके खाते से दो बार में दो लाख रुपये निकल गए। अब बैंक अधिकारी लगातार पेमेंट की रिकवरी के लिए उनके घर आ रहे हैं। इससे उन्हें काफी समस्या हो रही है।

जानकार बन ट्रांसफर कराए 70 हजार

दूसरी ओर साइबर ठगों ने जानकार बनकर एक युवक से 70 हजार रुपये ट्रांसफर करा लिए। शिवाजी नगर निवासी अश्विनी कुमार गौड़ ने साइबर थाना वेस्ट पुलिस को बताया कि बीते दिनों उनके पास एक फोन आया।

फोन करने वाले ने कहा कि उसे उनके पिता को 70 हजार रुपये देने थे। उनका पेटीएम काम नहीं कर रहा है। इसलिए वह उनके पेटीएम पर रुपये भेज रहा है। आरोपित ने 20 हजार और 50 हजार रुपये भेजने के दो फर्जी स्क्रीनशाट भी भेजे।

अश्विनी ने जब अपने पिता का नाम पूछा तो आरोपित ने गलत नाम बताया। कहा कि गलती से उसने दूसरे नाम के रुपये उन्हें भेज दिए हैं। उसने रुपये वापस भेजने का दबाव बनाया। इस पर अश्विनी ने बिना अकाउंट चेक किए 70 हजार रुपये वापस भेज दिए। जब अकाउंट चेक किया तो धोखाधड़ी का अहसास हुआ।

युद्धमुक्त विश्व के ट्रंप के संकल्पों की रोशनी

विश्व में अनेक देशों के बीच युद्ध चल रहे हैं एवं ऐसे ही युद्ध की व्यापक संभावनाएं बनी हुई हैं। विश्व युद्ध कई कारणों से शुरू हो सकते हैं। जैसे राष्ट्रवाद यानी अपने देश के प्रति अत्यधिक लगाव और अन्य देशों के प्रति घृणा।

राष्ट्रपति के तौर पर अपने दूसरे कार्यकाल पर लौटने से पहले ट्रंप ने 'तीसरा विश्व युद्ध' रोकने की कसम खाकर दुनिया में शांति, अमन एवं अयुद्ध की संभावनाओं को बल दिया है। 47वें राष्ट्रपति के रूप में ट्रंप ने शपथ से एक दिन पहले गाजा में हुए युद्ध विराम का क्रेडिट भी लिया। रूस और यूक्रेन युद्ध भी खत्म करने की प्रतिबद्धता दोहरायी गयी है। बावजूद इनके विश्व युद्ध के कयास तेजी से लग रहे हैं। इसे लेकर भी कई सवाल उठते हैं कि क्या सच में तीसरा विश्व युद्ध होना इतना आसान है? लेकिन डोनाल्ड ट्रंप ने कहा, 'मैं यूक्रेन में युद्ध खत्म कर दूंगा। मैं मध्य पूर्व में अराजकता रोक दूंगा और मैं तीसरे विश्व युद्ध को होने से रोक दूंगा।' निश्चित ही ट्रंप के इन संकल्पों से अमेरिका में एक नए युग का आगाज हो रहा है, जो दुनिया में भी एक नई युद्ध मुक्त समाज-संरचना के बड़े बदलावों की ओर इशारा कर रहा है। राष्ट्रपति चुने जाने के बाद से ही ट्रंप कई संकेत ऐसे दे चुके हैं, जिनसे लगने लगा है कि दुनिया बदलने वाली है। ये बदलाव इस बात पर केंद्रित रहेंगे कि अमेरिका को फिर एक बार महान बनना है। यह 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' का नारा डोनाल्ड ट्रंप की एक नई पहचान बन गया है और बहुत संभावना है कि इस बार ट्रंप अपने सपने को साकार करने के लिए दुस्साहस का भी परिचय देते हुए युद्ध की मानसिकता वाले देशों की सोच में बदलाव का कारण बन जाये।

विश्व में अनेक देशों के बीच युद्ध चल रहे हैं एवं ऐसे ही युद्ध की व्यापक संभावनाएं बनी हुई हैं। विश्व युद्ध कई कारणों से शुरू हो सकते हैं। जैसे राष्ट्रवाद यानी अपने देश के प्रति अत्यधिक लगाव और अन्य देशों के प्रति घृणा। जब राष्ट्रवाद चरम पर पहुंच जाता है तो युद्ध की स्थिति पैदा हो सकती है या फिर एक शक्तिशाली देश दूसरे देशों पर अपना अधिकार जमाना चाहता है, तो इससे युद्ध की स्थिति पैदा हो सकती है। इसके अलावा देशों के बीच आर्थिक प्रतिस्पर्धा भी युद्ध का कारण बन सकती है। साथ ही धार्मिक मतभेद भी युद्ध का कारण बन सकते हैं और किसी देश में राजनीतिक अस्थिरता होने पर पड़ोसी देशों में भी अशांति फैल सकती है और युद्ध की स्थिति पैदा हो सकती है। युद्ध की इन व्यापक संभावनाओं पर ट्रंप के संकल्प से विराम लगना विश्व की समाज-व्यवस्था, आर्थिक विकास एवं सह-जीवन के लिये एक शुभ संकेत है। क्योंकि विश्व युद्ध के परिणाम बहुत ही विनाशकारी होते हैं। इसमें लाखों लोग अपनी जान गंवा देते हैं। युद्ध से देशों की अर्थव्यवस्था को भी भारी नुकसान पहुंचता है। साथ ही युद्ध से समाज में अस्थिरता फैल जाती है, महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी बढ़ जाती है और युद्ध के बाद देशों के राजनीतिक नक्शे में बदलाव आ सकता है।

अमेरिका दुनिया में अमन चाहता है और नये राष्ट्रपति ट्रंप ने यदि किसी भी देश के युद्ध में सेना नहीं भेजने का संकल्प लिया है तो इससे दुनिया में युद्ध की संभावनाओं पर विराम लगना तय है। क्योंकि अब तक शक्तिशाली राष्ट्र अमेरिका ही दुनिया मे युद्ध की भूमि तैयार करता रहा है, अपनी सेना एवं सैन्य सामान भेज कर युद्ध की भूमि को उर्वरा बनाता रहा है। विश्व समुदाय कई संकटों का सामना कर रहा है- संघर्ष और हिंसा, आतंक एवं

अलगाव, युद्ध एवं राजनीतिक वर्चस्व, गरीबी एवं बेरोजगारी, लगातार सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ, पर्यावरणीय संकट और दुनिया भर के लोगों के स्वास्थ्य और भलाई के लिए चुनौतियाँ आदि जटिलतर स्थितियों के बीच ट्रंप के नये संकल्प एवं योजनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। आज युद्ध और तनाव की समस्या बढ़ती जा रही है। हथियारों का उत्पादन लगातार बढ़ता जा रहा है। हर देश परमाणुशक्ति संपन्न बनने के लिए प्रयासरत है। यह एक अजीबोगरीब स्थिति है। युद्ध की आशंका को खत्म करने के लिए हाथियारों का जखीरा बढ़ाया जा रहा है। पहले बीमारी पैदा की जा रही है, फिर उसके इलाज का उपाय ढूंढा जा रहा है। इसमें अब तक अमेरिका की ही सर्वाधिक भूमिका रही है, लेकिन अब उसके नये राष्ट्रपति की युद्धमुक्त विश्व संरचना की सोच से दुनिया में शांति एवं अमन कायम होगा। युद्ध से कभी किसी का भला नहीं होता। वह सदैव अपने पीछे दुख भरी यादें छोड़कर जाता है। युद्ध से किसी मां का बेटा उसे बिछड़ जाता है, किसी बहन का भाई उससे बिछड़ जाता है, कोई स्त्री अपने पति को खो देती है, कोई बेटी अपने पिता को खो देती है। इस तरह युद्ध केवल जान लेता है। इसके अलावा युद्ध से संपत्ति भी नष्ट होती है एवं विकास अवरूद्ध होता है। इसके विपरीत यदि सब जगह शांति हो, लोग आपस में नहीं लड़ें, देशों में आपस में युद्ध नहीं हो, तो विकास होता है।

ट्रंप ने अमेरिकी राजनीति के तेवर-कलेवर को तो बदला ही है और वह वहां लोकतंत्र को भी बदलने जा रहे हों, तो कोई आश्चर्य नहीं। उनकी टीम के अनेक दिग्गज परिवर्तन के आकांक्षी हैं। न जाने कितने परिवर्तन ट्रंप के शासन में लागू होंगे। उम्मीद करनी चाहिए कि ट्रंप की नई टीम अमेरिकी परंपराओं का यथासंभव निर्वाह करते हुए ही देश को फिर से महान बनाएगी। लेकिन इस बार अमेरिकी परम्पराओं में युद्ध एवं हिंसा के स्थान पर शांति, विकास एवं हथियार मुक्ति के संकल्प होना बड़ी एवं राहतभरी बात है। हालांकि, अमेरिका को महान बनाने के अभियान पर कई सवाल भी हैं। क्या अमेरिकी निर्णायकों ने मान लिया है कि अमेरिका अब महान नहीं रहा? इस अभियान के नाम से तो शायद यही लगता है कि अमेरिकी विचारकों ने अपने देश के महान न रह पाने की वजहों का पता भी लगा लिया है। उनकी नजर उन अमेरिकी चालाकियों पर भी निस्संदेह पड़ी होगी, जिनकी वजह से अमेरिकियों की अक्सर आलोचना होती है। इन वजहों में युद्ध एवं हथियारों की होड़ बड़ी वजह रही है। अनेक राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि युद्ध, हिंसा, आतंकमुक्त नये अमेरिका को विकसित करने एवं विश्व में शांति के संकल्प को देखते हुए अमेरिका को शुरू से ही भारत के साथ खड़ा रहना चाहिए। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और अमेरिका सबसे पुराना जीवित लोकतंत्र है, दुनिया में युद्ध एवं आतंक के खिलाफ भारत हमेशा अग्रसर रहा है, युद्ध का अंधेरा मिटाने, शांति का उजला करने एवं अहिंसा-सहजीवन की कामना ही भारत का लक्ष्य रहा है। इसीलिये भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लगातार युद्ध विराम की कोशिश करते रहे हैं।

ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद भारत और अमेरिका के रिश्तों पर क्या असर होगा, इसे लेकर विशेषज्ञ कई तरह की उम्मीदें जता रहे। जानकारों के मुताबिक, ट्रंप के आने से भारत और अमेरिका के संबंध और गहरे होंगे। चीन को लेकर दोनों देशों की चिंता इन्हें करीब लाएगी। यह ट्रेंड पिछले पांच अमेरिकी राष्ट्रपतियों के कार्यकाल जैसा ही रहेगा। क्वाड और मजबूत होगा। प्रशासन के कई विभागों में भारत के अच्छे संबंध बनेंगे। राजनीतिक और वैचारिक तालमेल भी अच्छा रहने की उम्मीद की जा रही। इसके साथ ही रक्षा, खुफिया और सुरक्षा मामलों में दोनों देशों के बीच भरोसा बढ़ेगा। टेक्नोलॉजी में सहयोग की संभावनाएं बढ़ने के आसार हैं। सबसे अहम है भारत की युद्ध एवं आतंक मुक्त विश्व बनाने की योजना, इसको लेकर ट्रंप भी आगे आये है जो नये सूरज का अभ्युदय है। लेकिन ट्रंप का नया दौर कहीं मौखिक हमलों या कटु उद्गारों तक ही सीमित न रह जाए। इसके लिये जरूरी है कि वह भारत की शांतिपूर्ण नीतियों एवं योजनाओं को अग्रसर करें। भारत सहित तमाम दुनिया यही उम्मीद करेगी कि ट्रंप दुनिया में चल रहे बड़े युद्धों और छद्म युद्धों को रोकने में सफलता हासिल करें साथ ही आतंकवाद के खिलाफ ईमानदार रवैया अपनाये ताकि नई उबरती उभरती दुनिया में अमेरिकी सचमुच महानता का वरन कर सके।

बिना पैडल और स्पोक व्हील के चल रही इलेक्ट्रिक साइकिल, सिंगल चार्ज में मिलती है 100 किलोमीटर की रेंज

परिवहन विशेष न्यूज

ऑटो एक्सपो में हेलन बाइक 2025 ऑटो एक्सपो 2025 के दौरान कई बेहतरीन वाहनों और तकनीक को शोकेस किया जा रहा है। ऐसे में हैदराबाद के इंजीनियर्स की ओर से ऐसी इलेक्ट्रिक साइकिल को दिखाया जा रहा है जिसमें न तो पैडल हैं और न ही स्पोक व्हील्स हैं। इस Electric Cycle की क्या खासियत है। कैसा डिजाइन है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। दिल्ली के प्रगति मैदान में देश और दुनिया की कई प्रमुख वाहन निर्माता नए डिजाइन, नई तकनीक और फीचर्स के साथ अपने उत्पादों को पेश और लॉन्च कर रही हैं। इनके साथ ही यहां पर देश के कुछ ऐसे स्टार्ट-अप भी हैं जो रोजाना की जरुरत को समझते हुए तकनीक के जरिए कुछ बेहतरीन उत्पादों को शोकेस कर रहे हैं।

Electric Cycle के पीएम मोदी भी हुए मुरीद

ऑटो एक्सपो 2025 में आंध्र प्रदेश के कुछ इंजीनियरों ने एक ऐसी इलेक्ट्रिक साइकिल को बनाया है जो काफी खास है। यह साइकिल इतनी खास है कि पीएम मोदी ने भी इसे देखा। एक स्टॉर्ट-अप के तौर पर हेलेन बाइक्स ने इस साइकिल को यहां शोकेस किया है।

कॉन्सेप्ट मॉडल हुआ शोकेस

हबलेस साइकिल के कॉन्सेप्ट मॉडल को दिखाया है। Helex नाम की इस यह साइकिल फिलहाल तो एक कॉन्सेप्ट के तौर पर शोकेस की जा रही है। लेकिन सही इनवेस्टर मिलने पर इसे कॉन्सेप्ट से प्रोडक्शन तक आने में करीब छह से नौ महीने तक का समय लग सकता है।

कितनी है रेंज और बैटरी की क्षमता

हबलेस साइकिल में न तो रिम स्पोक्स को दिया गया है और न ही इसे चलाने के लिए पैडल की जरुरत होती है। साइकिल के फ्रेम में ही 1.2 kWh की क्षमता की मोटर को लगाया गया है जिसे करीब तीन घंटे में फुल चार्ज किया जा सकता है। एक बार चार्ज होने के बाद साइकिल को करीब 90 से 100 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। साइकिल के कॉन्सेप्ट वर्जन का कुल वजन 60 से 70 किलोग्राम

के बीच है, लेकिन इसके फाउंडर्स में से एक सजीव रत्नम का कहना है कि अगर इसे प्रोडक्शन में लाया जाता है तो इसका वजन करीब 35 किलोग्राम तक किया जा सकता है। इसके दोनों पहियों में स्पोक्स नहीं है, इसकी जगह साइकिल में मोटर को लगाया गया है जिसके ऊपर टायर लगाए गए हैं। ऐसे में जब साइकिल को चलाने के लिए रेस दी जाती है तो मोटर के साथ लगे पहिए घूमने लगते हैं। इस इलेक्ट्रिक साइकिल को 25 किलोमीटर प्रति घंटे तक की टॉप स्पीड पर चलाया जा सकता है।

कितने हैं वेरिएंट

हेलेन बाइक्स के फाउंडर सजीव का कहना है कि फिलहाल कॉन्सेप्ट के तौर पर इस साइकिल को 25 किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड से चलाया जा सकता है। लेकिन इसके प्रोडक्शन के समय दूसरे वेरिएंट की टॉप स्पीड 45 किलोमीटर प्रति घंटे तक हो सकती है और उसके लिए ड्राइविंग लाइसेंस की जरुरत होगी।

ऑटो एक्सपो 2025 में लॉन्च हुई भारत की पहली सोलर से चलने वाली कार, सिंगल चार्ज में देगी 250किमी की रेंज

परिवहन विशेष न्यूज

इंडिया मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो 2025 में भारत की पहली सोलर इलेक्ट्रिक कार Vayve Eva लॉन्च हुई। इसे कंपनी ने तीन वेरिएंट नोवा स्टेला और वेगा में लेकर आई है। इसे कंपनी ने बैटरी रेंटल प्लान और बिना सब्सक्रिप्शन के साथ लेकर आई है। बैटरी रेंटल वाले की कीमत 3 .25 लाख रुपये और बिना सब्सक्रिप्शन प्लान के इसकी कीमत 3 .99 लाख रुपये है।

नई दिल्ली। भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो 2025 में वायवे ने अपनी नई सौर ऊर्जा से चलने वाली कार 'ईवा' को लॉन्च किया है। यह तीन ट्रिम्स - नोवा, स्टेला और वेगा में लाई गई है। इसे बैटरी बैटरी सब्सक्रिप्शन के साथ भी लाया गया है, जिसकी कीमत शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 3.25 लाख रुपये है और बैटरी के साथ 3.99 लाख रुपये रखी गई है। इसकी डिलीवरी साल 2026 के मध्य से शुरू किया जाएगा। इसकी प्री-बुकिंग लॉन्च के साथ ही शुरू की जा चुकी है।

डाइमेंशन

Vayve Eva में एक 2-दरवाजा, 2-सीटर क्वाड्रिसाइकिल है जिसे खासतौर पर शहरी यात्रा के लिए डिजाइन किया गया है। इसकी लंबाई 3,060 मिमी, चौड़ाई 1,150 मिमी और ऊंचाई 1,590 मिमी है, जबकि व्हीलबेस 2,200 मिमी है। यह 170 मिमी का ग्राउंड क्लीयरेंस भी दी गई है।

कलर ऑप्शन

शैम्पेन गोल्ड
मूनस्टोन व्हाइट
रोज कोरल
चेरी रेड
स्काई ब्लू
लाइट प्लेटिनम

बैटरी और ड्राइविंग रेंज

Solar Electric Car ईवा में 14 kWh का बैटरी पैक दी गई है, जो IP68 सर्टिफिकेशन के साथ आती है, जिससे यह पानी और धूल से सेफ रहेगी। इसमें लगी हुई बैटरी एक बार पूरी तरह से चार्ज होने पर 250 किमी की ड्राइविंग रेंज देती है। बैटरी को चार्ज करने के लिए, इसमें पीछे की ओर एक सिंगल इलेक्ट्रिक मोटर दी गई है, जो 8 bhp की पावर और 40 Nm का टॉर्क जनरेट करती है। यह महज 5 सेकंड में 0 से 40 किमी/घंटा की स्पीड पकड़ सकती है और इसकी अधिकतम स्पीड 70 किमी/घंटा है।

ईवा एसी और डीसी दोनों प्रकार की चार्जिंग को सपोर्ट करती है। एक मानक 15A सॉकेट से बैटरी 4 घंटे में 80 प्रतिशत तक चार्ज हो जाती है, जबकि CCS2 डीसी फास्ट चार्जर का उपयोग करने पर यह समय केवल 45 मिनट हो जाता है, और सिर्फ 5 मिनट की चार्जिंग से 50 किमी की रेंज बढ़ाई जा सकती है।

फीचर्स

Solar Electric Car ईवा में कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं, जो निम्नलिखित है

क्लाइमेट कंट्रोल
पैनोरमिक सनरूफ
टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम
एंड्रॉइड ऑटो और ऐप्पल कारप्ले सपोर्ट
वाहन डायग्नोस्टिक्स और ओटीए अपडेट्स
डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले
एयरबैग्स
छह-तरफा एडजस्टेबल ड्राइवर सीट
दो-स्पोक स्टीयरिंग व्हील

पीछे की बेंच पर एक वयस्क और एक बच्चा आराम से बैठ सकते हैं। इसके अलावा, इसमें एक सोलर रूफ दी गई है, जो प्रति वर्ष 3,000 किमी तक की अतिरिक्त रेंज प्रदान करता है (औसतन 10 किमी प्रतिदिन)।

कीमत

Solar Electric Car EVA को तीन वेरिएंट में लॉन्च किया गया है, जो नोवा, स्टेला और वेगा है।

Nova - बैटरी रेंटल प्लान के साथ 3.25 लाख रुपये और बिना सब्सक्रिप्शन के 3.99 लाख रुपये है।

Stella - बैटरी रेंटल प्लान के साथ 3.99 लाख रुपये और बिना सब्सक्रिप्शन के 4.99 लाख रुपये है।

Vega - बैटरी रेंटल प्लान के साथ 4.49 लाख रुपये और बिना सब्सक्रिप्शन के 5.99 लाख रुपये है।

महिंद्रा XUV 3XO के बेस वेरिएंट को है घर लाना, दो लाख रुपये की अग्रिम भुगतान के बाद कितनी बनेगी ईएमआई, पढ़ें खबर

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में वाहन निर्माता Mahindra की ओर से SUV सेगमेंट में कई वाहनों की बिक्री की जाती है। अगर आप भी कंपनी की बजट SUV Mahindra XUV 3XO के बेस वेरिएंट MX1 को खरीदने का मन बना रहे हैं और दो लाख रुपये की डाउनपेमेंट करने के बाद गाड़ी को घर लाना चाहते हैं, तो हर महीने कितने रुपये की EMI देनी (Mahindra XUV 3XO Down Payment and EMI) होगी। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

Mahindra XUV 3XO MX1 Price

Mahindra की ओर से XUV 3XO के बेस वेरिएंट के तौर पर MX1 को ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी के बेस वेरिएंट की एक्स शोरूम (Mahindra XUV 3XO MX1 Price) कीमत 7.99 लाख रुपये है। इस गाड़ी को अगर दिल्ली में खरीदा जाता है तो करीब 56 हजार रुपये आरटीओ और करीब 42 हजार रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। जिसके बाद Mahindra XUV 3XO MX1 on road price करीब 8.97 लाख रुपये के आस-पास हो जाती है।

दो लाख Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर आप इस गाड़ी के बेस वेरिएंट MX1 को खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 6.97 लाख रुपये को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको 9 फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 6.97 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने 11216 रुपये हर महीने की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी कार

अगर आप 9 फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 6.97 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 11216 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Mahindra XUV 3XO MX1 के लिए करीब 2.45 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 11.42 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Mahindra की ओर से XUV 3XO को कंपनी सब फोर मीटर एसयूवी के तौर पर ऑफर करती है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी का बाजार में सीधा मुकाबला Renault Kiger, Maruti Breeza, Tata Nexon, Kia Sonet, Hyundai Venue, Nissan Magnite जैसी SUVs के साथ होता है।

ऑटो एक्सपो 2025 में हुंडई ने शोकेस की आयनिक 9 इलेक्ट्रिक एसयूवी, जल्द हो सकती है भारत में लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

साउथ कोरियाई वाहन निर्माता Hyundai की ओर से भारतीय बाजार में कई बेहतरीन कारों और एसयूवी को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से Auto Expo 2025 के दौरान कई कारों को शोकेस किया गया है। इनमें Hyundai Ioniq 9 भी शामिल है।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में साउथ कोरियाई वाहन निर्माता Kia की ओर से बेहतरीन Cars And SUVs को ऑफर किया जाता है। कंपनी ने Bharat Mobility 2025 के तहत आयोजित किए जा रहे Auto Expo 2025 के दौरान प्रीमियम Electric SUV Hyundai Ioniq 9 को शोकेस किया है। इसमें किस तरह के फीचर्स को दिया जाता है। कितनी दमदार बैटरी और रेंज को ऑफर किया जाता है। भारत में औपचारिक तौर पर इसे कब तक लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Hyundai Ioniq 9 हुई Auto Expo 2025 में शोकेस

हुंडई की ओर से प्रीमियम इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर Hyundai Ioniq 9 को कई देशों में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी ने भारत में हो रहे Auto Expo 2025 के दौरान इसे शोकेस किया है।

कैसे हैं फीचर्स

कंपनी की ओर से इस इलेक्ट्रिक एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें तीन रो सीट्स के साथ ही एलईडी सिग्नेचर लाइट्स, 19, 20 और 21 इंच अलॉय व्हील्स के विकल्प, पैनोरमिक सनरूफ, सेकेंड रो में पायलट सीट्स, 620 लीटर की क्षमता का बूट स्पेस, 100 वाट हाई आऊटपुट यूएसबी टाइप सी पोर्ट, 12.3 इंच डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, 12.3 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, एंबिएंट लाइट्स, हुंडई कार प्ले, डिजिटल साइड मिरर्स, रिमोट स्मार्ट पार्किंग असिस्ट-2, हाइवे ड्राइविंग असिस्ट-2, ड्यूल टोन इंटीरियर, फ्लश डोर हैंडल, एबीएस, ईबीडी, एयरबैग, फ्रंट और रियर में पार्किंग सेंसर, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, रुफ रेल, 360 डिग्री कैमरा, इलेक्ट्रिकली एडजस्टेबल सीट्स, मसाज फंक्शन सीट्स जैसे कई फीचर्स को दिया जाता है।

कितनी दमदार बैटरी और मोटर

हुंडई की ओर से Ioniq 9 प्रीमियम इलेक्ट्रिक एसयूवी में 110.3 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है। जिसे फुल चार्ज करने के बाद 620 किलोमीटर तक की WLTP रेंज मिल सकती है। एसयूवी को फास्ट चार्जर से 20 मिनट में 10 से 80 फीसदी तक चार्ज किया जा सकता है।

कितनी होगी कीमत

कंपनी की ओर से अभी सिर्फ इस इलेक्ट्रिक एसयूवी को भारत में चल रहे Auto Expo 2025 के दौरान पेश किया गया है। लेकिन इसके लॉन्च को लेकर किसी भी तरह की जानकारी को सार्वजनिक नहीं किया गया है। उम्मीद की जा रही है कि साल 2025 के आखिर तक हुंडई नई इलेक्ट्रिक एसयूवी को भारतीय बाजार में लॉन्च कर सकती है। लॉन्च के समय इसकी संभावित एक्स शोरूम कीमत 1.30 करोड़ रुपये के आस-पास हो सकती है।

हुंडई दे रही लोकलाइजेशन पर जोर, क्रेते ई.वी के लिए देश में ही बनाई गए बैटरी पैक

परिवहन विशेष न्यूज

साउथ कोरियाई वाहन निर्माता Hyundai की ओर से भारतीय बाजार में कई वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की योजना भारत में ही लोकलाइजेशन को बढ़ाते हुए पार्ट्स और EV के लिए बैटरी बनाने की है। कंपनी ने इस लक्ष्य को कितने फीसदी तक हासिल किया है। किस गाड़ी में Made In India बैटरी पैक का उपयोग किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में कई सेगमेंट में वाहनों को ऑफर करने वाली निर्माता Hyundai की ओर से नए कीर्तिमान को हासिल किया गया है। कंपनी की ओर से आत्मनिर्भर भारत के लिए किस तरह के कीर्तिमान को हासिल किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Hyundai ने हासिल किया मुकाम

हुंडई मोटर इंडिया की ओर से नए कीर्तिमान को हासिल किया गया है। कंपनी ने Make In India के तहत 92 फीसदी तक स्थानीयकरण को हासिल कर लिया है। इसके साथ ही कंपनी की ओर से चेन्नई में विनिर्माण फेसिलिटी के अंदर नई बैटरी पैक की स्थानीय असेंबली को भी शुरू किया गया है।

करोड़ों रुपये की हुई बचत

कंपनी की ओर से स्वदेशीकरण करने के प्रयासों से 2019 से अब तक 672 मिलियन अमेरिकी डॉलर (5,678 करोड़ रुपये से अधिक) की विदेशी मुद्रा बचत हुई है और 1,400 से अधिक लोगों के लिए प्रत्यक्ष रोजगार के अवसर पैदा हुए हैं।

Hyundai Creta EV में लगी बैटरी

हुंडई क्रेटा के इलेक्ट्रिक वर्जन को जनवरी 2025 में ही लॉन्च किया गया है। इस गाड़ी में भी जो बैटरी पैक लगाया गया है वह भी भारत में बनाया गया है।

अधिकारियों ने कही यह बात

एचएमआईएल के पूर्णकालिक निदेशक गोपालकृष्णन चतपुरम शिवरामकृष्णन ने कहा कि स्वदेशीकरण के प्रयास भारत सरकार के 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक-इन-इंडिया' पहलों के साथ गहराई से तालमेल रखते हैं और हमारी स्थानीयकरण रणनीति घरेलू स्तर पर विश्व स्तरीय तकनीक विकसित करने के लिए भारत के समृद्ध संसाधनों, कुशल कार्यबल और उन्नत इंजीनियरिंग कौशल का लगातार लाभ उठाने का प्रयास करती है। एचएमआईएल और मोबिस इंडिया लिमिटेड के बैटरी-पैक असेंबली प्लांट का चालू होना हमारे स्थानीयकरण और ईवी रोडमैप में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। हुंडई क्रेटा इलेक्ट्रिक भारत में निर्मित पहली हुंडई ईवी बन गई है जो इसी प्लांट में असेंबल की गई बैटरी-पैक से लैस है।

कितनी है क्षमता

कंपनी से मिली जानकारी के मुताबिक पहले चरण में इस प्लांट में हर साल 75 हजार बैटरी पैक बनाए जा सकते हैं। जिसमें एनएमसी और एलएफपी के साथ ही अन्य तकनीक वाली बैटरी को बनाया जा सकता है।

ऑटो एक्सपो 2025 में सुज़ुकी की जिक्सर एसएफ 250 फ्लेक्स ईंधन लॉन्च, दमदार इंजन समेत एडवांस फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

ऑटो एक्सपो 2025 में सुजुकी जिक्सर एसएफ 250 फ्लेक्स फ्यूललॉन्च हुई। इसमें 250cc BS-VI इंजन लगाया गया है जो इथेनॉल के 20% से लेकर 85% तक के मिश्रण का इस्तेमाल किया जा सकता है। इसमें नया फ्यूल पंप फ्यूल लाइन इंजेक्टर नया ECM (इलेक्ट्रॉनिक कंट्रोल यूनिट) और नए डिज़ाइन किए गए पिस्टन रिंग्स दिए गए हैं। इसमें डुअल-चैनल ABS भी दी गई है।

नई दिल्ली। सुजुकी मोटरसाइकिल इंडिया ने अपनी नई Gixxer SF 250 Flex Fuel को Auto Expo 2025 में लॉन्च किया। इस बाइक में 250cc BS-VI इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इस इंजन को इथेनॉल मिश्रित ईंधन पर चलने के लिए डिजाइन किया गया है, जो पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद है। इस बाइक में इथेनॉल के 20% से लेकर 85% तक के मिश्रण का इस्तेमाल किया जा सकता है, जिसकी वजह से CO2 उत्सर्जन कम होगा। आइए जानते हैं कि Suzuki Gixxer SF 250 Flex Fuel को किन फीचर्स के साथ लेकर आया गया है।

क्या है नया

सुजुकी ने Gixxer SF 250 के इंजन को बेहतर बनाने के लिए कई जरूरी अपडेट किए गए हैं। अब यह बाइक पूरी तरह से इथेनॉल-मिश्रित ईंधन पर चलने के लिए तैयार है। आइए जानते हैं कि इसमें क्या खास अपग्रेड किए गए हैं।

इंजन: 250cc इंजन को इथेनॉल मिश्रित ईंधन (E85) पर चलाने के लिए अपडेट किया गया है।

नई तकनीक: इसमें नया फ्यूल पंप, फ्यूल लाइन, इंजेक्टर, नया ECM (इलेक्ट्रॉनिक कंट्रोल यूनिट), और नए डिज़ाइन किए गए पिस्टन रिंग्स और वाल्व दिए गए हैं।

बेहतर प्रदर्शन: इन सुधारों के साथ, बाइक में बेहतर ईंधन उपयोग और अधिक स्थायित्व मिलेगा। इसके साथ एक नया फ्यूल गेज भी है, जो उपयोगकर्ताओं को सटीक जानकारी प्रदान करेगा।

इंजन स्पेसिफिकेशन

Gixxer SF 250 Flex Fuel में एक सिंगल-सिलेंडर 250cc इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इसमें सिंगल ओवरहेड दिया गया है, जो सिंगल ओवरहेड कैमशाफ्ट (SOHC) के साथ आता है। इस इंजन की खास बात यह है कि यह E85 (85% इथेनॉल) फ्यूल पर 9,300 rpm पर 27.5 bhp की पावर और E20 फ्यूल पर 9,300 rpm पर 27 bhp की पावर जनरेट करता है। इसके अलावा, यह इंजन 7,300 rpm पर 22.5 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। बाइक में सुजुकी का ऑयल कूलिंग सिस्टम (SOCS) और इको परफॉरमेंस (SEP) तकनीक भी दी गई है, जो बेहतर ईंधन दक्षता, लंबी उम्र और कम रखरखाव में मदद करती है।

डिजाइन और फीचर्स

इसके डिजाइन को पूरी तरह से स्पोर्टी और एयरोडायनामिक दी गई है। इसमें LED हेडलाइट और LED टेल लाइट दिए गए हैं, जो न केवल स्टाइलिश हैं, बल्कि रोड पर अधिक विजिबिलिटी भी प्रदान करते हैं। बाइक के

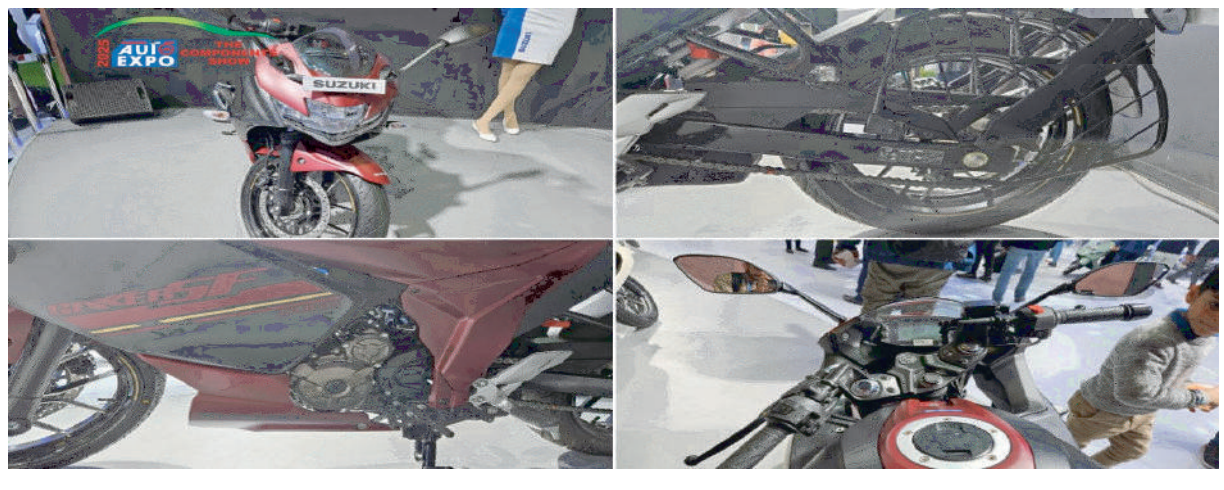

परफॉर्मेंस को और बेहतर बनाने के लिए इसमें स्पोर्टी डुअल मफलर भी दिया गया है। इस मोटरसाइकिल में स्प्लिट-सीट डिजाइन और डुअल-चैनल ABS (एंटी-लॉक ब्रेकिंग सिस्टम) भी है। इसके अलावा, साइड-स्टैंड इंटरलॉक स्विच और ईजी स्टार्ट सिस्टम भी बाइक में शामिल हैं।

Gixxer SF 250 Flex Fuel में एक ऑल-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया गया है, जो ब्लूटूथ के जरिए से सुजुकी के राइड कनेक्ट एप्लिकेशन से जुड़ता है। इस स्मार्ट फीचर के जरिए राइडर्स अपनी बाइक की पूरी जानकारी जैसे कि नेविगेशन, ट्रिप डेटा और अन्य राइडिंग स्टेटस को सीधे अपनी स्मार्टफोन स्क्रीन पर देख सकते हैं।

कीमत और कलर ऑप्शन

Gixxer SF 250 Flex Fuel की एक्स-शोरूम दिल्ली में कीमत 2,16,500 रुपये रखी गई है। यह बाइक दो कलर ऑप्शन में उपलब्ध है, जो मेटालिक मैट ब्लैक और मेटालिक मैट बोर्डो रेड विद मेटालिक मैट ब्लैक है।

जीवन में जीवनसाथी, सुख-दुख, उम्र और परिस्थितियों के अनुसार रंगों का महत्व बदल जाता है

विजय गर्ग

दुख के शब्द सुनते और बोलते ही एक उदास, निराश और लटका हुआ चेहरा हमारी आंखों के सामने खड़ा हो जाता है। यह मनुष्य की महानता है, यह अच्छा गुण है कि वह दीन-दुखियों के दुःख में सहभागी होता है, उसके दुःख में सहभागी होता है। इसीलिए कहा जाता है कि दुख बांटने से आधा हो जाता है और खुशियां अक्सर बांटने से दोगुनी हो जाती है जीवन में सुख-दुख, उम्र और परिस्थितियों के अनुसार जीवन साथी रंग बदलता हैजीवन में उम्र और परिस्थितियों के अनुसार जीवन साथी का महत्व, सुख-दुख, रंगों का महत्व बदलता रहता है। हमारे विभिन्न धार्मिक ग्रंथों में भी दुख को परिभाषित किया गया है और दुख को दूर करने के लिए हमेशा अच्छे कर्म करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। लेकिन यहां जो बात मायने रखती है वह है हमारी पीड़ा? क्योंकि जीवन उतार-चढ़ाव का दूसरा नाम है और यही उतार-चढ़ाव मनुष्य के दुख-सुख के रूप में साथी भी होते हैं और एक-दूसरे के पूरक भी होते हैं। क्योंकि यदि व्यक्ति स्वयं दुःख या सुख नहीं भोगेगा तोवह दूसरे का दुःख या सुख कैसे महसूस कर सकता है? इन दुखों और सुखों के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। क्योंकि जिस प्रकार हृदय की धड़कन बंद हो जाने पर व्यक्ति जीवित नहीं रह सकता, उसी प्रकार दुःख और सुख की भावनाओं का समाप्त हो जाना जीवन का अंत है। मुझे लगता है कि दुनिया में कोई भी इंसान ऐसा नहीं है जो दुखी या अप्रसन्न रहना चाहता हो। हम अपने आस-पास की परिस्थितियों, अपनी मनःस्थिति के अनुसार अपने चारों ओर एक वातावरण बनाते हैं, जिसे हम दुःख या सुख कहते हैं।नाम मत बताइये अनावश्यक इच्छाएँ ही मुख्य कारण हैं अब अगर हम दुख के कारण पर नजर डालें तो अधिकतर समय व्यक्ति अपनी ही अनावश्यक इच्छाओं के कारण दुखी और बेचैन रहता है। परेशान व्यक्ति हमेशा भ्रमित नजर आता है और उसका चेहरा फीका नजर आता है। कष्ट की यही प्रकृति स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालती है। कभी-कभी इंसान के अंदर का अहंकार ही उसके और दूसरों के दुखों का कारण होता है और हमारे अंदर पैदा हुई ईर्ष्या और कड़वाहट इन दुखों को चरम सीमा तक ले जाती है। फिर हम जिंदगी के खुशनुमा पलों को मिस कर देते हैंहाँ जैसा कि अक्सर देखा जाता है कि अगर किसी शादी में किसी खास रिश्तेदार की बात नहीं होती तो ऐसे लोग अपने अहं की संतुष्टि के लिए पूरे कार्यक्रम को खराब करके किसी और को ठेस पहुंचाना अपना अंतर्निहित कर्तव्य समझते हैं। क्योंकि वे अपमानित महसूस करके आहत होते हैं। खुशी के कार्यक्रमों को निराशा की दुनिया में डुबाकर खुद को खुश महसूस कराने का यह एक असफल प्रयास है, जबकि कुछ समय बाद यह प्रवृत्ति केवल पछतावे की ओर ले जाती है।वहीं दूसरी ओर आज का टेक्नोलॉजी का युग लोगों को मानसिक रूप से बीमार बना रहा है। इंसानों में शारीरिक रूप से खुशहाली देखी जाती है, लेकिन जो लोग सोशल मीडिया की गिरफ्त में हैं, वे आदतन परेशान हैं। आज के दौर में हर तीसरा व्यक्ति टेक्नोलॉजी के उपयोग और दुरुपयोग दोनों से पीड़ित है। हालाँकि हममें से अधिकांश लोग इस पीड़ा के बिना भी रह सकते हैं। प्रकृति के साथ सामंजस्य का अभाव दरअसल, मनुष्य खुद को प्रकृति से और खुद को प्रकृति से जोड़े रखना भूल गया है, जो उसकी परेशानियों की जड़ है। अगर हम दुख सहते हुए सोते हैंयदि हम ईश्वर में सामंजस्य रखना समझ जायेंगे तो हम ईश्वर के बारे में सोचेंगे और किसी को दुःख पहुँचाने के बारे में सोचने की बजाय धन्यवाद देने की आदत बन जायेगी। यदि मनुष्य जीवन की अनावश्यक मांगों और आवश्यकताओं के ताने-बाने में सामंजस्य को समझ ले तो जीवन उसके लिए दीवाना हो जाएगा। लोभ की भटकन ही मनुष्य के दुखों की जड़ है। जैसे कि अगर हम अपने स्वास्थ्य और काम में समन्वय नहीं रखते हैं, तो हमारे शरीर को नुकसान होता है। ज्यादातर समय इंसान सेहत का ध्यान न रखते हुए पैसों के पीछे भागता हैपिछली उम्र की कमाई से डॉक्टर भी उसके शारीरिक कष्ट को कम नहीं कर पा रहे हैं। एक टूटा हुआ दिल आग से खेल रहा है और जब हम अपने अहंकार को संतुष्ट करने की कोशिश करते हैं तो कष्ट होना सामान्य है। निष्क्रिय रहने की आदत इंसान की आदत होती है कि वह मुसीबत से डरता है, जो कमजोर दिमाग और अकर्मण्यता की निशानी है। तब यह परेशानी दुख का भंडार बन जाती है। जैसा कि कहा जाता है, खाली दिमाग शैतान का घर होता है। आलस्य करने की आदत ही परेशानियों और दुखों को जन्म देती हैअनुयायी बन जाता है. इसलिए इंसान का हमेशा एक्टिव रहना बहुत जरूरी है। यदि यह कार्य किसी दूसरे का कष्ट बढ़ाने के इरादे से नहीं किया गया है तो निःसंदेह यह आपकी खुशी बढ़ाने की क्षमता रखता है। अपने दोषों को देखो और उन्हें दूर करो। कभी भी नकारात्मक मत बनो. फिर आपकी ख़ुशी की तस्वीर कभी कोई नहीं बदल सकता. अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें, अपने क्रोध को जीवन की खुशियों पर हावी न होने दें। स्वभाव और चरित्र की विनम्रता में आपकी सभी समस्याएं और परेशानियाँ नकारात्मक हो जाती हैं। आपके अच्छे विचार परख़ुशी की एक आंतरिक हलचल आपके चरित्र पर एक अच्छी और सुंदर छाप छोड़ती है। दुख में डूबे लोग कभी भी अच्छे और रचनात्मक निर्णय नहीं ले पाते हैं। अपना रुतबा और रहन-सहन ऐसा रखें कि आपकी बातों से किसी को ठेस न पहुंचे। क्योंकि अगर आपको दुखी होना पसंद नहीं है तो यह किसी और की तरह भी नहीं हो सकता। अतीत की विस्मृति के लिए आज का बलिदान अगर इंसान नेक इरादे से अपनी मंजिल की ओर बढ़ता है तो उसे कभी भी जायज-नाजायज दुख-सुख का दिखावा नहीं करना पड़ता। जब आदमी की पत्नीयदि रचना सिद्धांतों और विचारधारा पर आधारित हो तो उसके जीवन का हर पल रंगीन रहता है। इसके लिए आवश्यक है कि आप वर्तमान में जियें। भविष्य को ठीक करने और अतीत की गलतियों पर पछताने के लिए वर्तमान का बलिदान न करें। वर्तमान की योजनाओं में भविष्य का दर्शन करना बुद्धिमत्ता कही जा सकती है, परंतु केवल भविष्य के कष्टों के बारे में सोचकर अच्छी उपलब्धियों की गाथा कभी नहीं लिखी जा सकती। इसलिए दिल और दिमाग के दरवाजे खुले रखें ताकि नई राहें मिलती रहें। खुले दरवाजों, खुली खिड़कियों सेसिर्फ दिल और दिमाग जुड़े हैं और खुशी का सूरज साफ नजर आता है। आपके विचारों की ताजगी ही आपके जीवन का आनंद बरकरार रख सकती है। जुए से मिली छोटी-छोटी खुशियाँ एक बुरी दवा की तरह है, जो आपके जीवन को कभी भी आगे नहीं बढ़ा सकती। अपने अंदर की इंसानियत को कभी मरने न दें, क्योंकि इंसानियत का नशा आपके जीवन को खुशियों से भर देगा। गम और खुशियों के मेले में खुद को मत खोना जीवन के सुख-दुख के मेले में खुद को मत खोना, क्योंकि मेला न खोने का है न रहने का ऐसा होता नहीं है लेकिन ये आनंद का साधन है. इसी तरह, जीवन का यह त्योहार कई रंगों से भरा है और आनंद लेने के लिए है। अपने जीवन को आनंदमय बनाए रखने के लिए अपनी आत्मा और हृदय को पोषण देने के लिए संगीत, कला या प्रकृति से जुड़ें। प्रकृति की देने की प्रवृत्ति का अनुयायी बनो, यह नीति अपनाओ तो दुःख की घड़ी तुम्हारे सामने घुटने टेक देगी। दुनिया आपके बारे में क्या सोचती है? पहले यह देख लें कि आप अपने बारे में क्या सोचते हैं? अगर आप कहीं जाना चाहते हैं तो समय और परिस्थिति के अनुसार तैयार होकर खुद को शीशे से देखना चाहिएआप निरीक्षण करें और यदि कोई कमी हो तो उसके आधार पर स्वयं को स्थापित करें। बस अभिनय करते रहें और सक्रिय रहें क्योंकि आप खुद को जीवन के दर्पण में देखना चाहते हैं। जिस प्रकार हमारे जीवन में उम्र और परिस्थितियों के अनुसार रंगों का महत्व बदलता है, उसी प्रकार हर दिन आने वाले छोटे-छोटे दुख-सुख के महत्व को पहचानें और अपने लिए खुशियां चुनें।

भारत में पुरुषों के खिलाफ लैंगिक असमानता की अनकही कहानी

विजय गर्ग

भारतीय समाज, जो लंबे समय से पितृसत्ता और महिलाओं के खिलाफ लैंगिक असमानता में फंसा हुआ है, अब इस मुद्दे के एक अनदेखे आयाम - पुरुषों के खिलाफ लैंगिक असमानता - से जूझ रहा है। भारतीय समाज में हमेशा से ही महिलाओं के प्रति पितृसत्ता और लैंगिक असमानता का बोलबाला रहा है। हालाँकि, हाल ही में एक तकनीकी विशेषज्ञ और एक हेड कांस्टेबल की दो आत्महत्याएँ, दोनों ने अपनी अलग हो चुकी पत्नियों और परिवारों पर जबरन वसूली और उत्पीड़न का आरोप लगाया, अत्यधिक विषम, महिला-उन्मुख और अप्रचलित कानूनी ढांचे की ओर इशारा करते हैं। लैंगिक असमानता काफी हद तक एक आधी-अधूरी कहानी बनी हुई है, जो पुरुष समकक्ष से वंचित है। भारत में कानूनी प्रणाली महिलाओं के पक्ष में है क्योंकि भारत में दहेज कानून विशेष रूप से अत्यधिक भेदभावपूर्ण है। भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 (अब भारतीय सक्षम अधिनियम, 2023) की धारा 113बी के अनुसार यदि कोई विवाहित महिला शादी के 7 साल के भीतर आत्महत्या कर लेती है, तो यह माना जाता है कि पति या उसके परिवार ने आत्महत्या के लिए उकसाया, जबकि यह बात इन पर लागू नहीं होती है। औरत। विवाह मुकदमेबाजी विशेषज्ञों का दावा है कि जब महिलाएं अपने पतियों और परिवारों के खिलाफ शिकायत दर्ज करती हैं, तो दुर्व्यवहार की गतिशीलता और अस्पष्ट दस्तावेज अक्सर इन मामलों को अत्यधिक जटिल बना देते हैं और एक महिला के बयान को आमतौर पर अंकित मूल्य पर माना जाता है, जिससे कानूनी प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण असंतुलन पैदा होता है। इसके अतिरिक्त, हिंदू अल्पसंख्यक और संरक्षकता अधिनियम, 1956 के अनुसार, अधिकांश तलाक के मामलों में महिलाओं को विशेष रूप से 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की हिरासत में प्राथमिकता मिलती है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) 2022 के आंकड़ों के अनुसार, पुरुषों को कुल 1,70,896 में से 1,22,724 आत्महत्याएँ हुईं। यह सभी आत्महत्याओं का 71.81 प्रतिशत है। डेटा यह भी उजागर करता है कि हर 4.45 मिनट में एक पुरुष आत्महत्या करता है जबकि हर 9 मिनट में एक महिला आत्महत्या करती है। इसके अलावा, विवाहित पुरुषों में आत्महत्या की दर विवाहित महिलाओं की तुलना में तीन गुना है। 2021 में 81,063 विवाहित पुरुषों ने आत्महत्या की, जबकि महिलाओं का आंकड़ा 28,660 था। महानगरीय शहरों में पारिवारिक समस्याएँ और विवाह-संबंधी मुद्दे आत्महत्या के प्रमुख कारण थे, जो 32.5 प्रतिशत मामलों के लिए जिम्मेदार थे। पुरुषों के प्रति लैंगिक असमानता पर न केवल भारत में बल्कि विश्व स्तर पर सांस्कृतिक और शैक्षणिक अनुसंधान दोनों में सीमित चर्चा होती है। हालाँकि, तथ्यों पर करीब से नज़र डालने से मुख्य रूप से पक्षपाती नारीवादी सामाजिक संरचना का पता चलता है। दिल्ली स्थित संगठन, पुरुष आयोग के संस्थापक के अनुसार, समाज की रूढ़िवादिता यह मानती है कि 'पुरुष पीड़ित नहीं हो सकते', जिससे उनके सामने आने वाले मुद्दों की अज्ञानता और उपेक्षा होती है। 134 देशों के लिए स्टोएट और गीरी, 2019 के एक अध्ययन में दावा किया गया कि 91 (68 प्रतिशत) देशों में महिलाओं की तुलना में पुरुष अधिक वंचित थे। उन्होंने तर्क दिया कि असंतुलित माप तकनीकों के कारण वैश्विक लिंग अंतर त्रुटिपूर्ण था, जिसमें साहित्य की अनुपस्थिति के कारण उन स्थितियों को शामिल नहीं किया गया जहां पुरुष वंचित हैं। फ्रांस में एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि महिला-प्रधान कार्यस्थलों में पुरुषों के खिलाफ भेदभाव, पुरुष-प्रधान कार्यस्थलों में महिलाओं के खिलाफ भेदभाव की तुलना में अधिक प्रचलित है। पुरुष-विरोधी पूर्वाग्रह के साथ विपरीत लिंगवाद के समान उदाहरण बड़े पैमाने पर प्रचलित हैं, लेकिन विडंबना यह है कि इन्हें बमुश्किल ही उद्धृत किया जाता है। मानसिक स्वास्थ्य अनुसंधान भी महिलाओं पर केंद्रित है, और विद्वान पुरुषों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं को 'मूक महामारी' के रूप में चेतावनी देते हैं। कानूनी ढांचे में, महिला दोषियों को समान अपराधों के लिए लंबी और अधिक कठोर कारावास की सजा मिलने की संभावना कम है। प्रगतिशील सामाजिक संरचना के लिए महिलाओं का उदारीकरण और सशक्तिकरण आवश्यक हैऔर विकसित अर्थव्यवस्था. फिर भी, पुरुष शोषण की कीमत पर लिंग-समान स्थिति को बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए। आधुनिक समाज में, बदलती लैंगिक भूमिकाओं और संबंधों के साथ; बेहतर शिक्षा और जागरूकता; और नारीवाद जोर पकड़ रहा है, संतुलित वैवाहिक कानून पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हैं। सरकार को वित्तीय जटिलताओं, विवादों और कानूनी अधिकारों को संबोधित करने के लिए विवाह पूर्व समझौतों को शामिल करने के लिए विवाह कानूनों में संशोधन पर विचार करना चाहिए।

भारत में पुरुषों के खिलाफ लैंगिक असमानता की अनकही कहानी

विजय गर्ग

भारतीय समाज, जो लंबे समय से पितृसत्ता और महिलाओं के खिलाफ लैंगिक असमानता में फंसा हुआ है, अब इस मुद्दे के एक अनदेखे आयाम - पुरुषों के खिलाफ लैंगिक असमानता - से जूझ रहा है। भारतीय समाज में हमेशा से ही महिलाओं के प्रति पितृसत्ता और लैंगिक असमानता का बोलबाला रहा है। हालाँकि, हाल ही में एक तकनीकी विशेषज्ञ और एक हेड कांस्टेबल की दो आत्महत्याएँ, दोनों ने अपनी अलग हो चुकी पत्नियों और परिवारों पर जबरन वसूली और उत्पीड़न का आरोप लगाया, अत्यधिक विषम, महिला-उन्मुख और अप्रचलित कानूनी ढांचे की ओर इशारा करते हैं। लैंगिक असमानता काफी हद तक एक आधी-अधूरी कहानी बनी हुई है, जो पुरुष समकक्ष से वंचित है। भारत में कानूनी प्रणाली महिलाओं के पक्ष में है क्योंकि भारत में दहेज कानून विशेष रूप से अत्यधिक भेदभावपूर्ण है। भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 (अब भारतीय सक्षम अधिनियम, 2023) की धारा 113बी के अनुसार यदि कोई विवाहित महिला शादी के 7 साल के भीतर आत्महत्या कर लेती है, तो यह माना जाता है कि पति या उसके परिवार ने आत्महत्या के लिए उकसाया, जबकि यह बात इन पर लागू नहीं होती है। औरत। विवाह मुकदमेबाजी विशेषज्ञों का दावा है कि जब महिलाएं अपने पतियों और परिवारों के खिलाफ शिकायत दर्ज करती हैं, तो दुर्व्यवहार की गतिशीलता और अस्पष्ट दस्तावेज अक्सर इन मामलों को अत्यधिक जटिल बना देते हैं और एक महिला के बयान को आमतौर पर अंकित मूल्य पर माना जाता है, जिससे कानूनी प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण असंतुलन पैदा होता है। इसके अतिरिक्त, हिंदू अल्पसंख्यक और संरक्षकता अधिनियम, 1956 के अनुसार, अधिकांश तलाक के मामलों में महिलाओं को विशेष रूप से 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की हिरासत में प्राथमिकता मिलती है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) 2022 के आंकड़ों के अनुसार, पुरुषों को कुल 1,70,896 में से 1,22,724 आत्महत्याएँ हुईं। यह सभी आत्महत्याओं का 71.81 प्रतिशत है। डेटा यह भी उजागर करता है कि हर 4.45 मिनट में एक पुरुष आत्महत्या करता है जबकि हर 9 मिनट में एक महिला आत्महत्या करती है। इसके अलावा, विवाहित पुरुषों में आत्महत्या की दर विवाहित महिलाओं की तुलना में तीन गुना है। 2021 में 81,063 विवाहित पुरुषों ने आत्महत्या की, जबकि महिलाओं का आंकड़ा 28,660 था। महानगरीय शहरों में पारिवारिक समस्याएँ और विवाह-संबंधी मुद्दे आत्महत्या के प्रमुख कारण थे, जो 32.5 प्रतिशत मामलों के लिए जिम्मेदार थे। पुरुषों के प्रति लैंगिक असमानता पर न केवल भारत में बल्कि विश्व स्तर पर सांस्कृतिक और शैक्षणिक अनुसंधान दोनों में सीमित चर्चा होती है। हालाँकि, तथ्यों पर करीब से नज़र डालने से मुख्य रूप से पक्षपाती नारीवादी सामाजिक संरचना का पता चलता है। दिल्ली स्थित संगठन, पुरुष आयोग के संस्थापक के अनुसार, समाज की रूढ़िवादिता यह मानती है कि 'पुरुष पीड़ित नहीं हो सकते', जिससे उनके सामने आने वाले मुद्दों की अज्ञानता और उपेक्षा होती है। 134 देशों के लिए स्टोएट और गीरी, 2019 के एक अध्ययन में दावा किया गया कि 91 (68 प्रतिशत) देशों में महिलाओं की तुलना में पुरुष अधिक वंचित थे। उन्होंने तर्क दिया कि असंतुलित माप तकनीकों के कारण वैश्विक लिंग अंतर त्रुटिपूर्ण था, जिसमें साहित्य की अनुपस्थिति के कारण उन स्थितियों को शामिल नहीं किया गया जहां पुरुष वंचित हैं। फ्रांस में एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि महिला-प्रधान कार्यस्थलों में पुरुषों के खिलाफ भेदभाव, पुरुष-प्रधान कार्यस्थलों में महिलाओं के खिलाफ भेदभाव की तुलना में अधिक प्रचलित है। पुरुष-विरोधी पूर्वाग्रह के साथ विपरीत लिंगवाद के समान उदाहरण बड़े पैमाने पर प्रचलित हैं, लेकिन विडंबना यह है कि इन्हें बमुश्किल ही उद्धृत किया जाता है। मानसिक स्वास्थ्य अनुसंधान भी महिलाओं पर केंद्रित है, और विद्वान पुरुषों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं को 'मूक महामारी' के रूप में चेतावनी देते हैं। कानूनी ढांचे में, महिला दोषियों को समान अपराधों के लिए लंबी और अधिक कठोर कारावास की सजा मिलने की संभावना कम है। प्रगतिशील सामाजिक संरचना के लिए महिलाओं का उदारीकरण और सशक्तिकरण आवश्यक हैऔर विकसित अर्थव्यवस्था. फिर भी, पुरुष शोषण की कीमत पर लिंग-समान स्थिति को बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए। आधुनिक समाज में, बदलती लैंगिक भूमिकाओं और संबंधों के साथ; बेहतर शिक्षा और जागरूकता; और नारीवाद जोर पकड़ रहा है, संतुलित वैवाहिक कानून पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हैं। सरकार को वित्तीय जटिलताओं, विवादों और कानूनी अधिकारों को संबोधित करने के लिए विवाह पूर्व समझौतों को शामिल करने के लिए विवाह कानूनों में संशोधन पर विचार करना चाहिए।

सर्दियों में क्यों बढ़ जाता है किडनी स्टोन का खतरा

विजय गर्ग

गुर्दे की पथरी या रीनल कैलकुली एक आम स्वास्थ्य समस्या है। जो समय रहते ठीक न होने पर गंभीर परेशानी का कारण बन सकती है। पीला पेशाब, जलन पथरी के कारण हो सकते हैं। जब पथरी बनती है तो गुर्दे के अंदर ये छोटे-छोटे कठोर मिनरल्स जमा होने लगते हैं। सर्दियों के दौरान गुर्दे की पथरी के मामले बढ़ जाते हैं? सर्दियों में गुर्दे की पथरी के बढ़ने के कारणों को समझने के लिए हमने काफी रिसर्च पेपर देखें। ताकि सच आपके सामने तक पहुंचाया जा सके। गुर्दे में पथरी के लक्षण गंभीर दर्द, मतली और उल्टी का कारण बन सकती है। अगर समय पर इलाज न किया जाए तो वे गुर्दे के फंक्शन तक को प्रभावित कर सकता है।

सर्दियों में इस कारण होने लगती है किडनी में स्टोन

सर्दी अपने साथ कई लाइफस्टाइल और शारीरिक बदलाव लेकर आती है जो किडनी स्टोन का कारण बनती है। ठंड के महीनों में लोग कम फिजिकली एक्टिव होते हैं। जिससे पाचन और मल त्याग धीमा हो सकता है। जिससे किडनी स्टोन बनने का जोखिम बढ़ जाता है। कम पानी पीने के कारण और फिजिकल एक्टिव कम होने के कारण टॉयलेट करने के पैटर्न में भी दिक्कत होती है। जो किडनी में स्टोन बनने का कारण बनते हैं।

डिहाइड्रेशनः एनवायरनमेंटल हेल्थ एंड प्रिवेंटिव मेडिसिन के जर्नल में पब्लिश एक रिसर्च के मुताबिक सर्दियों में डिहाइड्रेशन अधिक होता है क्योंकि लोग कम पानी पीते हैं। अक्सर अपने शरीर की हाइड्रेशन आवश्यकताओं को कम आंकते हैं। इससे टॉयलेट गाढ़ा हो जाता है। जिससे किडनी स्टोन बनने के लिए आदर्श वातावरण बन जाता है।

डाइट के कारण भी हो सकती है किडनी स्टोनः कुछ फूड आइटम्स जैसे नट्स और नट्स उत्पाद, मूंगफली, पालक, रेड मीट, चिकन, पनीर और दूसरे डेयरी प्रोडक्ट अधिक खाने से सर्दियों के दौरान स्टोन बनने के जोखिम को बढ़ा सकता है। इन फूड आइटम में ऑक्सालेट और प्रोटीन अधिक होते हैं। जो स्टोन बनने में मदद करते हैं।

किडनी की पथरी के लक्षण

टॉयलेट की मात्रा में कमीः बार-बार टॉयलेट आना और पेशाब की मात्रा में कमी आना किडनी स्टोन की कमी होने लगती है।

पीठ या पेट के निचले हिस्से में तेज दर्दः अगर आपके इन हिस्सों में अचानक से दर्द शुरू होता है और यह दर्द कभी तेज और कभी कम हो सकता है।

ब्लड में खून आनाः किडनी स्टोन के कारण ब्लड में खून आना भी आम बात है।

यूरिन ट्रैक्ट में जलन और इंफेक्शनः पेशाब करते समय जलन या दर्द हो रहा है तो किडनी स्टोन और इंफेक्शन हो सकता है।

किडनी में पथरी के कारण शरीर में मिनरल्स की कमी

जब टॉयलेट में कैल्शियम, ऑक्सालेट, यूरिक एसिड जैसे मिनरल्स बनना शुरू हो जाते हैं तो यह पथरी का कारण बन सकता है। ज्यादा कैल्शियम और ऑक्सालेट पथरी बनाती है।

शरीर में पानी की कमीः हर रोज 8-10 गिलास पानी पीना जरूर पीना चाहिए। यह पेशाब को पता रखता है और किडनी में स्टोन बनने से रोकता है। अगर शरीर में पानी की कमी होने लगे, टॉयलेट गाढा हो जाए तो मिनरल्स जमकर पथरी बना लेते हैं। ज्यादा नमक, प्रोटीन, शुगर ज्यादा खाने के कारण किडनी में पथरी हो सकती है, मोटापा, डायबिटीज, के कारण किडनी में इंफेक्शन और पथरी की समस्या हो सकती है।

गणतंत्र होने के गहरे अर्थ हैं भारत के लिए लोकतंत्र, समानता, न्याय और स्वतंत्रता जैसे मूल्यों को जीने की अनुमति देता है

विजय गर्ग

भारत कुछ दिनों के बाद अपना 76वां गणतंत्र दिवस मनाने जा रहा है। इसकी सारे देश में तैयारियां चल रही हैं। राजधानी दिल्ली में मुख्य कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। अगर कोई पूछे कि भारत के लिए गणतंत्र दिवस क्यों खास है, तो इस सवाल का उत्तर होगा गणतंत्र राष्ट्र बनने के बाद देश अपने आंतरिक और बाहरी मामलों में निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हो गया है। गणतंत्र होने का भारत के लिए बहुत गहरा और महत्वपूर्ण अर्थ है। यह सिर्फ एक राजनीतिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह हमारे देश के मूल्यों, इतिहास और भविष्य की दिशा को परिभाषित करता है। गणतंत्र ने भारत को अपनी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक नीतियों को खुद तय करने का अधिकार दिया है। इसी की मार्फत देश में एक लोकतांत्रिक प्रणाली की स्थापना की गई, जिसमें जनता को अपने प्रतिनिधियों को चुनने का हक मिला। भारत में संविधान लागू होने के बाद सभी वयस्क नागरिकों को वोट देने का अधिकार मिला। क्या यह सब सामान्य बातें हैं?

गणतंत्र देश बनने के बाद सरकार लोगों के प्रति उत्तरदायी बनी और उसे नियमित चुनावों के माध्यम से अपनी नीतियों का हिसाब देना होता है। क्या यह सब राजशाही या गोरी सरकार के वक्त संभव था... नहीं। गणतंत्र ने कानून के शासन की स्थापना की, जिसमें सभी नागरिक कानून के समक्ष समान हैं। नागरिकों को मौलिक अधिकार मिले, जैसे कि समानता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार, आदि। ये अधिकार सभी नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के प्राप्त हैं। इन अधिकारों का उल्लंघन नहीं किया जा सकता है और कानून सभी नागरिकों को इन अधिकारों की रक्षा करता है। गणतंत्र बनने से भारत में कानून का शासन लागू हो गया। इसी के साथ देश में कानून के शासन की स्थापना की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया। इसका मतलब है कि देश में सभी नागरिक, चाहे उनकी सामाजिक स्थिति, धर्म, जाति या लिंग कुछ भी हो, कानून के समक्ष समान हैं।

कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर नहीं है और सभी को कानून का पालन करना होता है। गणतंत्र बनने से पहले, भारत में ब्रिटिश शासन था, जहां कानून अंग्रेजों द्वारा बनाए जाते थे और उनका उद्देश्य भारत पर अपना नियंत्रण बनाए रखना था। उस समय, भारतीयों को समान अधिकार प्राप्त नहीं थे और उन्हें अक्सर भेदभाव का सामना करना पड़ता था। अब बात कानून के शासन की स्थापना में गणतंत्र बनने के बाद उठाए गए महत्वपूर्ण कदमों की भी कर लेते हैं। भारत के संविधान ने कानून के शासन को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संविधान ने शक्तियों

को सरकार के विभिन्न अंगों (विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका) के बीच विभाजित किया, जिससे किसी एक अंग के पास अत्यधिक शक्ति न हो। देश में एक स्वतंत्र न्यायपालिका की स्थापना की गई, जो कानूनों की व्याख्या करती है और यह सुनिश्चित करती है कि सभी नागरिकों को न्याय मिले। न्यायपालिका कार्यपालिका और विधायिका के हस्तक्षेप से मुक्त है।

कानून का शासन सुनिश्चित करने के लिए चुनाव आयोग, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक जैसी संस्थाओं का निर्माण किया गया, जो यह सुनिश्चित करती हैं कि सरकार कानून के अनुसार काम करे। समय के साथ, कानूनों में संशोधन करने की प्रक्रिया भी स्थापित की गई, ताकि वे बदलते सामाजिक मूल्यों और जरूरतों के अनुसार अनुकूल हो सकें। यह याद रखना जरूरी है कि कानून का शासन लोकतंत्र की नींव है और यह किसी भी देश के विकास और समृद्धि के लिए आवश्यक है। यह सुनिश्चित करता है कि सभी नागरिक सुरक्षित महसूस करें, सभी नागरिकों को समान अवसर मिलें, सरकार जवाबदेह हो, भ्रष्टाचार खत्म हो और देश में शांति और स्थिरता बनी रहे। हालांकि, यह भी सच है कि भारत में कानून के शासन को पूरी तरह से लागू करने में अभी भी चुनौतियां हैं। गरीब और हाशिए पर रहने वाले समुदायों को न्याय पाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। भ्रष्टाचार और राजनीतिक हस्तक्षेप भी कानून के शासन को कमजोर करते हैं। फिर भी, भारत में कानून का शासन एक आदर्श है जिसे प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

गणतंत्र बनने से भारत में कानून के शासन की नींव रखी गई। पर अभी भी कुछ चुनौतियां हैं, लेकिन देश लगातार एक ऐसे समाज की ओर बढ़ रहा है जहां कानून सभी के लिए समान रूप से लागू हो। यह एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें सरकार, न्यायपालिका, नागरिक समाज और सभी नागरिकों को मिलकर काम करना होगा। गणतंत्र ने सामाजिक न्याय के लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास किया, जिसमें समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करना शामिल है। गणतंत्र ने भारत को अपनी आर्थिक नीतियों को खुद तय करने का अधिकार दिया, जिससे आर्थिक विकास को गति मिली। गणतंत्र ने शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति को बढ़ावा दिया, जिससे साक्षरता दर में वृद्धि हुई।

गणतंत्र बनने के बाद भारत की आर्थिक प्रगति का रास्ता कैसे साफ हुआ, इसे समझने के लिए हमें कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान देना होगाः भारत ने सोवियत संघ से प्रेरित होकर पंचवर्षीय योजनाओं की शुरुआत की। इनका उद्देश्य था देश की अर्थव्यवस्था को नियोजित तरीके से विकसित करना। इन योजनाओं में कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया। भारत ने एक मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया, जिसमें सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों को महत्वपूर्ण भूमिका दी गई। सार्वजनिक क्षेत्र को भारी उद्योगों और बुनियादी ढांचे के विकास की जिम्मेदारी दी गई, जबकि निजी क्षेत्र को उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन और सेवाओं में प्रोत्साहन दिया गया।

जमींदारी प्रथा को समाप्त करने और भूमि को किसानों के बीच समान रूप से वितरित करने के लिए भूमि सुधार कानून लागू किए गए। इससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई। 1960 के दशक में हरित क्रांति की शुरुआत हुई, जिसके तहत उच्च उपज देने वाले बीजों, उर्वरकों और सिंचाई तकनीकों का उपयोग किया गया। इससे भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बना। किसानों को ऋण और सब्सिडी प्रदान की गई, जिससे उन्हें आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने में मदद मिली। गणतंत्र होना भारत के लिए एक महान उपलब्धि है। यह एक ऐसा राजनीतिक ढांचा है जो हमें संप्रभुता, लोकतंत्र, समानता, न्याय और स्वतंत्रता जैसे मूल्यों को जीने की अनुमति देता है। यह हमें एक मजबूत, एकजुट और समृद्ध राष्ट्र बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है। हमें गणतंत्र को बनाए रखने और इसके आदर्शों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध रहना चाहिए। आप कह सकते हैं कि गणतंत्र भारत हरेक नागरिक के सुख और सपनों को साकार करने को लेकर प्रतिबद्ध है। इस बारे में किसी तरह की बहस नहीं हो सकती।

10 लाख तक की इनकम टैक्स-फ्री करेगी सरकार? जानिए क्या कहते हैं आंकड़े

परिवहन विशेष न्यूज

पिछली कुछ तिमाहियों के दौरान भारत की अर्थव्यवस्था की रफ्तार थोड़ी सुस्त हुई है। इसकी वजह है कि मिडल क्लास के हाथ में ज्यादा पैसे नहीं बच रहे हैं। इसका खपत पर बुरा असर पड़ा है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण खपत बढ़ाने और अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने के लिए 10 लाख तक की इनकम को टैक्स-फ्री कर सकती हैं। आइए जानते हैं पूरी डिटेल।

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 1 फरवरी 2025 को केंद्रीय बजट पेश करेंगी। इस बार टैक्सपेयर्स को बजट से काफी उम्मीदें हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, सरकार खपत बढ़ाने और अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने के लिए इनकम टैक्स घटाने पर विचार कर रही है। अभी नई और पुरानी, दोनों कर व्यवस्था में 10-15 लाख रुपये से ज्यादा सालाना इनकम वाले लोगों को सबसे ज्यादा 30 फीसदी टैक्स चुकाना पड़ता है। ऐसे में सरकार 10 लाख रुपये तक की सालाना इनकम को टैक्स फ्री करने पर विचार कर सकती है।

न्यू टैक्स रिजीम पर हो सकता है वित्त मंत्री का फोकस

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने केंद्रीय बजट 2020 में न्यू टैक्स रिजीम (New regime of income tax) की शुरुआत की थी। इसमें निवेश या होम लोन जैसी चीजों पर टैक्स डिडक्शन का लाभ नहीं मिलता, लेकिन टैक्स रेट कम हैं। पहले टैक्सपेयर्स ने इसमें ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाई, लेकिन अब इसके तहत आईटीआर फाइल करने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। यही वजह है कि सरकार इसे और भी अधिक आकर्षक बनाने की कोशिश कर सकती है।

कितने टैक्सपेयर्स कर रहे न्यू टैक्स रिजीम का इस्तेमाल

अब करीब 72 फीसदी टैक्सपेयर्स न्यू टैक्स रिजीम के तहत आईटीआर फाइल करने लगे हैं। इसकी बड़ी वजह है कि नई कर व्यवस्था काफी आसान है और इसमें बिना किसी झंझट के अच्छी-खासी रकम टैक्स फ्री हो जाती है। वहीं, ओल्ड टैक्स रिजीम में वही लोग हैं, जिन्होंने होम लोन ले रखा है या फिर टैक्स बचाने के लिए कई योजनाओं में निवेश कर रखा है।

कितने लोग फाइल कर रहे हैं जीरो ITR

इनकम टैक्स डिपार्टमेंट का असेसेटमेंट ईयर 2023-24 का डेटा बताता है कि आईटीआर फाइल करने वाले 70 फीसदी लोगों ने जीरो रिटर्न फाइल किया। इसका मतलब है कि उनकी सालाना कमाई 5 लाख रुपये या इससे कम थी। वहीं, रिटर्न फाइल करने वाले 88 फीसदी लोगों की इनकम 10 लाख रुपये से कम और 94 फीसदी लोगों की 15 लाख रुपये से कम थी।

10 लाख तक की इनकम टैक्स-फ्री करेगी सरकार?

इनकम टैक्स डिपार्टमेंट के डेटा से साफ जाहिर होता है कि सरकार को सबसे अधिक रेवेन्यू उन लोगों से मिलता है, जिनकी सालाना इनकम 10-15 लाख रुपये से ज्यादा है। ऐसे में 10 लाख रुपये तक की इनकम को टैक्स-फ्री करने विचार कर सकती है। इससे मिडल क्लास तबके को बड़ी राहत मिलेगी। अर्थशास्त्रियों ने सरकार को 10-15 लाख रुपये वाले स्लैब में भी टैक्स घटाने का सुझाव दिया है। इससे लोगों के हाथ में ज्यादा पैसे बचेंगे, जिससे खपत और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा।

पांच साल में पैदा होंगे 17 करोड़ नए मौके, खत्म होंगी 9 करोड़ नौकरियां; कैसा होगा भविष्य का जॉब मार्केट?

परिवहन विशेष न्यूज

जॉब मार्केट डेटा एक्सपर्ट का मानना है कि कामकाज में डिजिटल एक्सेस सबसे अधिक परिवर्तन लाने वाला साबित हो सकता है। 60 प्रतिशत नियोक्ताओं को उम्मीद है कि यह 2030 तक उनके व्यवसाय को बदल देगा। इसमें विशेष रूप से एआई सूचना प्रौद्योगिकी रोबोटिक्स ऑटोमोटिव आदि की भूमिका होगी। इनका नौकरियों पर अलग-अलग प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। आइए जानते हैं पूरी डिटेल।

नई दिल्ली। कुशल और सक्षम कार्यबल के संकट से दुनिया के तमाम देश जूझ रहे हैं और इस बीच रोजगार का बाजार नई करवट लेने के लिए तैयार है। निस्संदेह इन दिनों सबसे अधिक चर्चा और चिंता के केंद्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) ही है, लेकिन विश्व श्रम संगठन (आईएलओ) के आंकड़ों के साथ वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (डब्ल्यूईएफ) द्वारा जारी रिपोर्ट कहती है कि विश्व श्रम बाजार को तकनीकी दखल के सहित ही कई अन्य कारक भी बड़े पैमाने पर प्रभावित करने जा रहे हैं।

इस रिपोर्ट में अनुमान जताया गया है कि वर्ष 2025 से 2030 यानी अगले पांच वर्ष में विश्व में वर्तमान नौकरियों के दृष्टिकोण से कुल 22 प्रतिशत नौकरियां प्रभावित होंगी। इनमें 17 करोड़ नए अवसर तैयार होंगे, जबकि 9.2 करोड़ नौकरियों के खत्म होने का आकलन है। इसके बावजूद रोजगार में सात प्रतिशत की शुद्ध वृद्धि का अनुमान है।

उद्योग, निवेश, रोजगार और कौशल विकास के विभिन्न पहलुओं पर वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के मंच पर दावोस में चर्चा शुरू हो चुकी है, इस बीच डब्ल्यूईएफ की ताजा रिपोर्ट 'फ्यूचर ऑफ जॉब्स रिपोर्ट-2025' वैश्विक श्रम बाजार के संभावित बदलावों और चुनौतियों की ओर ध्यान आकृष्ट कर रही है।

इस रिपोर्ट में वर्ष 2030 तक विश्व श्रम बाजार के अनुमानित बदलावों के लिए पांच कारकों को मुख्यतः उल्लेखित किया गया है। इनमें तकनीकी परिवर्तन, वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता, जनसांख्यिकीय बदलाव, ग्रीन ट्रांजिशन और भू-आर्थिक चुनौतियां शामिल हैं।

डिजिटल एक्सेस का सबसे अधिक प्रभाव

विशेषज्ञों ने माना है कि कामकाज में डिजिटल एक्सेस सबसे अधिक परिवर्तन लाने वाला साबित हो सकता है। 60 प्रतिशत नियोक्ताओं को उम्मीद है कि यह 2030 तक उनके व्यवसाय को बदल देगा। इसमें विशेष रूप से एआई, सूचना प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स, ऑटोमोटिव आदि की भूमिका होगी। इनका नौकरियों पर अलग-अलग प्रभाव पड़ने की उम्मीद है।

जीवनयापन की बढ़ती लागत कुल मिलाकर दूसरा सबसे परिवर्तनकारी कारक माना जा रहा है। 50 प्रतिशत नियोक्ताओं को उम्मीद है कि यह वैश्विक मुद्रास्फीति में अनुमानित कमी के बावजूद 2030 तक उनके व्यवसाय को बदल देगा। इससे 42 प्रतिशत व्यवसायों में बदलाव आने की उम्मीद है। मुद्रास्फीति के कारण शुद्ध रोजगार सृजन को लेकर दृष्टिकोण मिश्रित है, जबकि धीमी आर्थिक वृद्धि से वैश्विक स्तर पर 16 लाख नौकरियों के खत्म होने की उम्मीद है।

जलवायु परिवर्तन का क्या होगा असर?

जलवायु परिवर्तन को लेकर 41 प्रतिशत नियोक्ताओं ने व्यवसाय में बदलाव की उम्मीद जताई है। इससे अक्षय ऊर्जा इंजीनियरों, पर्यावरण इंजीनियरों और इलेक्ट्रिक और ऑटोनोमस व्हीकल विशेषज्ञों जैसी भूमिकाओं की मांग बढ़ेगी। इसी तरह रिपोर्ट में कहा गया है कि दो जनसांख्यिकीय बदलाव वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं और श्रम बाजारों को तेजी से बदल रहे हैं।

उम्र बढ़ने और काम करने की उम्र वाली आबादी में कमी मुख्य रूप से उच्च आय वाली अर्थव्यवस्थाओं में देखी गई है, जबकि काम करने की उम्र वाली आबादी में वृद्धि मुख्य रूप से निम्न आय वाली अर्थव्यवस्थाओं में दिख रही है। उम्र बढ़ने वाली आबादी नर्सिंग पेशेवरों जैसी स्वास्थ्य सेवा नौकरियों में वृद्धि को बढ़ावा देगी, जबकि कामकाजी उम्र वाली आबादी में वृद्धि शिक्षा से संबंधित व्यवसायों जैसे उच्च शिक्षा शिक्षकों में वृद्धि को प्रोत्साहित कर सकती है। इसी तरह भू-आर्थिक चुनौतियों का भी अपना प्रभाव होगा।

तेजी से बढ़ते रोजगार के क्षेत्र

बिग डेटा स्पेशलिस्ट, फिनटेक इंजीनियर, एआई और मशीन लर्निंग स्पेशलिस्ट, सॉफ्टवेयर और एप्लीकेशन डेवलपर, सिक्योरिटी मैनेजमेंट स्पेशलिस्ट, डाटा वेयरहाउसिंग स्पेशलिस्ट, ऑटोनोमस और इलेक्ट्रिक व्हीकल स्पेशलिस्ट, यूआई और यूएक्स डिजाइनर, हल्के ट्रक और डिलीवरी सर्विस ड्राइवर, डेटा एनालिस्ट और साइंटिस्ट, एनवायरमेंटल इंजीनियर, इन्फॉर्मेशन सिक्योरिटी एनालिस्ट, डेवप्स इंजीनियर, रिन्यूएबल एनर्जी इंजीनियर।

तेजी से घटते रोजगार के क्षेत्र

पोस्टल सर्विस क्लर्क, बैंक टैलर और संबंधित क्लर्क, डेटा एंट्री क्लर्क, कैशियर और टिकट क्लर्क, प्रशासनिक सहायक और कार्यकारी सचिव, प्रिंटिंग और उससे संबंधित कारोबार के कर्मचारी, मैटेरियल, रिकॉर्डिंग और स्टॉक कीपिंग क्लर्क, ट्रांसपोर्टेशन अटेंडेंट और कंडक्टर, डोर टू डोर सेल्स सर्विस वर्कर, स्ट्रीट वेंडर, ग्राफिक डिजाइनर, क्लेम एडजस्टर, एग्जामिनर और इन्वेस्टिगेटर, लीगल ऑफिशियल, लीगल सेक्रेटरी, टेलीमार्केटर।

इनमें भी वृद्धि की उम्मीद

रिपोर्ट के अनुसार, फ्रंटलाइन जॉब रोल्स में सबसे अधिक वृद्धि देखने को मिलेगी। इनमें फार्मवर्कर, डिलीवरी ड्राइवर, निर्माण श्रमिक, सेल्सपर्सन, फूड प्रोसेसिंग कर्मी, नर्सिंग प्रोफेशनल, समाज सेवा, काउंसिलिंग प्रोफेशनल, शिक्षक।

ग्रामीण क्षेत्र में संभावनाओं को पहचानें: निवेशकों के लिए विकास का अवसर क्या है?

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रामीण भारत में ग्रोथ की संभावनाएं लगातार बढ़ रही हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना का उद्देश्य किफायती आवास देना है। जल जीवन मिशन के तहत 11 करोड़ नल जल कनेक्शन स्थापित किए गए हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की बदलती तस्वीर निवेशकों को इस विकास यात्रा में शामिल होने के लिए प्रेरित करती है। हालांकि सीधे निवेश करने के बजाय पेशेवर फंड मैनेजरों के माध्यम से निवेश करना अधिक उपयुक्त हो सकता है।

नई दिल्ली। भारत सरकार ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कई योजनाएं शुरू की हैं। इनमें से एक प्रमुख योजना है प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाई-जी), जिसका उद्देश्य किफायती आवास प्रदान करना है। इस योजना के तहत अब तक 2.1 करोड़ घरों का निर्माण किया गया है, जिससे निर्माण क्षेत्र और उससे जुड़े उद्योगों को बढ़ावा मिला है।

इसी तरह, जल जीवन मिशन (जेजेएम) के तहत 11 करोड़ नल जल कनेक्शन स्थापित किए गए हैं, जिससे ग्रामीण घरों में पानी की आपूर्ति सुनिश्चित हुई है। इन परियोजनाओं ने जल प्रबंधन और स्वच्छता उत्पाद निर्माण से संबंधित कंपनियों को लाभ पहुंचाया है।

इन योजनाओं का प्रभाव न केवल ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में सुधार के रूप में दिखता है, बल्कि महिलाओं को पानी लाने में लगने वाले समय की बचत और स्वास्थ्य सुधार के माध्यम से भी महसूस किया गया है। बचा हुआ समय और बेहतर स्वास्थ्य ग्रामीण आबादी को अधिक उत्पादक बनाने और नए अवसरों का लाभ उठाने में सहायक हो सकता है।

सरकारी योजनाओं ने आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा दिया है। उदाहरण के लिए, सौभाग्य योजना के तहत विद्युतीकरण अभियान ने ऊर्जा की खपत में वृद्धि की है और बिजली से चलने वाले उपकरणों और सौर ऊर्जा उत्पादों की मांग को बढ़ाया है। इसके साथ ही, मेक इन इंडिया और वोकल फॉर लोकल जैसी पहलों ने भारतीय विनिर्माण क्षेत्र को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई है। इनसे स्थानीय अर्थव्यवस्था पर दीर्घकालिक सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहे हैं।

इसके अलावा, PLI (Production Linked Incentive) स्कीम के तहत सरकार ने कंपनियों को निवेश और उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया है। इस योजना ने प्रमुख बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भारत में अपने परिचालन स्थापित करने के लिए आकर्षित किया है।

ग्रामीण क्षेत्रों की बदलती तस्वीर निवेशकों को इस विकास यात्रा में शामिल होने के लिए प्रेरित करती है। हालांकि, सीधे निवेश करने के बजाय पेशेवर फंड मैनेजरों के माध्यम से निवेश करना अधिक उपयुक्त हो सकता है। पेशेवर मैनेजर जटिलताओं को समझने, जोखिमों का सही आकलन करने और निवेश पोर्टफोलियो को ऑप्टिमाइज करने में विशेषज्ञता रखते हैं, जिससे बेहतर रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, ICICI Prudential Rural Opportunities Fund एक आकर्षक विकल्प हो सकता है। यह फंड मुख्य रूप से उन क्षेत्रों और कंपनियों पर केंद्रित है जो ग्रामीण भारत के विकास और वृद्धि को बढ़ावा दे रहे हैं। ICICI Prudential Mutual Fund द्वारा लॉन्च की गई यह ओपन-एंडेड इक्विटी स्कीम 9 जनवरी, 2025 से 23 जनवरी, 2025 तक सब्सक्रिप्शन के लिए उपलब्ध है।

शेयर बाजार हुआ धड़ाम; 1235 अंक टूटकर 7 महीने के निचले स्तर पर आया सेंसेक्स

सेंसेक्स शेयरों में जोमैटो एनटीपीसी अदाणी पोर्ट्स आईसीआईसीआई बैंक भारतीय स्टेट बैंक रिलायंस इंडस्ट्रीज महिंद्रा एंड महिंद्रा बजाज फाइनेंस टेक महिंद्रा और एक्सिस बैंक में सबसे अधिक गिरावट दिखी। जोमैटो तो 10 फीसदी से अधिक की गिरावट के साथ 215 .40 रुपये पर बंद हुआ। सिर्फ अल्ट्राटेक सीमेंट और एचसीएल टेक्नोलॉजीज ही हरे निशान में रहे। आइए जानते हैं शेयर बाजार का पूरा हाल।

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने शपथ ग्रहण समारोह के दिन मेक्सिको जैसे पड़ोसी देशों पर टैरिफ लगाने का एलान किया है। इसके बाद ग्लोबल ट्रेड वॉर शुरू होने की आशंका ने जोर पकड़ लिया। भारतीय शेयर बाजार में भी निवेशकों ने भारी बिकवाली की। इससे बेंचमार्क सेंसेक्स 1,235 अंक टूटकर सात महीने के निचले स्तर पर आ गया।

आईसीआईसीआई बैंक और रिलायंस इंडस्ट्रीज में गिरावट के कारण 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 1,235.08 अंक या 1.60 प्रतिशत टूटकर 75,838.36 पर आ गया। दिन के दौरान बीएसई बेंचमार्क 1,431.57 अंक या 1.85 प्रतिशत टूटकर 75,641.87 के निचले स्तर पर आ गया। व्यापक एनएसई निफ्टी 320.10 अंक या 1.37 प्रतिशत टूटकर 23,024.65 पर बंद हुआ। इंट्राडे ट्रेड में एनएसई निफ्टी 367.9 अंक या 1.57 प्रतिशत गिरकर 22,976.85 पर आ गया।

क्या है एक्सपर्ट की राय?

जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, "घरेलू बाजारों में आज काफी गिरावट देखी गई। ट्रंप ने अपने शपथ ग्रहण के दिन पड़ोसी देशों पर व्यापार शुल्क लगाने की घोषणा की, जिससे वैश्विक बाजारों में अनिश्चितता बढ़ गई। चालू तिमाही की आय में कमजोर रिकवरी, साथ ही रुपये में गिरावट के कारण एफआईआई द्वारा और अधिक निकासी की आशंका है। इसका ओवरऑल इंपैक्ट शेयर बाजार पर दिख रहा है।"

सेंसेक्स शेयरों में, जोमैटो, एनटीपीसी, अदाणी पोर्ट्स, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, रिलायंस इंडस्ट्रीज, महिंद्रा एंड महिंद्रा, बजाज फाइनेंस, टेक महिंद्रा और एक्सिस बैंक में सबसे अधिक गिरावट दिखी। जोमैटो तो 10 फीसदी से अधिक की गिरावट के साथ 215.40 रुपये पर बंद हुआ। सिर्फ अल्ट्राटेक सीमेंट और एचसीएल टेक्नोलॉजीज ही हरे निशान में रहे।

एशियाई बाजारों में मिलाजुला रुख

अगर एशियाई बाजारों की बात करें, तो टोक्यो और हांगकांग बढ़त पर बंद हुए। वहीं शंघाई और सियोल मंगलवार को सपाट रहे। यूरोपीय बाजार बढ़त पर कारोबार कर रहे थे। मार्टिन लूथर किंग जूनियर दिवस के अवसर पर सोमवार को अमेरिकी बाजार बंद थे।

वैश्विक तेल बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड 0.76 प्रतिशत गिरकर 79.54 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। एक्सचेंज के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने सोमवार को 4,336.54 करोड़ रुपये के शेयर बेचे। सोमवार को 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 454.11 अंक उछलकर 77,073.44 पर और एनएसई निफ्टी 141.55 अंक चढ़कर 23,344.75 पर बंद हुआ था।

रुपये का क्या हाल रहा?

घरेलू शेयर बाजार में भारी बिकवाली और अमेरिकी डॉलर सूचकांक में सुधार का नकारात्मक असर रुपये पर भी दिखा। मंगलवार को रुपया शुरुआती बढ़त गंवाकर 14 पैसे की गिरावट के साथ 86.59 (अनंतिम) डॉलर पर बंद हुआ। विदेशी मुद्रा व्यापारियों का कहना है कि डॉलर अपने 109 के स्तर से कमजोर हुआ है। डोनाल्ड ट्रंप ने निकट भविष्य में कनाडा और मैक्सिको के खिलाफ टैरिफ की घोषणा की है, लेकिन चीन के खिलाफ एक्शन लेने से परहेज किया है। इससे यह वापस 108.66 पर आ गया।

उन्होंने कहा कि वैश्विक और घरेलू आर्थिक परिदृश्य में प्रमुख घटनाओं से पहले रुपये में भारी उतार-चढ़ाव देखने को मिल सकता है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया डॉलर के मुकाबले 86.28 पर सकारात्मक रुख के साथ खुला। दिन के दौरान स्थानीय इकाई ने 86.28 के उच्च स्तर और 86.59 के निचले स्तर को छुआ।

क्या है ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्व और कैसे निवेश के अवसर पैदा होंगे?

परिवहन विशेष न्यूज

कृषि क्षेत्र पारंपरिक होते हुए भी मैन्युफैक्चरिंग और सर्विस इंडस्ट्री के लिए पूरक बन रहा है क्योंकि आधुनिक मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित हो रही हैं जिससे स्थानीय आबादी को कमाई के अवसर मिल रहे हैं। बढ़ती आय और बेहतर जीवन स्तर के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में खपत बढ़ रही है और व्यवसायों के फलने-फूलने के लिए उपजाऊ जमीन तैयार हो रही है।

नई दिल्ली। भारत के आर्थिक ढांचे में ग्रामीण अर्थव्यवस्था की केंद्रीय भूमिका है। यह देश के सकल घरेलू उत्पाद में 16% का योगदान देती है, जबकि 43% आबादी को रोजगार प्रदान करती है। यहां के लोग कृषि, विनिर्माण और सेवा जैसे क्षेत्रों से जुड़े हुए हैं। इस प्रकार, ग्रामीण अर्थव्यवस्था भारत के समग्र आर्थिक प्रदर्शन में अद्वितीय योगदान देती है।

दरअसल, कृषि क्षेत्र पारंपरिक होते हुए भी मैन्युफैक्चरिंग और सर्विस इंडस्ट्री के लिए पूरक बन रहा है, क्योंकि आधुनिक मैन्युफैक्चरिंग यूनिट्स ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित हो रही हैं, जिससे स्थानीय आबादी को कमाई के अवसर मिल रहे हैं। इसके बदले में सेवाओं की मांग भी बढ़ रही है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में निवेश करना अब कई कारणों से सही समय पर अवसर प्रदान कर रहा है।

सबसे पहले, सरकार का ग्रामीण विकास पर ध्यान केंद्रित है, जिसमें बुनियादी ढांचे, कनेक्टिविटी और जीवन की गुणवत्ता में सुधार के उद्देश्य से पर्याप्त निवेश किया गया है। उदाहरण के लिए, सौभाग्य योजना के तहत 2.9 करोड़ ग्रामीण घरों में बिजली पहुंचाई गई है, वित्त वर्ष 2023 में 6.5 करोड़ घरों को MGNREGA की सुविधा दी गई, और PMUY के तहत 11 करोड़ LPG कनेक्शन दिए गए। ऐसे कदमों से उत्पादों और सेवाओं की मांग बढ़ेगी, जिससे GDP की वृद्धि होगी।

इसके अतिरिक्त, बढ़ती आय और बेहतर जीवन स्तर के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में खपत बढ़ रही है और व्यवसायों के फलने-फूलने के लिए उपजाऊ जमीन तैयार हो रही है। इन उपायों ने सतत आर्थिक विकास के लिए एक ठोस आधार तैयार किया है।

इसके अलावा, डेटा यह दिखाता है कि गैर-कृषि नौकरियों में वृद्धि हो रही है। 1993 में ग्रामीण आबादी के लिए गैर-कृषि रोजगार का हिस्सा 22% था, जो अब बढ़कर 40% हो गया है। 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलकदमियों के तहत मैन्युफैक्चरिंग के विस्तार के साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को और अधिक सक्रिय किया जा सकता है। बेहतर सामाजिक-आर्थिक सुविधाओं और तेजी से बढ़ते डिजिटल इकोसिस्टम से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में निवेश करने का यह उपयुक्त समय है।

म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर नितिन मित्रा का कहना है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था से लाभान्वित होने वाले क्षेत्रों में निवेश करने से न केवल अच्छा रिटर्न मिलेगा, बल्कि देश के संतुलित आर्थिक विकास में भी योगदान होगा। इसी दिशा में ICICI Prudential Mutual Fund ने एक नई पेशकश शुरू की है - ICICI Prudential Rural Opportunities Fund। यह ओपन-एंडेड इक्विटी स्कीम ग्रामीण भारत के विकास को आगे बढ़ाने और उससे लाभ उठाने वाले सेक्टर्स/कंपनियों पर केंद्रित है। न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) 9 जनवरी से 23 जनवरी, 2025 तक खुला है।

ईपीएफओ क्लेम बार-बार हो रहा रिजेक्ट, कैसे करें इसे ठीक? जानें पूरा प्रोसेस

नई दिल्ली। यूटिलिटी ईपीएफओ क्लेम को लेकर एक बड़ी खबर सामने आई है। बीते साल 26 नवंबर तक क्लेम की वापसी और रद करने की संयुक्त दर 21.59% रही। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने इसको लेकर जानकारी दी है।

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने कहा, गलतियों में सुधार के लिए 7.82% दावे वापस भेजे गए हैं, जबकि अयोग्य पाए गए 13.77% दायों को रद कर दिया गया। उन्होंने आगे ये बताया कि किन कारणों से अक्सर दावे रद होते हैं:

EPFO की तरफ से निर्धारित निकासी या कर्ज के विशिष्ट मानदंड पूरा नहीं करने वाले क्लेम रद कर दिए जाते हैं।

जरूरी प्रक्रियाओं का पालन ना करने या क्लेम के साथ जरूरी दस्तावेज न संलग्न पर भी दावे को अयोग्य माना जाता है।

गलत डिटेल्स या अधूरी जानकारियां दर्ज करने पर भी क्लेम का आवेदन वापस हो जाता है। क्लेम रद या वापस होने पर ये करें?

कारण जानें: आमतौर पर ईपीएफओ क्लेम रद करने और वापस करने की वजह बताता है। मामला सुलझाने के लिए कारण जानना जरूरी है।

पात्रता सही करें: यह सुनिश्चित करें कि आपने जिस विशिष्ट दावे के लिए आवेदन किया है, उसके पात्रता मानदंडों आप पूरा करते हैं। कमियों को जल्द ठीक करें: ईपीएफओ त्रुटियों या अधूरी जानकारी के बारे में बताता है।

मिल सकती है गलत डिटेल्स

इनमें गलत डिटेल्स, अधूरे दस्तावेज या व्यक्तिगत जानकारियों में गलतियां शामिल हो सकती हैं। ईपीएफओ पोर्टल के माध्यम से अपनी डिटेल्स, दस्तावेज या किसी भी आवश्यक जानकारी को अपडेट करके सुधारा जा सकता है।

दोबारा करें क्लेम: मामला सुलझने के बाद आप ईपीएफओ मेंबर पोर्टल या उमंग एप के जरिये दोबारा क्लेम करें। पहले यह पक्का कर लें कि सभी जरूरी अपडेट और सुधार कर लिए गए हैं।

एक राजकुमार ने कभी रानी विक्टोरिया दरबार मे बजाया था भारतीय कला का डंका

कार्तिक कुमार परिच्छा, झारखंड

अतीत का उत्तर कलिंग इलाका अन्तर्गत मध्यकालीन एक देशी रियासत नाम सढैला अपभ्रंश वश सरायकेला के लिए यह बड़ी बात रही कि आजादी पूर्व सन 1937 में टैगोर के बड़े भाई सत्येंद्र नाथ के कलकत्ता आवास पर नरम दल प्रमुख एवं गरम दल प्रमुख यानी महात्मा गांधी तथा सुभाष चंद्र बोस ने एक ही जगह जमीन पर बैठकर सरायकेला छऊ का दीदार किया था ।उत्कलीय खंडायतों के छावनी सामरिक कला से परिमार्जित होकर सरायकेला राजघराने के आंगन से निकला आधुनिक सरायकेला छऊ में जहां दलितों के शास्त्रीय ढोल वादन पर राजकुमार लोग नाचते वह भी एक रूलिंग चीफ के भाई की कोरियोग्राफी पर इसे सोरोजिनी नायडू के मुख से ऐसी स्तुति सुन गांधी स्वयं को रोक नहीं पाये थे ।कारण भारत कोकिला बंगाली लड़की थी वह सरायकेला छऊ दुर्गा नृत्य की शास्त्रीय वास्तविकता की कायल थी ।इस आधुनिक छ ऊ के जनक रहे कुंवर साहब सरायकेला ।आज उसी विश्व प्रसिद्ध सरायकेला छऊ के पितामह कुंवर विजय प्रताप सिंह देव का आदम कद प्रतिमा 10 वर्षो से ही अधिक समय से नगर पंचायत के बाहर लावारिस की तरह रखा गया है, अनावरण का बाट जोहता धुल धुसरित है इलाके में अपनी विलक्षण कला से सात सात पद्मधारी देने वाले विजय प्रताप ।

सरायकेला आधुनिक छऊ नृत्य के जनक रहे कुंवर साहब यानी राज कुमार विजय प्रताप सिंहदेव जब 1913 में प्रेसिडेंसी कॉलेज कोलकाता से दर्शनशास्त्र में जब प्रतिष्ठा की डिग्री धारण की ठीक उसी वर्ष रविंद्र नाथ टैगोर को अपनी अनमोल कृति गीतांजलि के लिए नोबेल पुरस्कार से नवाजा गया था ।यही 1913 है जब नेताजी सुभाष चंद्र बोस भी मैट्रिक परीक्षा में ओडिशा से दुसरे स्थान पर टॉपर होने के साथ प्रेसिडेंसी कॉलेज में दाखिला हेतु दर्शनशास्त्र विषय को चुनने का प्लान बनाया ।उसी दर्शनशास्त्र से बीए ऑनर्स कर कुमार विजय प्रताप सिंह देव अपने बाप दादों के ओडिया विरासत कलाओं पर सरायकेला छऊ तैयार उसमें फिलोसॉफी भरने में लगे थे ।

अपने ऊंची पढ़ाई एक प्रिन्स ली स्टेट के वारिस होने के कारण सरायकेला के राजकुमार कुंवर विजय प्रताप, कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर, प्रख्यात नाट्यकार शिशिर बाहादुरी (भादुडी) आदि शक्सों के काफी नजदीक रहे ।अपनी पढ़ाई के दरम्यान कुमार विजय प्रताप सिंह देव को हमेशा जेहन में एक चीज उभर कर सामने आ रही थी वह था मार्शल आर्ट युक्त सरायकेला छावनी, अखाड़ों से तैयार हो रहे अतीत का छावनी छऊ की भविष्य कैसे संभाला जाए जब देश आजाद होगा तो ये ढाल तलवारों का अस्तित्व क्या होगा ।

करण 1911 में जब भारत की राजधानी कोलकाता से दिल्ली जा रहा था तब जर्ज पंचम के सामने महारानी विक्टोरिया आने वाली थी पर किसी कारण वश उनके जगह जर्ज पंचम आये उनके समानार्थ कई भारतीय कलाएं प्रदर्शित हुए थे ।तब मयूरभंज राज्य की तरफ की तरफ से सरायकेला छावनी कला का फरिखंडा खेल का प्रारंभिक नृत्य लाठी खेल भी सुमार था । यहां बताना उल्लेखनीय होगा कि सरायकेला स्टेट से छऊ को मयूरभंज महाराजा के पास ले जाने में उपेंद्र विश्वाल एवं वनमाली दास रहे जो सरायकेला के थे ।

कुंवर विजय प्रताप सिंह देव अपनी पढ़ाई के दिनों में प्रेसिडेंसी कॉलेज से रवींद्रनाथ ठाकुर तथा शिशिर भादुड़ी जैसे नाट्यकार के महफिल में अपना एक खास स्थान रखते थे इन सब विषयों को लेकर । यही वजह रहा जब विजय बाबू ने पढ़ाई समाप्त कर सरायकेला के मार्शल आर्ट छऊ को आधुनिकरण किया तब उन्होंने हर नृत्य को टैगोर एवं शिशिर जी के सामने प्रदर्शन हेतु रखा ।

एक ऐतिहासिक तथ्य को बता रहा हूं रविंद्र नाथ टैगोर के समक्ष जब भीखारी नृत्य को प्रदर्शित किया गया तब उन्होंने कहा था कि भीखारी कभी नाच नहीं सकता ,वह सदैव दुख में रहता है और सरायकेला का इस छ ऊ नृत्य में टैगोर के कहने पर कुंवर विजय प्रताप सिंह देव ने भीखारी नृत्य को बैन किया था । उसके पीछे वास्तविकता यही रही की देश तभी आजाद नहीं हुआ था और लोगों की स्थिति कहीं विदेशों में प्रदर्शित ना हो जाए इसे बैन लगाया गया था । उसके जगह पर दुर्गा जैसे कुछ सामरिक नृत्य को भेज कर काफी ख्याती बटोरी गई थी युरोप में ।यह दुश्मनों घर में भारतीय अर्ध शास्त्रीय सामरिक नृत्य भी था ।एक और तथ्य जिस किसी राजकीय सामरिक भारतीय नृत्य को पहली बार विदेशों में जाने का मौका मिला वह सरायकेला छऊ ही था वर्ष 1938 । पन्द्रह दिन लगते थे पानी जहाज में नर्तक दल को इंग्लैंड पहुंचने ।

1897 मे कटक में जन्मे सुभाष चंद्र बोस अपने विद्यालय के समय में काफी मेधावी छात्र रहे और उस माटी की खोर्धा पाइक कला को भी वह भली भांति जानते थे, ।उनके जीवन में स्वतंत्रता सेनानी बनने की जज्बा उस मां विमला, मां बिरजा तथा कटक चंडी की ने माटी कूट-कूट कर भरी थी, वे शक्ति की आराधक भी थे ।

यह महज संयोग है कटक चंडी मां के कटक जिसका शाब्दिक अर्थ सैन्य दुर्ग होता उसी शहर में जन्मे और 14 साल प्रारम्भिक वर्ष वही बिताये सुभाष कटक के ओड़िया बाजार 1915 मे शक्ति की दुर्गापूजा प्रारम्भ किये थे। साथ में श्री मद भगवत गीता, जाप माला और मां काली का फोटो रखते थे । और कुमार विजय प्रताप भी सिंहभूम की गडजातिय देवी (रियासत की इष्टदेवी) पाउडी के आंगन में जन्मे थे । मात ातृ पूजा क्या होती किसी गडजात राज्य देवी में यह जगजाहिर है ।

आज असम में पचास लाख ओड़िया चाय वगान में कार्यरत हैं, बसे हैं वे सब तब से जब आजाद हिंद फौज के हिस्सा बन लड रहे थे ।बर्मा में जाकर देश के लिए लड़े ओडिया कालांतर में असाम में आकर बसे ।

जब महात्मा गांधी के समक्ष छऊ प्रदर्शित हो रहा था तब सुभाष भी वहीं बैठे थे । जीवन भर फिल्म नहीं देखने वाले हरिश्चंद्र छोड़कर, महात्मा गांधी सरायकेला छऊ पर मोहित हुए और इस कार्यक्रम को सरोजिनी नायडू ने बड़े ही चालाकी से रखा था ।वह बंगाली कन्या रही उन्होंने कहा था कि दलित (हरिजन) के ढोलक वादन पर राजकुमार लोग नाचते हैं । सरायकेला दुर्गा पेजा का व्याख्यान किया गया । राजकुमार सुधेन्दु नारायण सिंहदेव कहा करते थे - जहां गांधी के सामने ₹राधा कृष्ण₹ नृत्य को काफी तरहीज देकर प्रस्तुत की गई वही मार्शल आर्ट जनित सरायकेला नृत्य नहीं दिखाया गया था ।संभवत सुभाष चंद्र बोस की आंखें उस कार्यक्रम में सरायकेला छऊ की मार्शल आर्ट जनित नृत्य को तलाश रही थी ।पर नरम दल एवं गरम दल आमने-सामने होने के कारण वे कुछ बोल नहीं सके थे सुभाष।

रविन्द्र नाथ टैगोर को कोन नहीं जानता पर शिशिर भादुरी के विषय में मैं बता दूं की 1925 -30 में सरायकेला बाजार में हमलोगों का एक सिनेमा हॉल हुआ करता । यह वही समय है जब भारतीय रेल भी लालटेन के सिग्नल से चला करती थी । जर्मन आयातित इंजन से बिजली पैदा होता था और हर वर्ग के लोग सिनेमा देखते थे ।दादा साहेब फाल्के के फिल्म डिस्ट्रीब्यूटर सरायकेला स्टेट के जनता की चाहत को हम लोगों के जरिये जानते थे ।बतादुं तब जनमानस की मांग अनुरोध ज्यादातर फिल्में धार्मिक पृष्ठभूमि आधारित बनाने हेतु कहा जाता था सरायकेला जन मानस की तरफ से । जब फिल्मों में आवाजें भी नहीं होती थी ।शिशिर बहादुरी को भले ही लोग नाट्यकार मानते परंतु नाटक से बांग्ला सिनेमा की उत्थान की दिशा में शिशिर बहादुरी का कितना बड़ा योगदान रहा हमारा परिवार उसे भली-भांति जानता था ।

आज सरायकेला में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जिस नगरपालिका को उसी कुवंर विजय प्रताप सिंहदेव ने जीवन काल में चेयरमैन बन कर सजाया संवारा था ।आज भी इसकी नगरीय क्षेत्र में हर सड़कें 90 डिग्री एंगल से कटता है इससे झारखंड अभियंत्रण विभाग सीख ले सकता है कि नगर विकास कैसे हो ।उनके द्वारा निर्मित आधुनिक छऊ नृत्य को यूनेस्को विश्व कला धरोहर के रूप में रखा हुआ है ।जिन्होंने अपना महल तक नारी शिक्षा के निमित्त Kumar Vijay Pratap Singhdeo Senior Secondary School के रूप में दान दी ।और तो और महात्मा गांधी के साथ गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने पारला खेमुंडी महाराज के दल में अंग्रेजी हुकूमत के सामने उनके खिलाफ में गए, भारत का आजादी मांगने के लिए। जिन्होंने अपने रुलिगं चीफ राजा साहव सरायकेला जैसे भाई से मनमुटाव कर बैठे आजादी लाने के पक्ष में ।आज उनकी ही आदम कद प्रतिमा नगर पालिका कार्यालय में विगत 5 वर्षों से धूल फांक रही है ।इससे बड़ा तौहीन आज की तिथि में और क्या हो सकता है । राजनीति ऐसी कलुषित भी नहीं होनी चाहिए कि कहीं एक महापुरुष की प्रतिमा अनावरण का मोहताज हो कर खराब हो जाए । भरत की स्वर्णिम इतिहास को कचरे के गर्त में फेंक दी जाए ।मूलवासी ओड़िया उपेक्षा की भावना इतनी गंदी ना हो कि झारखंड की इस अघोषित कला की सांस्कृतिक राजधानी में ओडिया कला छऊ के जनक को एक कचरा पत्थर बना के वर्षों रखा जाए और उनके कला के नाम पर महज 3 किलोमीटर दायरे में छह छह सात पद्मश्री महामहिम राष्ट्रपति हाथ से लोगों को मिले पर जहां उसके जनक ही उपेक्षित हों !!

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जिन्होंने सुभाष चंद्र बोस जैसे नेता के नेतृत्व को अपने विचारों में ढूंढ कर सम्मान पूर्वक राज्य में छुट्टी की घोषणा की है। उ नेता जी के जीवन से नेतृत्व क्या थी आने वाली पीढ़ी को हर स्कूलों में सिखाई जाए ।

झारखंड के मुख्यमंत्री से ओड़िया समुदाय के लोग ने निवेदन किया है कि राजकुमार विजय प्रताप सिंह देव की आदम कद प्रतिमा को किसी अच्छे स्थान पर अधिष्ठित कर यथोचित सम्मान दिया जाए ।यह नेताजी बोस एवं स्थानीय परिवेश में उनकी भावना को उचित श्रद्धांजलि होगी ।

जो जितनी सुविधा में है वो उतनी ही दुविधा में हैं, जरूरतें और इच्छाएं जिंदगी में कभी भी पूरी नहीं होती है : वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान

आगरा, संजय साग़र सिंह । जो जितनी सुविधा में है वो उतनी ही दुविधा में हैं, जरूरतें और इच्छाएं जिंदगी में कभी भी पूरी नहीं होती है ।जितनी अधिक सुविधाएं और इच्छाएं होती हैं, उतना ही अधिक व्यक्ति दुविधाओं और अनिश्चितताओं में फंसता है । वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान के यह महत्वपूर्ण वाक्य जीवन के एक गहरे सत्य को व्यक्त करते है ।

इस सन्दर्भ में वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान ने आगे कहा,₹जो जितनी सुविधा में है वो उतनी ही दुविधा में हैं, यह विचार इस तथ्य को उजागर करता है कि अधिक सुविधाओं और भौतिक संसाधनों के साथ व्यक्ति की इच्छाएँ भी बढ़ती जाती हैं, और साथ ही चिंता और दुविधाएँ भी । साधारण जीवन जीने वाले लोग अक्सर कम समस्याओं और तनावों का सामना करते हैं, जबकि अधिक संपन्न और सुविधा-प्रेमी लोग अपनी बढ़ती इच्छाओं और अपेक्षाओं के कारण मानसिक तनाव और दुविधाओं में उलझे रहते हैं ।

उन्होंने कहा, "जरूरतें और नींद जिंदगी में कभी भी पूरी नहीं होती है । यह वाक्य जीवन के अंतहीन संघर्ष और असंतोष को दर्शाता है । हमारी जरूरतें, चाहे भौतिक हों या मानसिक, कभी पूरी नहीं होतीं क्योंकि जैसे ही एक आवश्यकता पूरी होती है, दूसरी आवश्यकता या इच्छा जन्म ले लेती है । इसी तरह, नींद का भी हाल है—हमारी शांति और संतोष की खोज कभी पूरी नहीं होती, और हम हमेशा कुछ और पाने की इच्छा रखते हैं । यह जीवन की निरंतरता और परिवर्तनशीलता को समझाने का एक तरीका है ।

अंत में श्री खान ने कहा, ₹जितनी अधिक सुविधाएं और इच्छाएं होती हैं, उतना ही अधिक व्यक्ति दुविधाओं और अनिश्चितताओं में फंसता है । क्योंकि हमारी जरूरतें और इच्छाएं कभी पूरी नहीं होतीं, और हम हमेशा कुछ और पाने की तलाश में रहते हैं । यही कारण है कि असंतोष और शांति की खोज निरंतर जारी रहती है ।

हैदराबाद *विधायक बंडारी लक्ष्मा रेड्डी, पार्षद जेरिपोटुला प्रभुदास और गुंडारापु श्रीनिवास रेड्डी ने एचबी कॉलोनी डिवीजन, मीरपेट के एचबी कॉलोनी मेन रोड पर अन्नपूर्णा टिफिन सेंटर के पास फुट स्टाइल फुटवियर शॉप का उद्घाटन किया ।*

,विधायक बंडारी लक्ष्मा रेड्डी, कॉरपोरेटर जेरिपोटुला प्रभुदास और गुंडारापु श्रीनिवास रेड्डी ने एचबी कॉलोनी मेन रोड, एचबी कॉलोनी डिवीजन, मीरपेट में अन्नपूर्णा टिफिन सेंटर के पास फुट स्टाइल फुटवियर शॉप का उद्घाटन किया। इसके बाद, उन्होंने मालिक दिनेश टक को उनके व्यवसाय में शुभकामनाएं दीं और निरंतर सफलता की कामना की। कार्यक्रम में मारवाड़ी एसोसिएशन के अध्यक्ष कैलाश शर्मा किरण कुमार विकास कुमार शर्मा सुरेश भॉटी उदाराम जी बजरंग जी नरेश सॉखला नरेश खंडेलवाल सहित अन्य लोग शामिल हुए।

कैसे वाजिब है 70-90 घंटे काम करना?

-डॉ सत्यवान सौरभ

लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) के चेयरमैन एसएन सुब्रह्मण्यन ने हाल ही में सुझाव दिया था कि प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए कर्मचारियों को रविवार सहित प्रति सप्ताह 90 घंटे तक काम करना चाहिए। "लालची नौकरियाँ" उन भूमिकाओं को संदर्भित करती हैं जो समय, ऊर्जा और प्रतिबद्धता के अनुपातहीन रूप से उच्च स्तर की माँग करती हैं, अक्सर उत्पादकता या परिणामों के बजाय लंबे समय तक काम करने वाले कर्मचारियों को पुरस्कृत करती हैं। "लालची नौकरियों" का लिंग समानता और कार्य-जीवन संतुलन पर प्रभाव के साथ करियर विकास पर प्रभाव पड़ता है। महिलाएँ मुख्य रूप से घरेलू ज़िम्मेदारियाँ संभालती हैं, इसलिए वे लालची नौकरियों की माँग के अनुसार लंबे समय तक काम करने, देर रात तक मीटिंग करने और यात्रा करने में असमर्थ होती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाने वाली महिलाओं की संख्या कम होती है, जिससे कार्यस्थल पर असमानताएँ बढ़ती हैं।

महिला श्रम शक्ति भागीदारी में वृद्धि के बावजूद, कार्यबल में हर 10 पुरुषों के लिए केवल 4 महिलाएँ हैं। यह महिलाओं द्वारा असमान रूप से उठाए जाने वाले अवैतनिक घरेलू कार्यभार से जुड़ा है, जो उनकी आर्थिक स्वतंत्रता के लिए प्रणालीगत बाधाएँ पैदा करता है। लंबे समय तक काम करने वाले कर्मचारियों, पुरुषों और महिलाओं दोनों को ही आराम करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता है, जिससे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएँ होती हैं। यह व्यक्तियों और संगठनों के लिए दीर्घकालिक रूप से टिकाऊ नहीं है। लालची नौकरियाँ परिवार के साथ बातचीत और देखभाल में भागीदारी को कम करती हैं, जिससे महिलाओं पर बोझ बढ़ता है। घरेलू कामों में पुरुषों का सीमित योगदान इस असंतुलन को बढ़ाता है।

नोबेल पुरस्कार विजेता क्लाउडिया गोल्डिन "लालची" नौकरियों की पहचान उन भूमिकाओं के रूप में करती हैं, जिनमें पर्याप्त वेतन मिलता है, लेकिन लंबे समय तक काम करना पड़ता है, व्यापक नेटवर्किंग, देर रात तक बैठकें करनी पड़ती हैं और लगातार यात्रा करनी पड़ती है। ये भूमिकाएँ अक्सर व्यक्तियों को व्यक्तिगत और पारिवारिक जिम्मेदारियों से अलग कर देती हैं, तथा अन्य सभी चीजों से ऊपर पेशेवर प्रतिबद्धताओं को प्राथमिकता देती हैं। दोनों काम करने वाले परिवारों के लिए चुनौतियाँ: जिन परिवारों में दो कामकाजी माता-पिता होते हैं, उनमें बच्चों के पालन-पोषण की मांग के कारण आमतौर पर केवल एक ही "लालची" नौकरी कर सकता है। दूसरे माता-पिता को द्वितीयक भूमिका में रखा जाता है, जिसे अक्सर "मम्मी ट्रैक" के रूप में संदर्भित किया जाता है, जहाँ वे घरेलू और बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारियों का प्रबंधन करते हैं, जैसे स्कूल की गतिविधियाँ, चिकित्सा आवश्यकताएँ और पाठ्येतर गतिविधियाँ।

जबकि "मम्मी ट्रैक" की भूमिका माता-पिता में से किसी एक द्वारा निभाई जा सकती है, सामाजिक मानदंड और अपेक्षाएँ अक्सर यह बोझ महिलाओं पर डालती हैं। परिणामस्वरूप, महिलाएँ अक्सर पारिवारिक जिम्मेदारियों के लिए करियर में उन्नति और उच्च वेतन को छोड़ देती हैं। महिलाओं का कैरियर पथ प्रायः अवरुद्ध रहता है, जिससे नेतृत्वकारी भूमिकाएँ और कैरियर विकास के उनके अवसर सीमित हो जाते हैं। "लालची" नौकरियों और "मम्मी ट्रैक" के बीच का विभाजन वेतन अंतर को बढ़ाता है, यहाँ तक कि उच्च शिक्षित व्यक्तियों के बीच भी, क्योंकि पुरुष उच्च वेतन वाली, मांग वाली भूमिकाओं पर हावी हैं। यह गतिशीलता कार्यस्थल और समाज में प्रणालीगत लैंगिक असमानता को क़ायम रखती है।

परिणाम-आधारित प्रदर्शन मीट्रिक पेश करें जो कार्यालय में बिताए गए समय के बजाय परिणामों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे लंबे समय तक काम करने के घंटों का महिमामंडन कम होता है। साझा देखभाल जिम्मेदारियों को प्रोत्साहित करने के लिए पुरुषों और महिलाओं के लिए माता-पिता की छुट्टी तक समान पहुँच प्रदान करें। कैरियर विकास या मुआवजे के मामले में कर्मचारियों को दंडित किए बिना अंशकालिक या लचीली कार्य व्यवस्था को बढ़ावा दें। ऐसी नीतियों को लागू करें जो कार्यालय के घंटों के बाद काम से अलग होने के कर्मचारियों के अधिकार का सम्मान करती हैं, जिससे बेहतर कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा मिलता है। कर्मचारियों के पास आराम और व्यक्तिगत प्रतिबद्धताओं के लिए पर्याप्त समय सुनिश्चित करने के लिए साप्ताहिक कार्य घंटों (जैसे, 48 घंटे की सीमा) पर सख्त सीमाएँ लगाएँ।

प्रबंधकीय पुरस्कारों को संगठनात्मक उत्पादकता और निष्पक्षता से जोड़कर पारिश्रमिक में असमानताओं को कम करें, सभी कर्मचारियों के लिए समान वेतन सुनिश्चित करें। घरेलू बोझ को कम करने के लिए साइट पर चाइल्डकैअर सुविधाओं और देखभाल सेवाओं का समर्थन करें। कार्यस्थल की संस्कृति को बढ़ावा दें जो कल्याण को महत्त्व देती है और परिवार के अनुकूल प्रथाओं को प्राथमिकता देती है। उन रूढ़ियों को चुनौती देने के लिए नियमित प्रशिक्षण आयोजित करें जो केवल महिलाओं के साथ देखभाल को जोड़ती हैं और कर्मचारियों के बीच साझा घरेलू जिम्मेदारियों को बढ़ावा देती हैं। सरकारी नीतियों की वकालत करें जो कंपनियों को कर लाभ और प्रमाणन जैसे परिवार के अनुकूल और लिंग-समान प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। एक संतुलित समाज सभी श्रमिकों की पूरी क्षमता को अनलॉक करने और दीर्घकालिक समृद्धि सुनिश्चित करने की कुंजी है। लंबे कार्य घंटों का महिमामंडन नहीं किया जाना चाहिए; इसके बजाय, टिकाऊ और कुशल कार्य अनुसूचियों पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए जो उत्पादकता और कर्मचारी कल्याण दोनों को बढ़ावा दें। संतुलित और प्रेरित कार्यबल बनाने के लिए समान वेतन संरचना और वास्तविक समावेशिता आवश्यक है। प्रणालीगत असमानताओं को पहचानना और उनका समाधान करना एक निष्पक्ष कार्य वातावरण को बढ़ावा दे सकता है। एक संपन्न कार्यबल व्यक्तिगत कल्याण और पारिवारिक जीवन के महत्त्व को स्वीकार करता है, तथा इन मूल्यों को कार्यस्थल संस्कृति में एकीकृत करता है। इसका लक्ष्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जहाँ पुरुष और महिलाएँ स्वास्थ्य, परिवार या व्यक्तिगत समय से समझौता किए बिना व्यावसायिक सफलता प्राप्त करें, तथा एक समतापूर्ण और समृद्ध भविष्य के लिए सभी श्रमिकों की पूरी क्षमता का उपयोग करें।

इश्क में नाकाम हुआ...?

तुमने तोड़ा है जिसका दिल,
वो तो इश्क में नाकाम हुआ।
ना भर सका होटल का बिल,
हुआ बदनाम चेहरा गया छिल।
तू जा के कभी तो उससे मिल,
उसका धड़क रहा सिर्फ दिल?

तुमने तोड़ा है जिसका दिल,
वो तो इश्क में नाकाम हुआ।
अब क्या उसकी जान लोगी,
यूँ तड़पता हुआ उसे छोड़ोगी।

उसने इश्क किया तो लड़ोगी,
कभी प्यार में उसके पड़ोगी?

तुमने तोड़ा है जिसका दिल,
वो तो इश्क में नाकाम हुआ।
ये भी वहीं देवदास नाम हुआ,
पी है शराब नाम खराब हुआ।
अब और लगा दिया इलजाम,
वो बेचारा तो गिरफ्तार हुआ।

संजय एम तराणेकर

देश-दुनिया की नजरें अब अमेरिका पर !

अमेरिका के इतिहास में 20 जनवरी 2025 का दिन एक नया व ऐतिहासिक दिन लेकर आया ।डोनाल्ड ट्रंप ने इस दिन अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली । डोनाल्ड ट्रंप ने दूसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति पद की शपथ ली है । वहीं, जेडी वेंस ने अमेरिका के 50वें उपराष्ट्रपति के रूप में शपथ ली है । उल्लेखनीय है कि शपथ लेते ही ट्रंप ने चीन को बड़ा ट्रेलर दिया है और यह कहा है कि वे पनामा नहर वापस लेंगे । उन्होंने यह भी कहा है कि अमेरिका मंगल ग्रह पर अपना झंडा फहराना चाहता है । उन्होंने सरकारी सिस्टम में कट्टरवादी सोच का पूरी तरह से खात्मा किए जाने की भी बात कही है । ड्रग स्मगलिंग पर उन्होंने कहा है कि अब ड्रग स्मगलरों को आतंकवादी माना जाएगा । इतना ही नहीं ट्रंप ने अमेरिका में सबको बोलने की पूरी आजादी देने, यहां रंगभेद और सेंसरशिप को खत्म करने, मेक्सिको बार्डर पर सेना लगाने(घुसपैठ रोकने के लिए नेशनल इमरजेंसी लगाने), विदेशी आतंकवादी संगठनों को पूरी तरह से खत्म करने(आतंकवाद के खिलाफ जीरो टोलरेंस की नीति), अमेरिका को ग्रेट बनाने के साथ समृद्ध बनाने, भारत के साथ मजबूत दोस्ती निभाने के साथ ही इस संकल्प को दोहराया है कि उनकी पॉलिसी अमेरिका फर्स्ट है तथा अब अमेरिका का स्वर्णिम युग शुरू होने वाला है । कहना ग़लत नहीं होगा कि अमेरिका के लिए ये पल काफी खास है, क्योंकि डोनाल्ड ट्रंप पहले से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली होकर ओवल ऑफ़िस में वापस लौटे हैं ।उनकी रिपब्लिकन पार्टी बहुमत के साथ सत्ता में वापस आई है । वास्तव में, उन्होंने एक ऐसा सफर तय किया है, जिस दौरान उनके ऊपर दो बार हमला किया गया । पाठकों को बताता चलूं कि उनके राष्ट्रपति बनने के बाद ट्रम्प द्वारा सौ से अधिक आदेशों पर हस्ताक्षर होंगे । कहना ग़लत नहीं होगा कि इन कार्यकारी आदेशों में कानूनी ताकत निहित होने के कारण इनको संसद द्वारा पलटा जाना भी संभव नहीं होगा । इतना जरूर है कि इन्हें अदालत में कानूनी रूप से चुनौती जरूर दी जा सकती है । ट्रम्प ने सत्ता संभालने से पहले ही अपना दृष्टिकोण(विजन) और प्रशासन की प्राथमिकताएं अमेरिका वासियों के सामने रख दी हैं । सच तो यह है कि हाल फिलहाल ट्रंप दक्षिणी सीमा मैक्सिको को सील करने के प्रति कृतसंकल्पित लग रहे हैं ,ताकि घुसपैठ से लेकर अवैध व्यापार को रोका जा सके । कहना ग़लत नहीं होगा कि ट्रंप शुरू से ही अमेरिकी लोगों को अमेरिका में गैर-कानूनी ढंग से ठहरे प्रवासियों के सामूहिक निर्वासन का भी दिलासा देते रहे हैं । निश्चित ही इस दिशा में वे काम करेंगे । अमेरिका में महिला खेलों में ट्रांसजेंडर को रोकना भी ट्रंप के समक्ष एक बड़ी चुनौती है । इतना ही नहीं पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण के नाम पर ऊर्जा की खोज पर लगते प्रतिबंधों पर अमरीका का स्टैंड, सरकारी नौकरशाही और लालफीताशाही में सुधार करना भी उनके एजेंडे में शामिल दिखता है । ट्रंप अमेरिका के आर्थिक संकटों ,मांग की सुस्ती, निवेश में मंदी की समस्याओं पर भी निश्चित ही ध्यान देंगे । कहना ग़लत नहीं होगा कि पिछले दिनों अमेरिका में आग लगने की जो घटनाएं हुई हैं , उन्होंने अमेरिका के लोगों में दहशत पैदा की है । इन सभी समस्याओं पर भी ट्रम्प प्रशासन को ध्यान देना होगा । बहरहाल, यहां सबसे बड़ा सवाल यह उठता है कि ट्रंप के भारत के साथ संबंध कैसे रहेंगे ? अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडेन के साथ तो भारत के मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हैं । सवाल यह उठता है कि क्या ट्रम्प और मोदी के संबंधों में वह बेहतर माहौल नजर आएगा, जो उनके सामाजिक व्यवहार में दिखाई देता है ? भारतीय विदेश मंत्री डॉ जयशंकर अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति के शपथ ग्रहण समारोह में भारत सरकार के प्रतिनिधि के तौर पर शामिल हुए हैं । पाठकों को बताता चलूं कि कुछ समय पहले ही भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर और अमेरिका के राजदूत एरिक गार्सेटी ने बेंगलुरु में अमेरिकी वाणिज्य दूतावास का उद्घाटन किया था । इस दौरान जयशंकर ने भारत-अमेरिका के संबंधों में आ रही नजदीकी का जिक्र किया था ।

उन्होंने ऐलान किया था कि भारत जल्द ही लॉस एंजिल्स में अपना कांसुलेट खोलेगा । हाल फिलहाल, 20 जनवरी को ट्रंप के शपथ ग्रहण समारोह में भारत ने विदेशमंत्री एस. जयशंकर को शपथ ग्रहण समारोह में विशेष रूप से भेजा है, ताकि दोनों देशों के संबंधों में और अधिक मजबूती आ सके । अब यह उम्मीद की जा सकती है कि कुछ समय बाद ट्रम्प भी भारत आएंगे और उस समय क्वाड देशों का सम्मेलन भी आयोजित किया जा सकता है, जिसका सदस्य अमेरिका भी है । अमेरिका भारत को विश्व की एक बड़ी मंडी के रूप में देखता आया है और उम्मीद की जा सकती है ट्रंप के सत्ता संभालने के बाद दोनों देशों के बीच आपसी संबंधों को मजबूती मिलेगी । कहना ग़लत नहीं होगा कि डोनाल्ड ट्रम्प के शानदार नेतृत्व में विश्व के सबसे शक्तिशाली और सबसे बड़े लोकतंत्र (भारत) के आपसी संबंधों को अब नई ऊंचाईयां मिलेंगी । हालांकि, ट्रंप के विरोधी उन्हें लोकतंत्र के लिए बड़ा खतरा तक बता चुके हैं, लेकिन इन सबके बावजूद राष्ट्रपति चुनाव में उनकी प्रभावी जीत हुई है और अमेरिका के लोगों के साथ ही भारत समेत दुनिया के अनेक देश ट्रंप के सत्ता संभालने के बाद काफी आशान्वित व सकारात्मक दिख रहे हैं । अच्छी बात यह भी है कि सत्ता संभालते ही उन्होंने देश की जनता के समक्ष अपने पहले सौ फैसलों का ब्लूप्रिंट रखा है, लेकिन इनका क्रियान्वयन ट्रंप प्रशासन के एक चुनौती होगा । कहना ग़लत नहीं होगा कि आज चीन दुनिया में लगातार एक उभरती हुई शक्ति बनता चला जा रहा है । चीन का तेज उभार अमेरिका की एकध्रुवीयता के लिए कहीं न कहीं एक बड़ा खतरा बन सकता है । हाल फिलहाल, ट्रंप ने फ्लोरिडा के सीनेटर मार्को रुबियो को विदेश मंत्री और माइकल वाल्ट्स को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बनाया है । पाठकों को बताता चलूं कि ये दोनों ही चीन विरोधी और भारत समर्थक हैं । इससे यह समझा जा सकता है कि ट्रंप के इरादे क्या हैं । गौरतलब है कि डोनाल्ड ट्रम्प के व्हाइट हाउस में दूसरे कार्यकाल संभालने के बाद दुनिया भर में अनिश्चितता का माहौल गहराता जा रहा है, क्यों कि ट्रंप को दुनिया 'टैरिफ मैन' के रूप में जानती है । पाठकों को बताता चलूं कि अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में दूसरे कार्यकाल के चुनावी अभियान के दौरान डोनाल्ड ट्रम्प ने सभी आयातों पर 10 फीसदी और चीन से होने वाले आयात पर 60 फीसदी के भारी भरकम टैरिफ का प्रस्ताव रखा था । वास्तव में, चीन व दूसरे देशों पर भारी आयात शुल्क संबंधी ट्रंप के इरादे बेहद चिंताजनक हैं, क्योंकि इससे पूरी दुनिया पर व्यापार युद्ध का खतरा मंडराने लगेगा । सच तो यह है ट्रंप की ब्रिक्स देशों पर सौ फीसदी टैरिफ की चेतावनी भारत के लिए चिंता की बात हो सकती है ।इतना ही नहीं हमास-इजरायल, ईरान, रूस-यूक्रेन युद्ध भी अमेरिका के लिए एक बड़ी चुनौती रहेगी । हालांकि, ट्रंप के सत्ता में आने से पहले हमास-इजरायल ने सीजफायर की घोषणा की है लेकिन ट्रंप के लिए दोनों के बीच स्थाई शांति एक चुनौती ही रहेगी । ईरान 'एक्सिस आफ इवल' रहा है, ऐसे में अमेरिका को पश्चिम एशिया में अपनी बड़ी सैन्य उपस्थिति रखनी होगी, जिससे वह अपनी पूरी ऊर्जा चीन से निपटने में नहीं लगा सकेगा । कहना ग़लत नहीं होगा कि ट्रंप प्रशासन को इन सबसे निपटने में अपनी ऊर्जा लगानी होगी । बहरहाल, यहां यह उल्लेखनीय है कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीनी वर्चस्व पर अंकुश लगाने की रणनीति में ट्रंप प्रशासन को निश्चित ही भारत की जरूरत होगी । अंत में, यही कहूंगा कि ट्रंप के सत्ता में आने के बाद दुनिया की नजरें अमेरिका पर हैं । अब देखना यह है कि दुनिया के सबसे शक्तिशाली और सबसे बड़े लोकतंत्रों के बीच संबंध कैसे आगे बढ़ते हैं और आगे क्या होता है ।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर,

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**